16743

श्रीमतेश्रीरामानन्दाचार्य्यायनमः ❀

❀ श्रीअग्रअलीचरणकमलेभ्योनमः ❀

❀ श्रीमतीसर्वेश्वरीश्रीचारुशीलादेव्यैनमः ❀

श्रीवैदेही बल्लभ रसकोष

मञ्जूषा

जिसको

अनंत श्रीस्वामी युगलशरणजी महाराज के कृपापात्र श्रीसाकेत निवासी श्रीअयोध्या स्वर्गद्वार श्रीवैदेहीबल्लभकुञ्ज के सुप्रसिद्ध महन्थ श्रीजनकदुलारीशरण (बावनजी) महाराज ने अनेक प्रकार भक्तिभावना सम्पन्न सुन्दर राग रागिनियों में निर्माण किया।

उसीको

उनके परम कृपापात्र महन्थ श्रीसियाशरणजी वर्तमान स्थानाधिपति ने श्रद्धापूर्वक प्रकाशित किया।

सम्पादक-

पं० मैथिलीशरण भक्तमाली (सौन्दर्य) श्रीयुगलमाधुरीकुञ्ज नजरबाग श्रीअयोध्याजी।

वैशाख शुक्ल श्रीजानकी नौमी सं० २००५ विक्रमी

प्रथमावृत्ति १०००]

महात्मा बनारसी पुस्तकालय
साकेत.
गोरखपुर

श्री १०८ श्रीजनकदुलारीशरण (बावनजी महाराज)

❀ श्रीमतेश्रीरामानन्दाचार्य्यायनमः ❀

❀ श्रीमतीसर्वेश्वरी श्रीचारुशीलादेव्यैनमः ❀

❀ श्रीहनुमतेनमः ❀

श्री १०८श्रीजनकदुलारीशरण (बाबनजी) महाराजकी संक्षिप्त जीवनी।

—:❀❀❀:—

महत् महान भाव एवम् प्रेमी भक्त भाविकों के समक्ष आज एक ऐसे रशिक शिरोमणि महां अनन्य रसराज शृङ्गार रसावेसी श्रीसदगुरु आचार्य रसाचार्य पदाम्बुज चञ्चरीक श्रीसाकेतवासी श्रीअयोध्या स्वर्गद्वार श्रीवैदेही बल्लभ कुञ्ज के निवासी श्रीस्वामी जनक दुलारीशरण (बाबनजी) महाराज की परमपवित्र जीवनी के चित्रण करने का सौभाग्य बड़े भाग से मिला है। इसलिए पाठकों के सामने ये निवेदन करना असंगति न होगा कि मैं लेखक नहीं हूँ न वर्त्तमान काल की शुद्धी अशुद्धी वर्णात्मक शब्दात्मक क्रियावों का सुबोधहूं, मेरी लेखनी की शृंखला, प्राचीन और ग्रामीण नागिरी के मौलिक ढंग से हैं। इससे किसी भी त्रुटि को न देखकर केवल साधु चरित पर लक्ष करके प्रेम पूर्वक अवलोकन किया जावैगा। और मेरी त्रुटियों को क्षमा प्रदान दी जावैगी।

❀ श्रीमान का जन्म काल ❀

आपका जन्म विक्रमीय सम्बत् १९३५ के भाद्र पद शुक्ल पक्ष १२ शुक्रवार श्रवण नक्षत्र मध्यान काल में (श्रीबान द्वादसी) को राज्य ग्वालियर परगना भांडैर ग्राम गोंदन के परमपवित्र कुल जुझौतिया ब्राह्मण श्रीमान् पंडित बलि चौबेजी के गृह में श्रीमती सौभागवती अम्बा श्रीसुशीलादेवी के गर्भ से भया। पूज्यपिता श्रीबलि चौबेजी महाराज बड़े विशुध्धात्मा और धार्मिक अनुष्ठानी एवं प्रख्यातधनी थे। उन दिनों में आप अठारह पुराणों

के श्रवण करने की शृंखला में श्रीवावन पुराण ही सुन रहे थे, और श्रीअम्बा सुशीला गर्भवती थीं ।

गर्भ काल पूरा होने पर जन्म के पांच दिन पहले भाद्र शुक्ल सप्तमी जिसे सन्तान सप्तमी एवम् मुक्ताभरण सप्तमी भी कहते हैं । उस दिन श्रीअम्बा जी व्रतवती थीं, उस देश में प्रथा है कि पुत्रवती तथा सौभागवती माताऐं सुपुत्र दीर्घायु धन धान्य युक्त प्राप्ती की कांक्षा से संतान सप्तमी का व्रत पूजा बड़ी श्रद्धा से करतीं हैं और मध्यान ही में विधि पूर्वक पूजन करके पुआ भोग लगाकर पुआ ही स्वर्ण द्रव्यादि सहित दान देतीं हैं और कथा श्रवण करके श्रीव्यास कथा वाचक को भोजन सनमान देकर तृप्त करतीं हैं तथा अपने हाथ में चूड़ी सुवर्ण या चांदी की सात चिह्न (रेखा) युक्त धारण करती हैं चूड़ी का भी पूजन अभिषेक विधिपूर्वक प्रति सम्वत होता रहता है ।

पूजा विसर्जन के पश्चात माता सुशीला जी श्रमित हो गईं इस्से बिना प्रसाद पाएही निद्रा वस हुईं वो निद्रा नहीं नाम मात्र की तंद्रा थी, उसी समय भक्तवत्सल भगवान श्रीसाकेताधीस श्रीचक्रवर्ती कुमार अनन्त श्रीमैथिली स्वामिनी श्रीकिशोरी श्रीमिथिलेश राजनन्दनी जू के सहित प्रगट हो गए। और श्रीसुशीला अम्बा के मस्तक पर दोनों सरकारों ने अपने कर कमल रख कर कृतकृत्य किया मानों गर्भ में जो कलेवर था उसमें अपने पर तत्व की प्रतिष्ठा कर दी ।

अम्बा दर्शन करते ही सचेत हो गईं और श्रीयुगल सरकार अन्तर ध्यान हो गए. इनकी प्रेम विह्वल दशा देखकर गृह कुटुम्बियों ने संदेह किया कि प्रसूत काल समीप है न जाने कोई अनिष्ट वाधा तौ नही हो गई, तब श्रीबलि नी महाराज को बाहर से बुलाकर सब समाचार जनाया गया और आप अन्दर उस भवन में गए जहां श्रीअम्बा सुशीला कृपा कौशल से सरस होकर किलोल कर रहीं थीं, श्रीअम्बाजी ने पूज्य पतिदेव का दर्शन करते ही उनसे

सब वृतान्त सुना दियो और कहते सुनते दाम्पत्ति द्रिवित होकर कुछ समय तक निमग्न अवस्था में रहे, पुनः देहानु संधान आने पर अम्बा श्रीसुशीला जी ने जो प्रशादी थाल पूजा का रक्खा था श्रीपतिदेव को पवाकर आप शुक्रशेष पाकर प्रसन्न हुईं। उस दिन से सोते जागते अम्बा के मन प्राण और तन से वह छटा दोनों सरकारों के कृपापूर्ण करकमलों की नही भूलती थी। फिर क्या था जब गर्भ काल की गणना के दस महीना पूरे हो गए और ग्यारहवें महीना का सातवां दिन आया उस दिन प्रभात ही से अम्बा श्रीसुशीला जी के मुख की कांती नवीन ही दिव्यत्व का प्रकाशन करने लगी।

और सरीर शैथिल्य सा प्रतीत होने लगा उसी समय गृह परिचारिका और वृद्ध मातावों की आज्ञा से आप प्रसूता गृह में विराजती भईं। उस दिन ठीक श्रीबावन द्वादसी थी और मध्यान काल था। इधर जन समाज में कथा अस्थल पर जहां श्रीव्यासजी श्रीवान पुराण बांच रहे थे। पूजन की पद्धिती पूरी करके श्रीवावन भगवान के जन्मोत्सव की आरती करने को उत्सुक थे। आरती उठी और घड़ी घंट की टंकोर हुई कि अम्बा श्रीसुशीला जी ने सुन्दर सुत को जन्म प्रदान किया उधर वनता वृन्दों के सोहरे (गीत) उस देश की प्रथा के अनुसार धूम धाम से हो ही रहे थे (आज दिन सोने को महाराज) उत्सवम में कथा अस्थल पर ग्राम के सबी नर नारि इकत्रित थे मंत्र पुष्माञ्जुली आरती पश्चात होने ही को थी कि भीतर भवन से खबर आई कै पुत्र का जन्म भया। बस क्या था-जब भगवान अवतार लेते हैं तौ सब संगति अपने आप बना लेते हैं। श्रीबलि चौबेजी महाराज के कुल गुरु श्रीदुदाधारीजी महाराज के कृपापात्र परम कृपालु रशिक शिरोमणि श्रीजुगलशरण जी महाराज [श्रीकृपावती जू] उस समय वहां उपस्थित थे उनके मुख से यही शब्द निकले कि बलि के गृह में वावनजी साक्षात अवतीर्ण हुए। और वो मन्त्र पुष्पाञ्जुली लिए हुए कथा वाचक पंडित जी

के सहित प्रसूतागृह में ततकाल जाकर मन्त्रों द्वारा सब वैष्णवी संसकार करके वो मन्त्र पुष्पांजुली उन्हीं शिशु भगवान को समर्पण की और आज्ञा किए कि ग्यारहवें महीने में जैसे इन शिशु ने माता के गर्भकोप को छोड़ा है वैसेही ग्यारहवें वर्ष में एप्रवृती मार्ग के गृहकोप को छोड़ देवेंगे। शिशु के दर्शन श्रीगुरुदेव की आज्ञा से सप्रेम सबने किए। आपके दिव्य श्रीमंगल विग्रह की कांती क्या थी मूर्तिमंत परमशान्ती थी। ठीक द्वादस अंगुल का कलेवर था। उस समय श्रीगुरदेवकी आज्ञा अनुकूल गणिकजनोंने आपका नाम श्रीबावन जी ही निरधार किया (और रास्यानुसार श्रीधनी रामजी) अब उस गृह में जो आनन्द की लहरें उठ रही थी उनसे ग्राम गोंदन तो सरस भया सोभया ही पर उस जवार की जनता अनुपम बालिक के दर्शनार्थ आने लगी और चौबे जी का गृह गांव एक तीर्थ बन गया, श्रीचौबे जो का गृह धन धान्य मान प्रतिष्ठा से वैसेही भरपूर था और अब तो साक्षात भगवान ही कला अवतार धारण करके आ गए। नित्य दाम्पति परिवार सहित शिशुस्वरूप भगवान श्रीबावन जी के दर्शन परसन हुलरावन दुलरावन बाल केलि अवलोकन करके कृत कृत्य हो रहे हैं। नितनई कलावों से किलोल करते हुए शीघ्राति शीघ्र सब आश्रम सम्बन्धी ब्राह्मण संसकार होते हुए सात वर्ष की अवस्था को प्राप्त हो गए और बाल लीला का पूरण विकाश होने लगा।

यद्यपि आपकी बाल लीला साक्षात भगवान ही की तरह है तथापि पाठकों की श्रद्धा और भाव का परिचय न होने के कारण हमारा साहस यहां उसके प्रकाशन करने का नहीं होता है इसलिए कि भागवत तत्व का गौरव भगवत तत्व से कई कोटी ऊँचा है इसे स्वयम भगवान ही भोग करते हैं और वो उन्हीं का भोग है, जो उनके विशेषाधिकारी हैं उन्हीं को आचार्य कृपा कटाक्ष पड़ने पर प्राप्त होता है। अन्यथा गोपनीयम् गोपनीयम् यह जानते कहते और लिखते हुए भी जो कहीं कहीं दिव्यत्व की झलक निकल आई है वो लेखनी का धर्म नहीं है, पवित्र चरित्र की प्रभा है जो रोके से

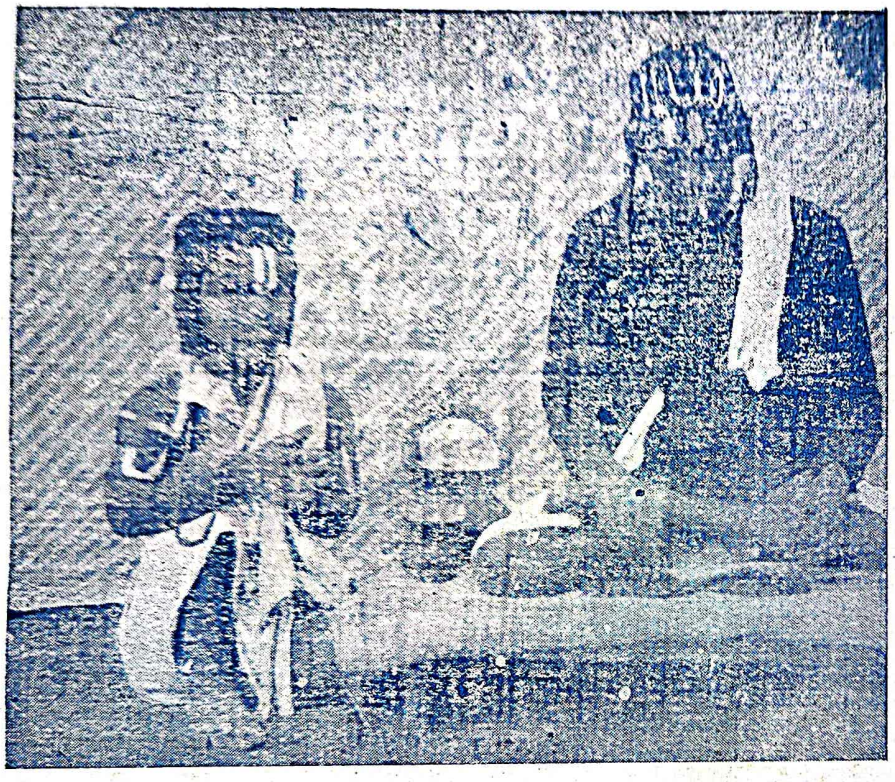

श्री १०८ श्रीयुगलशरणजी महाराज का जिस समय श्रीबावन जी महाराज की शरणागति ११ वर्ष की अवस्था में हुई उस समय आप विरक्त भेष में दैन्य मुद्रा से हाथ जोड़े बैठे हैं।

नही रुक सकी तौ भी जिन भक्त भाविकों को असह्य हो वे कृपा पूर्ण हमको क्षमा प्रदान करेंगे।

दिव्य संसकार और अनुभव

सात वर्ष की आयु में पूर्ण मंजरी भाव का भोग होने लगा और उसी प्रमान केल कौतूहल करने लगे। आपकी अनूठी लीलाऐं सुनकर उस प्रान्त के प्रख्यात महात्मा अमरा गद्दी के महन्त श्रीसरजूदास जी महाराज जो साक्षात श्रीराम तत्व की सिद्धी के सिद्धी थे और जमात के सहित (श्रीराम राजा रघुवर) की धुनि करते हुए अनेक भक्तों के मनोरथ का दान डंका बजाते हुए देते थे। आए और जमात का मुकाम पड़ा पुनः श्रीबलि चौबे जी महाराज दर्शनार्थ पधारे उन्होंने रसोई भंडारे की रिद्धी सिद्धी सामग्री का विवरा जानना चाहा तब श्रीसरजूदासजी महाराज बोले अजी बलि महाराज पहले अपने बावन भगवान के दर्शन तो कराव जो तुमारे घर में अवतार लेकर बैठे हैं, पीछे भोग भंडार की तैयारी कराना। उसी समय श्रीबावनजी बालिक बालिकांवों के सहित लीला विनोद करते हुए पहुँचही तो गए, शीघ्र ही श्रीसरजूदास जी महाराज जो सदा अपरस में रहते थे पूजा अस्थल से उठकर गोद में ले लिया और सब समाज के देखते हुए भगवान के सिंहासन के पास बैठाल दिया, तब श्रीबावनजी ने कहा परदा डाल देव तो शीघ्रही श्रीसरजू दासजी महाराज ने परदा कर दिया उस समय आपने अपने दिव्य ज्योतिर्मय मंजरी स्वरूप से उनको दर्शन दिए। श्रीसरजूदास जी महाराज ने आपकी अस्तुति आरती और पूजन किया और प्रार्थना की कि ए अवतार कैसे लिया गया तब आज्ञा किए कि अनादि काल से बिछुरी हुई जो आत्मा हैं उनको संस्कृत करके श्रीप्रिया प्रीतम के समीप पहुँचाने के लिए। बस वो दृस्य समाप्त भया और परदा खोली गई सब दर्शक संत समाज श्रीमान सिद्ध जी के भावको देखकर मुग्ध हो गए। तब से श्रीसरजूदास जी महाराज हमेशा दरशन को आया करते थे और कई दिनों तक मुकाम पड़ा रहता था आनन्द की वर्षा

होती रहती थी। एकबार आप आए और पूंछा कि तुम्हें क्या देवें तब मुस-कराते हुए श्रीबावन जी ने कहा कि जो आपको मिला हो, उसी समय श्री सरजूदास जी महाराज ने अपने इष्टदेव श्रीरामलला जी को सिंहासन से उठा कर आपकी गोद में रख दिया और दो श्रीसालिग्रामजी के विग्रह, अब तो इस खुशी की शीमा हो न रही और श्रीबावनजी उन्हें गोद में लिए हुए उनसे ग्रन्थि बंधन करके नृत्य करने लगे। लौकिक पद्धिति ये है कि कन्या का पाणि-ग्रहण बर को कराया जाता है यहां तो ये सम्बन्ध लोक से निराला है इससे बर का पाणिग्रहण कन्या को कराया गया। अहा धन्य है इस सम्बन्ध को क्या कोई व्याख्या करे क्या कोई सुने शेष महेष गिरा गम नाहीं तो कहाही है। अस स्वभाव कहुँ सुनो न देखों तो लिखा ही है, इस उदारता की बलिहार प्राकृतिपति पत्नी सम्बन्ध में कितने प्रतिबन्ध वेद शास्त्र और पुराण इतिहास धर्म वेत्ता मुनियों ने महान बज्र पंजरों से जकड़े हैं कि जहां सुभार्या को स्वांस लेना भी स्वतन्त्र नही है तिस पर अनित्य और क्षण भंगुर सुख का भोग। और ए रंगीले प्रीतम की प्रणाली सब वेदों तथा ब्रह्माण्डों से निराली कि जिसमें आप अपना पाणिग्रहण अपनी प्रिया को कराते हैं एवम् आश्रितों को, और सदा उनके आधीन रहते हैं इतना ही नहीं जब वे अन्य पति ग्रहण नाम अन्याश्रय ले लेते हैं अतएव पति बंचित (नास्तिक) बन जाते हैं तब भी वे प्रीतम उस महान दोष को अपना भोग मानते हैं, जिसको सब सिद्धांत वेता मुनि मनन हीं नही गायन करते हैं (आश्रित वात्शल्य गलधि) तब प्रीतम अपने प्रिय वर्गों के ततसुखी और प्रिय वर्ग स्वयम स्व सुखी यही भाव चरितार्थ भया।

प्राकृतिक भावों सम्बन्धों की निन्दा और न्यूनता जितनी की जावे वो तो थोड़ी है ही किन्तु यहां यह असपृष्ट कर देना है कि पर तत्व बाची जितने भाव भावनाऐं एवम् सम्बन्ध हैं वे सब किस महान गौरव से भरे हैं जिन्हें जानने से यही यथार्थ बचन सती शिरोमणि श्रीपारवती जी से श्रीशिवजी कहे

हैं (उमाराम स्वभाव जिन जाना) इत्यादि और भी शृंगार रस भोगता अनेक महानुभावों ने कहीं कहीं उस स्वभाव का आस्वादन करते समय रसावेस रसोन्मत अवस्था में कुछ बुन्द चुआं दिए हैं।

यथा श्रीकृपानिधास जी महाराज।

रसहाट विकानों सांवरो। सिय गाहक पिय वस्तु अमोलक प्रेम सुरसरस वावरो॥

श्रीबालअलीजी महाराज

तेरे किंकर वर्ग को होंहूँ रहत अधीन।
देत अपनयौ वार निति तऊँ नगनत कछुदीन॥

कुछ और

प्यारी जू हों चेरी कौ चेरौ।
कछु न अपनयौ लावत मनमें यह अनन्य वृत मेरौ।
रसना हू रस स्वाद न भावत पीपियूष रस तेरौ॥
चखन चातुरी तुरी होत सब रूप राशि जब हेरौ।
श्रीमिथिलेश लली ललनादिक नेक निगाहैं फेरौ॥

———

नेह निधि नागर नवल किशोर॥
राजकुँअर वर रशिक शिरोमणि सिय मुखचन्द चकोर॥
देत अपनयौ वार छिनहि छिन तहूँ गिनत अति थोर।
अलिगन मन अभिलाष देख घन जनु नाचत बन मोर।
यह सौन्दर्य प्रीति पर मितिता सोइ रस राज निचोर।
नेह निधि नागर नवल किशोर।

———

हमारे कौशल राज कुमार।
प्रान नाथ पिय रशिक शिरोमणि जियकी जानन हार।

होत निहाल कुटिल काइर खल जिहि चितवत इकबार ॥
हम धन उनके भोग विलापी अघ औगुन आगार ।
अलि सौन्दर्य अपनयौ तिनपै रीझ भरयौ अंकवार ॥

———

अपनी अपनाए की बान ॥
भूलत नही भुलाए कबहुँ रशिक जानकी जान ।
कैसहु कुटिल कुलिश कलिमल मय कोह कामकी खान ॥
राखत राज दुआर आपने मेंट कर्म कुल कान ।
यह सौन्दर्य स्वभाव शीलसुन बाजत नेहनिसान ।

———

सिया जू हौं तुमपै बलिजाऊं ॥
कल्प कोटिलौं करों कल्पना बर्णत बर्ण सिराऊँ ।
तबहुँ न छुवों गुनन की छाया यद्यपि ब्रह्म कहाऊँ ॥
यह महिमा कह कुँअरि किशोरी मैं मनमें सकुचाऊँ ।
अलि सौन्दर्य स्वामिनी मेरी ऐसहि रीझ रिझाऊँ ॥

———

नजरिया से बालम हमें नहीं टारैं ।
सोरहौ शृंगार बारहौ भूषण लै सिंदुरा सइय्यां मगिया समारें ।
रूप युवन गुन एकौ नाहीं तापै राई लौन उतारें
हम गरबीली मुखहूँ न बोलें वे कर कर बलिहार दुलारें ।
अलि सौन्दर्य अपनयौ ऐसौ छिन पल नाहिं बिसारें ॥

———

इत्यादि इस सगुण निर्गुण तीत रस रास बिहारी परः ब्रह्म बिलास की बलिहारी बलिहार । अब आप (श्रीबावनजी महाराज) उन श्रीविग्रह

रामलला जी को लेकर सेवा करने लगे और उनका नाम उस दिन से सनातन स्वामी रक्खा जो उस कुल में आज तक सनातन भगवान के नाम से विराजमान हैं और वो वंश सब वैष्णवी संस्कार युक्त विभूषित है।

इस प्रकार ३ वर्ष बीतीं और १० वर्ष की आयु भई। अब ग्यारहवें वर्षके प्रारम्भ में आपको उतकृष्ट विरह जागृत भया जिसमें अनेक प्रकार प्रीतम प्राप्ती के अनुसंधान होने लगे।

❀ सोपद ❀

सँवलिएँ मैं केहि मग ढूँढन जाऊँ ॥
पंचवटी गोदावरि तट कहौ पर्णकुटी रह छाऊँ।
चित्रकूट कामद गिरिवर बस कंदमूल फल खाऊँ ॥
बन्मथली मिथिला नइहर है तहँऊँ रहौं कर ठाऊँ।
नेह नगर नेही विरहिन को न्यारौ कहूँ बसाऊँ ॥
श्याकमलों तन मुनिपट पहिरों निति उठ अलख जगाऊँ।
कोइ समुझाय कहौ सखि मोहित केहि विधि प्रीतम पाऊँ ॥
प्रेम जाल मन मीन फँसायौ उलट पुलट अरुझाऊँ।
अलिसौन्दर्य विरह बतियां ए पतियां लिख सकुचाऊँ ॥

इत्यादि। अब निरंतर एकांत में रहने लगे। उसी समय कुलगुरु श्रीपंडरी वाले जुगलशरणजी महाराज पधारे और आपकी यह अवस्था देखकर शान्तुना प्रदान करते हुए सब विरक्त संस्कार किए, तथा श्रीयुगल मंत्रराज का उपदेश देकर रस राज शृंङ्गार रस का सम्बन्ध मुग्धा अवस्था श्रीअलिबिहारणी अन्तहपुर का नाम, बाहिरी पंचभौतिक शरीर का श्रीजनकदुलारीशरण, नाम करण करके सब रहस्य उपासना का एकही वार विकाश कर दिया उस समय के दृश्य का चित्रण कर लिया गया था उसी का ब्लाक बनवाकर भक्त भाविक प्रेमियों के दर्शनार्थ आपकी रचित यही श्रीबैदेही बल्लभ रसकोषमंजूषी की हर एक प्रति में प्रतिष्ठित कर दिया है।

विरक्त संस्कार होने के पश्चात् आप तीर्थाटिन और तपस्या के हेतु उत्कंठा करने लगे किन्तु पिता भ्राता माता परिवार आदिक की वात्शल्य भावना उत्कृष्टथी और गृह सम्पन्न सब प्रकार था ही इससे सर्व सम्मति होकर अपनी जमीदारी मिलकियत के अन्दर राज ग्वालियर परगना भांडरै मौजे कुँआ जिसको कमलापुरी भी कहते हैं एक सुन्दर मंदिर बनवा दिया और उसमें श्रीसरजूकुञ्ज बिहारी नाम के श्रीयुगल सरकार पधरा दिए जो अभी विराजमान हैं और मंदिर का प्रबंध सुचारु रूप से चलता है। किन्तु वहां थोड़े ही काल निवास करके राजधानी दतिया में श्रीमान् पंडित डरैले (ब्रह्मा) लटौरिया जी जो एक प्राचीन शैली के राजऋषि थे और सकल कला कोविद विद्वानों में निपुण उन्हीं से व्याकरण शास्त्र काव्यकला इत्यादि को अध्यन किया पश्चात् श्रीअवध को सीधे पयान करके चले आए। यहां आपके पूज्य आचार्य वर श्रीयुगलशरण जी महाराज (श्रीकृपावतीजू) प्रथम ही से श्री मंगलभवन अस्थान श्रीरामकोट में विराज रहे थे, आपका आगमन सुनकर निहायत प्रसन्न हुए और उस समय के सिद्ध पराअवस्था में रत पूज्य परमहंस श्रीसीताशरणजी महाराज दरबार श्रीलाल साहब (श्रीकनकभवनस्थ) जिनको अनेकों वार श्रीरामभद्र जू ने अपनी ललित लीलावों से परिचित किया, उन्हीं के पास प्रार्थना पूर्वक रख दिया कि आपकी सेवा में ये एक परिचारिका श्रीस्वामिनी जू की तरफ से प्रदान की गई है। श्रीपरमहंसजी महाराज ने बड़े हर्ष और अहलाद से अंगीकार किया अब आपके भाव और भावना की वृद्धी जिस प्रकार होने लगी वो लेखनी से अलेख है, श्रीपरमहंसजी के श्री लालसाहब का दरबार आपकी उदारता शौशील्यता एवम् रसज्ञता के कारण श्रीअवध के प्रेमी उपासक भाविक शृंगारी महात्मावों के सत्संग समागम का एक प्रमुख केन्द्र था। श्रीकनक भवन की नित्य यात्रा के लिये आना और श्रीपरमहंस जी के सद्भावों से भूषित होना पुनः श्रीलालसा० के दरबार की बहारें लेना उस समय के समाज को नित नवीन था। अब श्रीजनकदुलारीशरण श्री बावनजी महाराज प्रथम तो मुग्धा भाव सम्पन्न

और दूसरे श्रीलाल साहब को अमनियां पाकर क्या न किए होंगे ऐसा गूढ शब्द लिखने का साहस लेखनी में क्यों आया उसकी साक्षी करण आपकी वांणी श्रीवैदेही वल्लभ रसकोष मन्जूषी की है। श्रीपरमहंसजी महाराज ने अपनी कृपा का पूर्ण रहस्य थोड़े ही काल में सब प्रदान कर दिया और श्रीनित्यधाम साकेत की तैयारी कर ली जब श्रीपरमहंसजी महाराज पधार गए तो उनके विरह में आप यहां अपना काल न वितासके और विरह में विरहसरसा कर झारखंडी अर्थात् तृपती बाला जी शेषाद्री की चले गए वहां रहकर बहुत वैराग पूर्ण तपस्या की और अनेक चमत्कार अवलोकन किए ऋद्धी सिद्धियों द्वारा पर श्रीस्वामिनीजी की कृपा से आपका मन कहीं किसी में लुभायमान नहीं भया इस प्रकार सात वर्ष पूरे वहां हुए। इधर श्रीयुगलशरणजी महाराज (श्रीकृपावतीजू) को श्रीकिशोरीजी का बुलौआ महल से आगया और सम्वत् १९६० अगहन वदी २ की एक बालू का चबूतरा श्रीसरजू तट में गोलाघाट पर बनाके उसी पर विराजमान हुए, उस समय आपके पास निज प्रीतम श्रीवैदेही वल्लभ जू और पांच सौ मुद्रा थे जब आप अपने नित्य स्वरूप में प्रवेश करने लगे उसके कुछ काल पहले श्री १०८ श्रीपूज्यपाद श्रीअवध के भूषण साधु शिरोमणि जिनकी कीर्ती दिगंतों में व्याप्त हो रही है श्रीजानकी घाट निवासी श्रीपंडितजी महाराज श्रीरामवल्लभाशरण स्वामीजी को समाचार भेजा कि हमको दर्शन दिया जावें आप संकेत पाते ही एक महात्मावों का झुण्ड साथ में लिए हुए श्रीयुगल नाम की धुनि करते भए तत्काल पधारें, यहां भी शिवका मंहली दिव्य पारषदों के सहित अंतरिक्ष में तैयार ही थी श्रीपंडितजी महाराज का दर्शन कर चरणामृत चरण प्रक्षालन करके लिया और सब संत मण्डली का पुनः निवेदन किया कि सरकार अब आज्ञा प्रदान हो हमारे पास ए पांच सौ मुद्रा हैं और ए श्रीयुगल मनहरण श्रीवैदेहीवल्लभलाल जू सो जो हमारे परम कृपापात्र श्रीजनकदुलारीशरण बावनजी हैं उनको अपने कृपापूर्ण आशीर्वाद संयुक्त सौंप दिए जावेंगे। श्रीपंडित जी महाराज ने उन्हें अपनी

गोदमें लेकर एक सिंहासन में बैठाल दिया और रुपया भी उसी सिंहासन पर रखकर एक संत के माथे पधरा दिए स्थान में लै चलने के लिए पुनः श्रीनाम धुनि होने लगी और कुछ ही मिन्टों में आपने (श्रीयुगलशरणजी महाराजने) इस पंचभौतिक शरीर को त्यागकर नित्य दिव्य देहदेही विभाग रहित सब स्वरूप में प्रवेश कर लिया। महात्मावों ने बड़े समारोह के साथ आपके विशुद्ध भजनानंदी कलेवर की यथेष्ट विधि की—और सायंकाल में श्रीवावनजी महाराज को त्रिपती के लिए तार दिया गया। तार मिलते ही चौथे दिन आप महान बिरहाकुल व्यग्र अवस्था में बिना अन्न जल प्रसाद लिए श्रीअवध में आए श्रीगुरुदेव की परधाम जात्रा का सब समाचार सुनकर और भी कातर हुए पर श्रीबैदेही बल्लभ जू को प्राप्त होकर जो सुख भया वो अवर्णनीय है। उस समय का एक पद है (मोहि मारौ न मैतौ ऊसइमरी। इक तौ मरौं बिरह की मारी। दूजे बिरहिन के पाले परी।) मोहि मारौ न मैं तौ ऊसहमरी॥ अवधी समाप्त होने पर भंडारा बड़े समारोह के साथ भया और पश्चात् अपने श्रीबैदेहीबल्लभ श्रीयुगल सरकार को माथे पधराकर श्रीचित्रकूट चले गए वहां गुफा बनाकर श्रीजानकी कुण्ड पर मंदाकनी गंगा के किनारे रहने लगे। श्रीचित्रकूट की शोभा उस समय की विलक्षण थी और अच्छे अच्छे अनन्य रसीले शृंगारी भाविक महात्मावों की समाज से सुशोभित था। विशेष कर श्रीसियाबिहारीशरण जी महाराज से पूर्ण सहयोग रहता था। यहां रहकर जो जो अनुभव किए और व्रत अनुष्ठान का निर्वाह किया एवम् वैराग की पराकाष्ठा को पोषा वो असपृष्ट है। अब आपका मन तो रम गया प्रान प्रीतम को पाकर, पर प्रान प्यारे कैसे अपनी प्राण प्रिया अलिबिहारिणी का गौना लेकर निज राजधानी श्रीअवध में न ले आवैं। इसका निमित्त एक नए प्रकार का बना रिलवार रंगीले ने जाकर आपके गुरुभाई श्रीसिया शरण जी को प्रेरणा की और वे श्रीचित्रकूट आए उन्होंने कुछ काल साथ में रहकर बुन्देलखण्डान्तरगत झांसी दतिया सिमथर इत्यादि राजधानी व जिला उरई जालौन परगने के ग्रामों में भ्रमण कराया। इन अस्थलों में

श्रीबावन जी महाराज की आराधना साक्षात भगवान ही की तरह थी । अब जिन जीवों के कल्याण के लिए आपका अवतार था वो चरितार्थ भया और सहश्रों की संख्या में नारि नर शरणा गत होकर उपासक भाविक भक्त बने।

श्रीअवध में विराजना और अस्थान निर्माण करना

सं० १९७६ मेंश्रीअवध में आए और मोहल्ला स्वर्गद्वारमें एक जमीन खरीद की उसीमें सामान्य रीतिसे अपने प्राणबल्लभजूके सहितविराजने लगे आपका विराजना था कि छबीले छैल के फैल होने लेंगे, नितनए उत्सव भोग भंडारे भाविक रशिक अनन्य महात्मावों की सेवा सतकार एक रंगीली रीति और प्रीति के साथ चलने लगी रसोइ भंडारे की सजावट आपके यहां की अपूर्व ही होती थी और अब भी वही प्रणाली चल रही है पदार्थों की विंजनात्मक विधि तो इतना ही संकेत करके छोड़ देते हैं कि विंजन बिविध नाम को जाना, साथ ही में चंदन अतर पान पुष्पमाला सुन्दर पीत वस्त्र सद्रव्य तिस पर विनीत मुद्रा से विनय, आज के संसार में यह शोभा और सुख दुर्लभ हो गया ।

एक बार पंक्त में बहुत भीर हो गई अस्थान में जगह थोड़ी थी तब आप अपनो गद्दी छोड़कर सब महात्मावों की पादत्राण खड़ाऊँ कुछ अचला के छोड़ में लेकर कुछ गठरी बांधकर माथे पै पधराकर मुहुलीफे पास एक छोटी हौदी में बैठ गए जब बड़े बड़े प्रतिष्ठित श्रीमहन्तों ने तलाश किया कि श्री बावनजी कहां हैं देखें तो इस मुद्रा में अपूर्व सुख प्राप्त कर रहे थे तत्काल उठाकर महात्मा वृन्द भीतर मन्दिर में ले गए । एक समय एक जाति का सुपच आया और कहा कि भूँखे हैं कुछ भोजन मिलै आपने कहा तुम कोहौ कहां के वो भिक्षुक बोला मैं मिथिला जी का हूँ इतना सुनते ही गदगद हो गए और अकबार में भरकर भीतर ले आए उसने कहा मैं अछूत हूँ आप बोले हमारे नैहर के हो तुमसे बढ़के बिशुद्ध को है भोजन सनमान कराने के पीछे बिदा किया । भाविक उपाशिक कोई रशिक दर्शनार्थ जावैं तो तुरन्त ताजी रबड़ी, मलाई, रसगुल्ला, इमरती जो भी उस समय तैयार हो

मँगावें और प्रेम सहित पवा के आप प्रसादी लेवें अतर ताम्बूल देकर तोषित करें, उदारता नमृता निरभिमानता तो आपके रोम रोम से चूँती थी, थोड़ा सा भी कटु बिवहार किसी के प्रति किसी का सुनें देखें तो भय के मारे कांपने लगें आपके कोमिल स्वभाव की मृदुल मूरत हमारी आंखों के सामने नमृता पूर्ण नाच रही है।

श्रीवैदेही बल्लभ जू के नाम से ही निकुंज का नाम रक्खा गया (श्रीवै-देही बल्लभूकुञ्ज) और विशेष रूप से कुञ्ज के बनने की भावना हुई सेवा श्रीवैदेहीबल्लभजू की ऐसी होती थी जो चक्रवर्ती राजकुमार की जैसी होना चाहिए अतर सुगंधी के कंटर के कंटर सेज पर तर कर दिए जाते थे भोग विलास रंग तरंग केलि कौतहल नित नए होते रहते थे। जो जो चिमित्कार आपके साथ हुए हैं वे हम समय पर दृष्टि डालते हुए लेखनीसे बाहर रक्खेहैं। यों तो आपकी शरण में अनेक जीव कृतार्थ हुए पर एक सिमथर राज्य की राज्य कुल वधू बहुत छोटी अवस्था में आकर शरण हुईं और ऐसी उन पर अनूठी कृपा हुई कि संसार सुख नस्वर जानकर राजसी बैभव त्यागकर मीरा की तरह राज प्रमुख के विरोध करने पर भी दृढ़व्रत लेकर श्रीअवध बास कर रहीं हैं आप पर अनेक बज्रप्रहार कलिकी करालिता के आए पर अब तक निरावलम्ब होते हुए भी श्रीकिशोरीजी ने उनकी सब प्रकार रक्षा की, श्रीजी ऐसा सदा निवाह देवें ऐ आशीर्वाद उन्हें सब कोई प्रदान करै।

श्रीनिकुञ्ज निर्मान और विरक्त वंसावली एवम् परधाम यात्रा

सम्वत् १९९४ में श्रीवैदेहीबल्लभ कुञ्ज का विशाल रूप से पुनर्निमान किया गया और फालगुन शुक्ल १० को श्रीवैदेहीबल्लभ जू सिंहासनासीन बड़े समारोह विशेष उत्सव के सहित किए गए। अब आपका मनोर्थ पूरा हो गया और अपने अवतीर्ण होने की लीलाभी लालत्व को पहुँच गई, और नित्यधाम प्राप्ती की लहरें लहराने लगीं।

श्रीगुरु परम्परा के विरक्त वंश का विवरण

महां विरक्तराज आजन्म दुग्ध पान करने वाले श्रीमिथिलाधिपनंदनी शरण जी महाराज (श्रीकामदलताजू) जिनका प्रख्यात नाम श्रीदूदाधारीजी था और उपासना रहस्य शृंगार रस के महान् आवेशी पराप्रेमा में सदा निमग्न जिन्होंने पूज्यपाद श्रीगोस्वामी तुलसीदासजी की श्रीरामचरितमानस पर अद्वतीय टीका किया है जो अब तक अप्रकाशित है उन्हीं के परम कृपापात्र दो महानुभाव थे। ए दोनों मूर्ती ऐसे एक दूसरे से विलक्षण थे कि इनमें जिस कृपा कौशल का प्रादुर्भाव भया था उसकी तुलना तौलने में अन्योन्य अतुल थी, इसीलिए आपके श्रीगुरुदेव दूदाधारीजी महाराज ने इन दोनों गुरु भाइयों का नाम एक ही प्रकार का रक्खा (श्रीजुगलशरणजी) अब जब नाम लेकर बुलाए जावें तो दोनों मूर्ती को संकेत एकही होवै ऐसी अवस्था में स्वामी श्रीदूदाधारीजो महाराज ने आप महानुभावों के जन्म अस्थान के ग्राम की संगति लगाकर उच्चारण करने की आज्ञा दी इसीसे एक पंडरी वाले श्रीजुगलशरण जी दूसरे जौरा वाले श्रीजुगलशरणजी प्रख्यात हुए। पंडरी वाले श्रीयुगलशरणजी महाराज के कृपापात्र ३ मूर्ती एक श्रीचरित्र नाइक हमारे श्रीजनकदुलारीशरण (श्रीबावनजी महाराज) दूसरे श्रीसिया शरणजी महाराज वर्तमान श्रीवैदेहीवल्लभकुञ्ज के श्रीमहन्थ। तीसरे श्रीराम भूषणशरणजी थे। जौरा वाले श्रीजुगलशरणजी महाराज के कृपापात्र श्रीराम मनोहरशरणजी (श्रीकृपाशीला जू) जो श्रीबावनजी महाराज के आने के पहले यहां आ गए थे और आपके यहां विराजने के लिए अस्थान प्रस्थान आदि की विवस्था भली भांति से आभास प्रकाश कर रक्खी थी यद्यपि आप दोनों महानुभाव ए कांत्री गुरु भाई परम्परा में थे तथापि श्रीबावनजी महाराज को अपने पूज्य बड़ोंकी भांति मानते थे और स्वयम गुरु शिष्यकी तरह रहतेथे स्थान में रहने पर श्रीबावनजी महाराज नीचे और आपको ऊँचे कोठा पररखते थे और ऊपर कोठा वाले महाराज कहा करते थे, श्रीराममनोहर

शरणजी महाराज बड़े अनन्य और उपासनात्मक ग्रन्थों के मरमी एवम् शृंगार रस भोक्ता साधुसेवी परोपकारी थे, आपके संचय किए हुए अनेक प्राचीन ग्रन्थ अस्थान में उपस्थित हैं ऐसे अनेक सुकृत करके सम्वत् १९९१ में अपने नित्य धाम के लिए श्रीबावनजी महाराज की परम धाम जात्रा के पहले यहां से भी अग्रवर्ती होकर पधारे मानों वहां भी श्री अलिबिहारिणी जू की (श्रीबावनजी की) केलिकुञ्ज को प्रथम ही सुसज्जित कर रक्खेंगे। अब अस्थान में आपके परम कृपापात्र श्रीमहलबिहारीशरणजी अस्थानधिपति की कृपाकटाक्षाश्रित अब भी बड़े शुभचिन्तक रूप से विराजते हैं, जिन्होंने इस श्रीवैदेहीबल्लभ रसकोष मञ्जूषा के संशोधन और छपने में हमको बड़ी सहायता प्रदान की है एवम् जैसा आपके श्रीगुरुदेव का अनिवार्य स्नेह भाव श्रीबावनजी महाराज में था उसका ही आदर्श आपकी श्रद्धा में पाया गया।

निज गुरभाई श्रीसियाशरणजी महाराज

आपका जन्म बुन्देलखण्डान्तरगत राजधानी दतिया में पारासरी ग्राम के परमपवित्र युकौतिया ब्राह्मण नाइकों के कुल में भया, पूज्य श्रीपिताजी का नाम नौनेनाइक जू था, हम इन महानुभाव की पूरी जीवनी और जन्म कर्म एवम् वैराग की व्याख्या लिखने में असमर्थ हैं इसलिए कि ए अस्थान के महन्थ होते हुए भी इतने सौशील्य नम्र और दीन सरल स्वभाव के हैं जो अपने को श्रीवैदेहीवल्लभकुञ्ज का एक झाड़ूदार टहलुआ मानकर रहते हैं ए अभिमान भूलकर भी नहीं आने पाता है कि मैं यहां का मालिक या महन्थ हूँ।

श्रीबावनजी महाराज के निज शिष्य

आपके विरक्त शिष्य एकही थे और अब भी हैं जिनका नाम श्रीजानकीवल्लभ शरण हैं। इनकी जन्म भूमि जिला अलीगढ़ के बांमौदी ग्राम के

श्री १०८ श्रीराममनोहर शरण जी।

सनाढ कुल में हैं ए अच्छे दर्शनी और शान्त स्वभाव के हैं बाल्या अवस्था ही में श्रीभावनजी महाराज के शरण में आगए थे और विरक्त संस्कार वैष्णवी लेकर सेवा में रहने लगे थे।

कुछ गृहस्त प्रेमी अनन्य शिष्य शिष्या जिन्होंने तन मन धन से स्थान में रहकर गुरू भक्ती पूर्ण श्रीवैदेहीबल्लभजू पर अपन पौ निछावर कर दिया।

(१) श्रीमोतीलाल नाछोला गहोई वैश्य शहर झांसी के रहने वाले थे आप सपत्नीक श्रीअयोध्या बास करते थे प्रेमी और भाविक होते हूए स्थान की शुभचिन्तकी तो मानो इनके ही हिस्से में पड़ी थी जब स्थान निर्माण हो गया तो श्रीवैदेहीबल्लभ जू के राग भोग के लिए प्रबन्ध अस्थाई अस्थापित करने की चिन्ता हुई उस समय इन दाम्पति ने प्रथम समर्पण नामा अपनी जाइदाद में से एक मकान व तीन दुकानों का जो खास झांसी शहर में है कतई अपनी खुशी व श्रद्धा भक्ती से कर दिया था जिसकी आय एक रुपया रोज की आजन्मी हो रही है, इसमें साराहनीय श्रद्धा श्रीकोंसा बाई की है जो अपने पतिदेव के परम्पद होने के पश्चात् भी आज तक स्थान की सेवा और शुभचिन्तकी उसी प्रकार निबाह रहीं हैं एवम पति भक्ती गुरू भक्ती का पूर्णव्रत लिए भए श्रीअयोध्या वास करती हैं इनकी उदारता आज के समय में साराहनीय है इसलिए कि जो अब भी स्वयम निर्वाह के लिए एक दूकान अपने नाम से झांसी ही में बचाली गई थी वो भी भगवान श्रीवैदेही बल्लभ जू के ही नाम से समर्पण करने का निश्चय कर रहीं हैं।

(२) श्रीबच्चूलाल कारेखिमऊ बड़े गांव जिला झांसी के रहने वाले थे उनकी धर्मपत्नी श्रीजानकी बाई जो इन्हीं श्रीमोतीलाल जी की बहिन हैं बड़ी श्रद्धालू और प्रेमिन सदभक्त हैं जिन्होंने अपने पतिदेव का मानशिक किया हुआ संकल्प चरितार्थ किया और उनकी आत्मा को शान्तुना मिलने के निमित्त अपनी जगह जमीदारी का हिस्सा श्रीवैदेहीबल्लभ जू के नाम समर्पण कर दिया और कुल अधिकार भी प्रदान करके अपने आप श्रीगुरू भक्ती पारायण होकर स्थान की शुभचिन्तकी बन गईं ए बड़ी सज्जन शुशील और शुद्ध स्वभाव की हैं।

श्री बावनजी महाराज की श्रीसाकेत यात्रा

जब ६० वर्ष की आयू पूरी हुई और संसार में घोर आन्तंकवाद फैलने लगा तो नित्य ही श्रीकिशोरीजू से बिनय करने लगे कि हे जीजी जू अब वो दिन कब आवैगा जो आपके लालन पालन का आस्वादन इस विभूति से विलग होकर पान करने को मिलेगा, ऐसे अनेक विरह भाव सम्पन्न पद पाठकों को श्रीवैदेही वल्लभ रसकोष मंजूषी में बहुत मिलेंगे,उत्कंठा करने लगे और वैदेही बल्लभ जू की सेवा व स्थान का अधिकार सर्व तो भाव से अपने प्रिय गुरुभाई श्रीसियाशरणजी महाराज को सब सन्त महन्त महानुभावों को इकत्रित कर समर्पण कर दिया, एवम् अन्तिम आज्ञा प्रदान की कि भइया ए श्रीवैदेही बल्लभलाल जू अपने श्रीगुरुदेव के लाडलडाए लाडले हैं इनकी सेवा सत्कार में त्रुटि अपने जीवन में न होने देना और न अन अधिकारी अवैष्णव शृंगार भाव शून्य किसी गिरहस्त विरक्त से सेवा कराना भले ही चाहे सूखा चना भूंजा भोग धरके या अतिअसमर्थता होने पर मन्दिर वंद ही रखकर पड़े पड़े हाथ जोड़ लेना पर विजाती संस्पर्स न होने देना श्रीगुरुदेव की आज्ञा है कि हमारे वंश का कोई भी होगा उसकी सेवा में हमारे प्रभु को सब प्रकार सन्तोष होगा, और वैभव होने पर त्रुटि न लगाना तथा रशिक उपाशिक अनन्य भाविकों को अपना इष्ट समान मानकर उनमें अभेद भाव रखना और उनकी चरणामृत प्रशादी प्रेम से लेकर अपने को कृत कृत्य मानना यही हमारा प्राप्ती का मूल सिद्धांत साधन औरसिद्ध फलहै इत्यादि सम्वत १९९५ में कार्तिक मास प्रारम्भ होने के पहले आश्वनि शुक्ल पूर्णिमा एवं शर्दपूर्णिमा केदिन महारास की रात्रीको श्रीवैदेहीबल्लभलाल जू का शर्द के रास का दरबार लगा और उसी रास की रसभूमी में आपकी वृत्तिविलीन हो ग ईऐसा आवेश आया कि पुनः स्मृती [illegible] की

नही आई और तीन दिन तीन रात्री वो अवस्था बराबर रही कार्तिक कृष्ण चतुर्थी को अनित्य शरीर से नित्य शरीर में सुशोभित भए। बोलो श्रीजनक दुलारीशरण, अलिबिहारणी, श्रीभावनजी महाराज की जै।

अब आपके भाविक पंचभौतिक कलेवर का यथा विधि संस्कार भया और जैसे आप थे वैसा ही रंगीला उत्सव प्रिय मिलन का भया पश्चात श्री सियाशरण जी महाराज ने आज तक श्रीवैदेहीबल्लभलाल जू की सेवा टहल और निकुञ्ज की उत्तरोतर उन्नती भलीभांति से की जो असपृष्ट है। और श्रीभावनजी महाराज की एक श्रीमूर्ती मणि विग्रह मधुर भाव सम्पन्न उनके प्रति अपनी निष्ठा के आदर्श में भक्त भाविकों के दर्शनार्थ अस्थापित की जो अति कमनीय है। इन श्रीमहन्त सियाशरणजी महाराज के लिए धन्यवाद और बहुमान्य दिए बिना लेखनी में सरस्वती विराजी हुई मानती ही नहीं हैं कहां तक हम रोके वर्तमान विवस्थावों को देखकर अन्य स्थान और स्थानाधिपतियों की स्वार्थ परायणता के सामने साराहनीय नहीं महां साराहनीय परम संतोष एवम साधुता त्याग बैराग युक्त इनकी है, जो बिला शर्त अपना उत्तराधिकार और श्रीवैदेहीबल्लभजू की सेवा सम्पति का अधिपतित्व बिला किसी की सुश्रूसा सिफारिस के अपने पूर्ण पुरुषार्थ परायण होते हुए श्रीभावनजी महाराज श्रीजनकदुलारीशरणजी के वही इकलौते अनन्य शिष्य श्रीजानकीबल्लभशरणजी को समर्पण कर दिया ए अकिञ्चनता का आदर्श है ऐसे विवेक का अनुकरण भगवान सबसे करावें।

ग्रन्थ परिचय

इस पुस्तक का नाम श्रीवैदेहीबल्लभ रसकोष मंजूषी है और इसमें जो जो अनूठे भावों के उदगार उठे हैं वे पाठकों को पढ़ने और मनन करने ही से आस्वादन में आवेंगे हमें उन पर पालिश करने का कोई साहस नहीं पड़ता है आपकी बांणी रचनात्मक शब्दों में नही है किन्तु भोज्ञात्मक है

इसका भोग भाविक रशिक ही कर सकते हैं हम अपना सौभाग मान कर कृत कृत्य है और श्रीमहन्थ सियाशरणजी महाराज व श्रीमहलबिहारीशरण जी को धन्यवाद देते हैं जो हमको इस सेवा के सुयोग जानकर हमें अनुगृहीत किया। बड़े उत्साह और हर्ष पूर्वक एक सहस्र मुद्राव्य करके इनकी बांणी जीका प्रकाशन श्रीमिहंतजी कर रहेहैं। केवल पचास मुग्द्रा श्रीलालमती बाइने अपनी श्रद्धा से इस प्रकाशन में सम्मिलित करके सौभाग प्राप्त किया है।

शुभम् सुन्दरम्

❀ दोहा ❀

मृदुल मोद मुदमाधुरी। करुणा सिन्धु गँभोर
स्वामिनि जै श्रीमैथिली। आर्यः श्री रघुबीर

पं० मैथिलीशरण भक्तमाली (सौन्दर्य)

श्रीयुगलमाधुरीकुञ्ज नजरबाग श्रीअयोध्याजी
वैशाख शुक्ल सम्वत २००५ विक्रमीय
श्रीजानकी जन्म नौमी सोमवार

———

॥ श्री सीताराम ॥

॥ श्रीसियाजू मुखचन्द्रचकोरायनमः ॥

॥ श्रीअग्रदेवायनमः ॥

श्रीकृपावयैनमः

अथ

श्रीवैदेहीबल्लभरसकोषमंजूषा

श्रीरसिकाचार्यबन्दना

छप्पय

[१]

बन्दऊं श्रीरसिकाचार्य चरण सुखखानसुमङ्गलसिन्धुरमण ।
श्रीमद्रामानन्दस्वामि श्रीस्वामि अनन्तानन्द ढरण ॥
श्रीपयहारी कृपापात्र श्रीअग्रस्वामि भवभीत हरण ।

जय श्रीमत्कृपानिवास स्वामि श्रीदीनबन्धुसिरविन्दु धरण ॥
श्रीमत्करुणासिन्धुस्वामि श्री कृपासिंधु जन कृपाकरण ।
दयासिन्धु श्रीरसिक अलोजू युगलचन्द्र शृङ्गार वरण ॥
श्रीमिथिलाधिप नन्दिनिवल्लभशरणस्वामि जनतारणतरण
श्रीदूधाधारी स्वामि जू कामदलता सुनाम परण ॥
महलनाम श्री कृपावतो जू प्रगट स्वामि श्रीयुगलशरण ।
'अलीविहारिणि, पदरजचाहत कृपासकलकलि कलुषटरण ॥

बधाई श्रीप्राणवल्लभ जू की

गजल

(२)

आज वर्षगांठ प्राणवल्लभ जू की सजनी ।
हिल-मिल सबआवो गावो वधाई प्रियसजनी ॥
मंगल के थार सजो केशर कुम कुम रोचन ।
लय कपूर दही अक्षत अंकुर सजनी ॥
अष्टवर्तिका कपूर मिश्रित थारन में ।
पुनि २ कर आरति लीजे बालाय को सजनी ॥
राइ लौन वार-वार मणिनहार कर निसार ।
गज मनि के चौक पूरमंगल घट भरि सजनी ॥

बाजे बहुविध बजाय नाच गान करि पुनि पुनि।
एसौ दिन बड़े भाग पायो है सुख सजनी॥
सुर बनिता सुर विमान चढ़ि चढ़ि देखहिं सोभा।
वर्षत सुर तरु के फूल भरि भरि अंजलि सजनी॥
अतर धूप अरगजा अबीर धुंध नभ छाई।
गावत सब सोहलो सुराग महल भर सजनी॥
यह विलास बर्ष गाँठि को सुकवि गाय सकै।
अलिविहारिणी सुधन्य दृगभरि देखत सजनी॥

बधाई श्रीस्वामिनी जू की

दादरा सारँग

(३)

बधाई बाजै श्रीसिय जू की। श्रीजनक दुलारी जू की॥
स्वामिनि श्री शुभ नेत्रा नन्दिनि सीरध्वजजा जू की॥बधाई।
माधव मास शुक्ल नौमी तिथि सीता सुन्दरि जू की बधाई।
पंच उच्च ग्रह मध्य भौम दिन प्रगट मैथिली जू की॥बधाई।
श्रीअलिविहारिणी भरो भुवनसुख जीवनधन पियजू की।बधाई।

गजल

(४)

लाई अजब दूँ डाली महाराज देखिये।

चीजें अनेक देश की बहु भाँति पेखिये ॥
नारंगी, अनार, सेब नास पातियाँ ।
अमरूद, आम औ अंगूर आदि लेखिये ॥
केला करेला, कटहर, कमरख, करौंदा हैं ।
नीबू, शरीफा, लीची, जामुन परेखिये ॥
आलू, भटा, तरोई, मिर्च साग सब धरे ।
कहँ तक गिनाऊँ नाम औरहू विशेषिये ॥
सुनकर ललली बधाई धाई उताल में ।
डाली सगुन भरी नजर करी सुभेखिये ॥
दीजे यही इनाम जनक भवन में रहूँ ।
श्रीजनकललली जू की अली हे सजेखिये ॥

बधाई श्रीचारुशीला जू की

बधाई राग काफी

(५)

वाजै बाजै बधाई आज, शत्रु जित नृप गृह में ।
बेटी चन्द्र सुकान्ती जाई शोभा लखि शशि-रबि लाज ॥शत्रु॥
चारु शिला शुभ नाम रसीलौ जनकललली सँग राज॥शत्रु।
माधव मास पूर्ण तिथि मंगल मध्य दिवस सुख साज॥शत्रु॥

महल मध्य जो अति जूथेश्वरि तिन सब सकल समाज।।शत्रु।।
तिनमें चारु शिला सर्वेश्वरि बर्ष गाँठ शुभ काज ।।शत्रु।।
नाचैं नटी बजैं बहु बाजन सब जग आनद छाज ।।शत्रु।।
'अलि बिहारिणी, मान भाग धन नचौ त्यागि जगलाज।।शत्रु।

पद राग विहाग

(६)

हे श्रीचारु शीला सुकुमारी, मैं हूँ शरण तुम्हारो ।
मिथिला शत्रुजीत नृप वारी, चन्द्रकान्ति उर प्रगट सुखारी ।
श्रीवैदेही प्राणन की प्यारी, रति मन मथ-मद गारी ।।
रमा, उमा, ब्रह्माणि, शारदा, वन्दत चरण-कमल शोभा सद ।
कनक भवन नित नवल केलि मधि रसिकन सुखकारी ।
सर्वेश्वरी, चारु शीला जू, श्रीवैदेही बल्लभ लीला जू ।
नितनव कृपावती कौ सँग मिला जू केवल कृपा सुधारी ।।
माधव शुक्ल पूर्णमासी को, भौम बार आनन्द राशी को ।
प्रगटी नित्त सिया पासिनि को, रास रहस्य प्रचारी ।।
राजदुलारी मोद बिहारिणि आनंदा माधुर्य अगारिनि ।
'अली, अमित भवशोक निवारिनि सिय-पियकी प्यारी ।।
हे श्रीचारु शिलासुकुमारी ।।

फूल-बँगला-पद

रेखता

(७)

गरमी के दिन में सजनी फूलन सदन वनारी।
तेहिं मधि निरख मजे से पिय संग सिय पियारीं॥
जाई, जुही, चमेली, वेला, गुलाब लेकर।
कुन्दन कदम्ब केवरा वर मालती निवारी॥
गुलदाउदी सुगन्धा, चम्पा सुकेतकी लै।
गेंदा, सुगुल हजारा वा सेवती सम्भारी॥
बहु कुंज केतकीं की, कौमोदनी अपारी।
औरहु अनेक फूलन के साज सब सजारी॥
खस खस की टट्टियोंको जलसींच तरबतरकर।
सीतल सुगन्ध कोमल पंखा से कर बयारी॥
बरसै फुहार रिमझिम बहु धार इत्र सींचें।
डोलैं अनेक मधुकर सौरभ महा बहारी॥
यह नित्य धाम सेवा ग्रीषम के कुंज की है।
होती 'विहारणी, यह लीला महल मँझारी॥

———

गजल

(८)

सखी फूलन के बँगले में, लड़ेती-लाल विहरत हैं।
सुफूले फूल से दोऊ, अलिन के चित्त कर्षत हैं॥
सजे भूषण-वसन फूलन, चन्द्रिका क्रीट फूलन के।
धनुष अरु बाण फूलन के, फूल के हार पहिरत हैं॥
लिये कर गेंद फूलन की, पिया सिय जू तरफ मेलैं।
सिया जू मेल बहु गेंदे, पिया के मान धरषत हैं॥
छुटैं बहु इत्र रँग भी ने, फुहारे शीतप्रदनीके॥
विजन चँहुँ ओर सखि लीन्हैं, मधुर वायू सुसरशतहैं॥
लिये कोउ बाजनें सखियाँ, मृदंगादिक बजातीं हैं।
रिझातीं लाल प्यारी को, रसीली तान उचरत हैं॥
नवल बय नागरी नाचैं, अनेकन भाव दरसा कर।
मृदुलअँग मोरतीं बहु विध, निरखिललि-लाल हरषतहैं॥
परसपर पान पावत हैं, अलिन को देत निज कर से।
'विहारिणि' देखि बलिहारी कुसुम बहु माल बरषतहैं॥

ध्रुपद

(९)

आज सिय लाल के फूल बँगला बनें। देखुरी अली

आनंदअधिकावनें ॥ फूल के द्वार खम्भा सुरचि फूल के, चांदनी सुभ्र सुवितान फूलनतनें ॥ आ० ॥ फूलपरदा परे फूल झालर बनी, फूल ध्वज केतु बन्दन सकल भावनें ॥ आज० ॥ फूल सिंहासना सीन सिय लाल जू, फूल के चन्द्रिका क्रीट सुखमासनें ॥ आज० ॥ फूल के मकर कुण्डल श्रवण फूलबर, फूल नथ बन्दि बिन्दी सुछबि छावने ॥ आज० ॥ फूल नाशा मणीकंठ भूषण सकल, हृदय हारादि सब फूल रचना बनें ॥आज०॥ मुद्रिका, पहुँचि, चूरी; छल्ला, करकड़ा, अंगदादिक मधुर फूल शोभासने ॥ आज० ॥ किंकणी पोषपद नूपुरादिक कड़ा, छड़ा छबि पैंजनी फूल छवि अति घने ॥ आज० ॥ फूल लहँगा सुरंग फूल सारी, फूल की कंचुकी कुचन पहिरावने ॥ आज०॥ फूल धोती फूल जामा सरस, फूल दुपटा दुहूँ छोर फुलना बने ॥ आज० ॥ फूल धनु-बानकर बेंत फूलन छड़ी, गैंदबहु साज सब फूल के साजने ॥ आज० ॥ फूल तकिया बने फूल बैठक बने, फूल के फर्श बहुरंग के छावनें ॥ आज० ॥ फूल शृंगार भूषन बसन सकल; सखि सजैं श्रीचारु शीला सुछबि छावने ॥ आज० ॥ हाथ लीन्हे छड़ी फूल की सौंज सब, छत्र चामर व्यजन फूलन सुहावनें ॥ आज० ॥ इत्र अरु पानदानादि सब फूल मय, अरगजा सींच वर पुष्प

बरषावने ॥ आज० ॥ कनक भवनादि सब दिसा जहँ-तहँ खत तहाँ-तहँ फूल के पुँज दरसावने ॥ आज० ॥ चौक में चारु चन्दन लिऐं अंगजा, इत्र की कीच कुण्डन भरे भावनें ॥ आज० ॥ छूटि रहे चहुँ दिशि ते फुहारा सजल नवल। सुउसीर जल सींच तरतावनें ॥ आज० ॥ करहिं कोऊ गान कोऊ तान कोऊ नृत्य ही, कोऊ बर वाजि रहीं अमित स्वर बाजने ॥ आज० ॥ कोउ करि फूल के थार भरि आरती, कोऊ सखी फूल की बृष्टी करतीं घने ॥ आज० ॥ फूल की कुञ्ज द्रुम फूल फूले युगल, लाड़ली लाल वर जयति जय गावने ॥ आज० ॥ नित्य आनन्द ग्रीषम निकुँजहिं निरख, सदा बलिहार अलि विहारिणि भने ॥ आज सियलाल के फूल बँगला बनें ॥

झूलनोत्सव-पद

कजली

(१०)

झूलत श्री वैदेही वल्लभ कनक भवन के आँगनवाँ ॥
मृदु मुसक्यात बतात परस्पर गल भुज लावनवाँ ॥
बरषत जल सरसत सुख चहुँ दिस घनरव छावनवाँ ॥

पावस रूप अनूप रसीलो अलिगन मन ललचावनवाँ ॥
हरी हरी महि विविध बेलि तरु बोलत मोर चकोरनवाँ ॥
गावत मधुर राग मल्हारी अली विहारिणी, सावनवाँ ॥

श्रीजलविहार-पद

गजल

(११)

आज जल विहार प्रिया प्रीतम जू करते हैं।
श्रीसरजू के तोर मध्य सखिन चित्त हरते हैं॥
मणिन जटित नावबीच मणिनजटित कुञ्जबनी।
ता मधि झूलैं हिंडोर मेघ मधुर झरते हैं॥
श्रीचारुशीला कृपावती आदि शृङ्गार किये।
गावतीं मल्हार तान रंग रस बरसते हैं॥
सरजू की लहर उठत इधर ऊर्ध गती धारे।
उधर लेत मिचकी झुकि लहर परसते हैं॥
कबहुँ अलिन संग संग सरजू में कूद-कूद।
पकर पकर सखिन अंग बसन रसन धरते हैं॥
कबहुँ अलि लगाय घात हरत चीर प्यारे के।
देखत सिय ओर पिया अंग लाज गरते हैं॥
करि बिहार पहिर बसन-भूषन, सखियन समेत।

मुक्तामणि दान देत याचक मन भरते हैं ॥
यहि विधि सिय-पिय विहार जल झूलन देखि २॥
'अलि विहारिणी उछाह-सिन्धु सुजन परते हैं ॥

श्रीशरदोत्सव—पद

चौताल

(१२)

नृत्यत रघुनन्दन सह सखिन जानकी ।
श्वेत शृङ्गार वसन मणि भूषन लाजत दुति शशिभान की ।।
श्वेत मणिन की कुँज चौक सब रचना श्वेत पखान की ।।
कोउ सखि ताल मृदंग झाँझ लिये कोउ सारंगि मिलान की॥
कोउ खडताल मुँह चंग मँजीरा बाजै सलल प्रमान की ।।
तान लेत प्यारी-प्रीतम मिलि सप्त स्वरन त्रय ग्राम की ।।
हाव-भाव मूर्छना रसीली चटकन-मटकन पान की ॥
कबहुँ युगल गल बहियाँ दैकें इक इक चिबुक धरान की ॥
चितवन भृकुटि चपलता तीखी लंक लचन मुदखान की ।।
लट्टू वृत्त्य खेल चौ पर को अमित कला प्रगटान की ॥
श्री सर्वेश्वरि चारुशीलादिक झुण्ड सकल वनितान की ॥
मान होत कबहूँ सिय जू को सो छबि लीला दान की ॥
लीला ब्याह होलिका झूलन मृदु फेरन धनुवान की ।।

अमित खेल अरु अमित कलादिक मच्यो रास सविधान की॥
अति सुकुमार रास श्रम कन मुख जोरी जीवन प्रान की ॥
श्रीकृपावती जू सहित 'बिहारिणि, व्यजन करत श्रम हान की॥
बैठे दोउ पावत ताम्बूलन वलिहारी मुसक्यान की ॥

राग, चरचरी

(१३)

जरा नाचिये रँगीले। रँगीली रैन जात, रँगीली रैन जात भयो जात है प्रभात ॥ जरा नाचिये रँगीले० ॥ तुम तौ खिलारी अनारी इतरात; सिया स्वामिनी हमारी सुकुमारी गोरे गात ॥ जरा नाचिये रँगीले० ॥ नहिं मनिहौ रँगीले-रसीले मेरी बात, थारी जानूँ मैं-सारी खिलावन की घात ॥ जरा नाचिये रँगीले० ॥ मेरे यौवन को देखि देखि काहे ललचात, मैनें तन-मन भी-दीन्हों पै तू ना अघात ॥ जरा नाचिये रँगीले०॥ तेरी सूरत को देखि देखि, वलि वलि वलि जात, सिया प्यारी-विहारिणी छुड़ावो न हाथ ॥ जरा नाचिये रँगीले० ॥

बिहाग

(१४)

पदिक बिच तिय लखि दूजी सिय जू।

भयोमान अति अठिन लली उर; देख विकल भये पिय जू ॥ पदिक० ॥ हे मम जीवन प्रान लाडली-कहो बात सत हिय जू ॥ पदिक० ॥ का अपराध भयो प्रिय हमसे तुम उदास दिल किय जू ॥ पदिक० ॥ छम अपराध जान हमको निज, चलि निकुँज सुख-दिय जू ॥ पदिक० ॥ 'अलि-विहारिणी, नवल स्वामिनी रसिक अंक गहि लिय जू ॥प०॥

धुनि ठेठरी

(१५)

देखो पिय-प्यारी छबि रास करैं हैं,
रास करैं दोउ भुजा अंश धरैं हैं ॥ देखो० ॥
वाजते सितार तान पूराउर मृदु मृदंग,
बीणा वंशी सुरादि मनको हरैं हैं ॥ देखो० ॥
लीन्हे सब सौंज सखी मण्डल आकारमध्य,
दोऊ सुकुमार मार मान छरैं हैं ॥ देखो० ॥
लेत तान सप्त स्वरनतीन ग्राम मूर्छनादि,
हाव-भाव ताथेइ-ताथेइ ढरें हैं ॥ देखो० ॥
पगकिधरनि, नूपुरवजनिथिरकनिमुरकनिमरारे,
कृष कटि की लचि कनि में भाव भरें हैं ॥ देखो० ॥
भौंहिन की चलन मृदुल मुख की बिहँसान,

दोऊ नैनन मटकान देखि ताप जरैं हैं॥देखो०॥
निखंग चाप लट्टु मुक्त माल गती लेत,
नर्द चौपर की दाँव नहीं फर्क परैं हैं। देखो०॥
यह रास को विलास सदां जाके हियमें प्रकाश,
धन्य श्रीविहारिणी भवाब्धि तरैं हैं॥ देखो०।

राग प्रभात भैरव

(१६)

गई रात लाडली तजहु मान।
तुम बिन मोको कछु न सुहावे, घरी पलक छिन नींद न आवे,
विसरि गयौ मोहि खान पान, गई रात लाडली तजहुमान।
बिन आज्ञा मैं कहूँ न जाऊँ ताहू पर मैं तुम्हैं न सुहाऊँ,
ऐसी काहे परी बानऽ गई रात लाडली तजहुमान।
तुम्हरे हाथ विको मन मेरो, सदां रहत प्रिय तुम्हरो चेरो,
अब तो कृपा दृष्टि करि हेरो, गयो तिमिर भयो उदय भान।
गई रात लाडली तजहु मान।

राग मनभावतौ

[१७]

सिय प्यारी तजहु तुम मान, रैन अब थोरी रही।

अवध छैल दिलदार मनावत, परसत पद निजपान ।
रैन अब थोरी रही ॥
हे प्यारी धन भाग तिहारो, तब पिय नित सुख दान ।
रैन अब थोरी रही ॥
तुम्हरे केलि विन छिन पल बीतत, पिय को कल्प समान ।
रैन अब थोरी रही ॥
उठहु वेगि गलबहियाँ डारो, नाहिं तौ होत बिहान ।
रैन अब थोरी रही ॥
'अलिविहारिणी, सिय सुकुमारी, हँसि गहि बल्लभ पान ।
रैन अब थोरी रही ॥
कनकलता तमाल जनु लिपटी, सेज सरस छबिखान ।
रैन अब थोरी रही ॥
युगलचन्दलखि तन-मन वारत, अलि जय-जय करिगान ।
रैन अब थोरी रही ॥

राग विहाग

(१८)

सजनी श्याम मदन मतवारो ।
जब देखौ तब अलिन मध्य पिय, करतविहार नित्य सुखभारो ॥
रास मध्य सियमान करहिं कछु, करिबहु विनय मनायउचारो ॥

मैं पालौं तुव प्रीत रँगीली, तापर मम अपराधहि धारौ॥
सुनि अस वचन सिया जू पियके, दै गल बाँह सनेह सम्हारौ॥
नित नये केलि श्याम श्यामाके, रसिक प्रान जीवन धनसारौ॥
श्रीचारुशीला श्रीकृपावती जू, करत न नैक दृगन से न्यारौ॥
अलिविहारिणी, के सर्वसदोऊ, श्रीजानकि वल्लभप्यारी-प्यारौ

दादरा ठेठरी धुन

(१६)

छबि छाई दृगन में सिया जू की।
चितवनि कृपा की रस भरी मोहिं भावै री।
मृदु मुसक्यान मोद-सिन्धु कूँ बढ़ावै री॥
एक हाथ नील कंज शोभा सरसाती है।
नख शिख लखि लुनाई प्रिया जू की॥छवि०।
श्रीकनक भवन नित्य रास कुंज छटा छाई है।
श्री श्री सर्वेश्वरी अली जु मुख्य गाई है॥
श्रीचारुशीला नव ललित कृपा कोर भीनो है।
श्रीमती कृपावती जू वीरी मुख दीनो है॥
छबीली छवि बस गई हिया जू की॥छबि०॥
करुणा, कृपा, सुशीलतादि दिव्यगुणनखानी।
कोटि मैन रती छबी देखि रती सम जानी॥

श्रीरघुनन्दन जू की प्रान बल्लभा सलोनी।
श्रीसियलली सम जग है न भई न होनी॥
शरणागत अलि, सुख दिया जूकी॥ छवि०॥

बधाई श्रीहनुमन्तलाल जू की
दादरा सारंग में

(२०)

बधाई बाजै अति सुखदाई।
बरषगाँठि श्रीकेशरि सुतकी, सुनि त्रिभुवन सुख छाई॥
सुर दुंदभी बजावहिं हरषहिं, सुमन माल बरसाई।
भई भीरयाचक न्यौछावरि मन भावत सब पाई॥
कार्तिक कृष्णा चतुर्दशी दिन, सब दिशि लगत सुहाई।
नृत्य-गान बहु वाद्य वजत सब, नौबत सुर सहनाई॥
धूप धूम कुम कुम कपूर की, धुन्ध मची मन भाई।
इतर कीच मच रही गलिन सब, मेवा पान पवाई॥
मणि मुक्ता न्यौछावरि करि करि, सम्पति बहुत लुटाई।
अस आनन्द मच्यो तिहुँपुर में, जय-जय धुनि रहि छाई॥
श्री हनुमत जन्म महोत्सव लखि कै, सबके नयन सिराई।
अलिविहारिणी, यहि सुख ऊपर, बार बार बलि जाई॥

पद राग काफी

(२१)

बाजै बाजै बधाई आज राज केशरि गृह में।
कार्तिक कृष्ण चतुर्दशि मंगल, स्वाती मेष लग्न पर में॥
सुन्दर सुत श्रीअंजनी जायो, भायो मन भायो सब उर में।
जन्म समय ब्रह्मादिक सुर सब, अस्तुति करत सुमन झरमें॥
बोले इन्द्र पवन तब सुत को, उत्तम नाम करन कर में।
हनूमान यह नाम मनोहर, हुँई हैं ख्याति तिहूँपुर में॥
प्रबल बली श्रीसीताबर को, पूरन भक्त प्रगट हर में।
दै दै वर सब लोक देव गये, अभय पाय न्यौछावर में॥
याचक सकल पाय मन भावत, जय जयकार चराचर में॥
'अलिविहारिणी, मारुति सुतसम, है न भयो कोउ सुरनरमें॥

गजल रंगीली धुन

(२२)

बाजै बाजै बधाई आज, केशरी नृप गृह में।
कार्तिक कृष्णचतुर्दशि तिथि को, मंगलवार विराज॥केशरी०॥
स्वाती नषत समय गो धूली, प्रगट रसिक शिरताज॥केशरी०।
नित्य विहार चारुशीला जू, विहरत सिय रघुराज॥केशरी०॥

सोई प्रगट वपुष कपिकुलवर हनुमत नाम दराज॥केशरी०॥
युगलकिशोर कृपा की मूरति,रहस उपास निवाज केशरी०।
'अलिविहारिणी,प्राणजीवनसुख विमुखीजन शिरगाज।के०।

रेखता

(२३)

बाजै बधाई आज केशरी किशोर की।
देखौ सखी तज लाज आज, रंग ओर की॥
शृङ्गार भाव प्रगटन विभत्रारिन के मान हरन।
श्रीचारुशीला अंश प्रगट कृपाकोर की॥
अधमन आधार देत, अशरन को शरन लेत।
तनु तेज कोटि सूर्य-चन्द्र, द्युति न थोर की॥
आचार्य रूप धारि युगल रसिकमन अनन्य।
दीन्हौ 'विहारिणी, को सुख रंग पौरि की॥

राग काफी

श्रीजनकपुर अवलोकन के समय का पद

(२४)

रसिया रामविहारी गजब कियौ री।
मिथिलापुर में आय सबन पर, टौना डारि दियौरी॥

बाँकी अदा दिलाय मजे से; तन-मन मोहि लियौरी ॥
बिनु देखे सखि रूप माधुरी, मानत नाहिं हियौरी ॥
'अलिविहारिणी, इनके बिछुरे, कैसे जात जियौरी ॥

कवित्त

श्री धनुष यज्ञ में अज्ञानी राजाओं को शिक्षा

(२५)

रीत प्रीत राजनीत एक भी न जानो तुम कर्म धर्म शुभाशुभ एक भी न चीन्हो है ॥ राजन समाज में विराज बोल जानो नाहि शास्त्र शस्त्र कला वीरताई अंग हीनौ है ॥ तेज न लखात पाप पीन दरसात वचन सब फीके जग लाज सब छीनौ है॥ जन सिरताज रघुराज को न चीन्हो तुम कौन बेवकूफ तुम्हैं राज ताज दीन्हो है ॥

(२६)

चन्दन कीं खौरि तुम्हे रंचहू न सोहै सुनो काजल को घोर तुम धारौ ललाट में ॥ पाग सिर पेंच क्रोट बाँधे नहिं शोभा देत, बाँधो जाय वृक्षन के पत्र खर साट में ॥ ढाल तरवार शस्त्र फीके सब लागत हैं, भूषन बसन सब उतार धरौ हाट में ॥ राजन में बिराजवो न जानौ तुम(अरे)दुरि जाय बैठौ कहुँ चोरन की बाट में ॥

सवैया

(२७)

जाविधि ने यह राज समाज में लाज न रंच कठोर हियो है।
धाम दिये धन वाम दिये तन सुन्दर पुत्र कुटुम्ब दियो है।
मारहु ते कुमार सिया अवधेश कुमारन चीन्ह लियो है॥
ताविधि ने तुमको विनु पूछ बिषान अनूपम बैल कियो है॥

[२८]

जाय दिखाय करो सोइ आज समाजमें सत्य सुनो मम बैना॥
जन्म धरे कर लाहु भयो अतिशय हिय माँझ भयोदृढ़चैना॥
कोटि रती उर मारहुते सुकमार सिया रघुचन्द सुखैना॥
हे विधि जन्म जहाँ जहँ होय तहाँ तहँ मैं निरखों भर नैना॥

दोहा

(२९)

श्रीविदेह निमराज को, सुजस रहै भर पूर।
जिनके पाहुन देखि के, धन्य भाग्य सुखमूर॥
जनकलली दशरथ लुवन; चिरजीवो सुखधाम।
दम्पति लीला देखि कै, चित पायो विश्राम॥

मन मोदक नहि जाइहै, छुधा सुनो अज्ञान।
जगत पिता रघुवंशमणि, जगअम्बा सिय मान॥

सवैया

(३०)

व्यर्थमरौ जनि गाल बजायके पिनाकके संग गई तुव नासिका॥
राम सिया छवि लेहु निहारि नहीं परिनाम घनी जग हाँसिका॥
पाप भयौ कटुबैन कहे तव पेट जलंधर रोग कुबासिका॥
ह्वै हैभलो अपराध क्षमा तनया निज लायकरो सियदासिका॥

श्रीविवाह उत्सव का पद

दादरा

(३१)

नवल नित दूलह राघव प्यारो।
दुलहिन श्रीमिथिलेश किशोरी नवल सुनित्य विचारो॥
नवल चारुशीलादिक सहचरि नवल कृपावति धारो॥
नवल अयोध्या सरजू कमला मिथला नित्य सम्हारो॥
नित्य विहार प्रमोद विपिन मधि कनक भवन सुखसारो॥
नवल उपासिक अलिविहारिणी अग्रस्वामि पथम्हारो॥

विवाह के पश्चाद् विदा के पहले का पद

दादरा

(३२)

प्यारे जइयो जब नेहा लगाय, जइयो ।सिया प्यारी की सेवा कराय जइयो । प्यारे ॥ सिय जू की हम नित्य सहेली, निज हिय से लपटाय जइयो ॥ प्यारे ॥ श्रीसाकेत निकुँज बिहारी संग अली बिहारिणि लिवाय जइयो ॥ प्यारे जइयो॥

श्रीवसंतोत्सव का पद

गजल

(३३)

पहिरे वसन बसंती बैदेहि लाल जू,
नख शिख अमोल भूषण हिये मुक्त माल जू।
घुँघरारी जुल्फें कारीं सुखमा को लूटतीं,
अतिशय छवी अबीर की प्यारे के गाल जू।
रतनारी आँखैं रसभरीं कृपा कटाक्ष कीं,
भृकुटी कमान सैं चैं रति मदन साल जू।
मुखचन्द्र की निकाई हाँसी अजूब है,
मनमोन 'अलि, फँसायो जुगरूप लाल जू।

कवित

(३४)

श्रीमती कृपावती सुपरि करके मध्य। नित्य बिहरें बसंत केलि रंग भरी जोरी है ॥ रंग भरे श्रीवृंदेही वल्लभ कनक भवन खेलत अनेक रंग-रंग भरी होरी है ॥ रंग भरी स्वामिनि सर्वेश्वरि श्रीचारुशीला चन्द्रकला श्रीप्रसाद अली रंग-बोरी हैं ॥ रंग भरी पिचकारी लीन्है दोऊ हाथन में छोड़ें रँगीले पर रंग अंग गोरी है ॥

कवित

(३५)

रंग भरी सोहैं संग अग्र अखी रूपलता रसिका श्री कामद लता जू रंग भीनी हैं ॥ रैंग के उमंग संग गोरी कृपावती जू रंग सौंज सब होरी कर लीनी हैं ॥ रंग भरी माधुर्या अली विहारिणी के संग सहित सरोजलता अंग रंग कटिझीनी है ॥ रंग भरी प्रीतलता रहस मकरन्द अली होरी नवरंगी खेल में प्रवीनी है ॥

कविता

[३६]

सौभाग्या चन्द्रलता रूपकला चम्पलता लतिका अनंग

प्रेमलता रंग वारी हैं॥ रसिकलता मोदलता नेहलता हेमलता तब बपु शृंगारलता संग रंग प्यारी है॥ रंग भरी होरी की तान में धमार राग गावत रंगीली रंग पिचकारी कर धारी हैं॥ रंग भरी कनक भवन मध्य रंग महल कुञ्ज पुँज पुँज खेलैं विहारिणी विहारी हैं॥

कवित

(३७)

कुम कुम गुलाल गाल दीन्हीं सियलाल जू के भाल में सुअर्ध चन्द्र बिन्दु चन्द्रिका दई॥ सारी उड़ाय नकवेसर पहिराय दृग अंजन बनाय अलि रूप रचना भई॥ जावक लगाय कर मिहँदी रचाय सब नखशिख सजाय सिय जू के चित भा गई॥ लखिके पियरूप बैठार सिंहासन अली गावैं सब ताल दै नाचै सुखमा छई॥

सोरठा

(३८)

यह वर नित्य विहार, कृपावती सरकार कौ।
निगमागम से पार, करन सुखद भव पार को॥

———

होरी उत्सव

होली काफी में

(३६)

रंग महल में आज रसिक दोउ खेलत होरी ॥
बैठे कनक भवन आँगन मधि जुगल किशोर किशोरी ॥
नखशिख नवल शृंगार सम्हारे पिचकारी हाँथ लसोरी ॥
सिय पिय सुन्दर जोरी ॥ रङ्ग महल में० ॥
चारुशीला श्रीकृपावती जू अग्र अली रस बोरी ॥
श्री प्रसाद कापद लतिका जू चन्द्रकलादिक गोरी ॥
फाग को साज सजोरी ॥ रंग महल में० ॥
कंचन मणिमय कुम्भ अमितवर के शरादि रङ्ग धोरी ॥
अमित कुमकुमन ढेर लगाये अमित गुलाल धरो री ॥
माल पुष्पन कीन थोरी ॥ रङ्गमहल में० ॥
श्री वैदेही बल्लभ प्यारे मृदु हँसि बैन कह्यो री ॥
खेलो दिल खोलो वेशक अब आज न लाज करो री ॥
सखिन उत्साह व बढ़ोरी ॥ रङ्गमहल में० ॥
होन लगी होरी रङ्ग बोरी शोरमचौ चहुँ ओरी ॥
बाजत ताल मृदंग झाँझ डफ गानवितान तनोरी ॥
अधिक आनन्द भयोरी ॥ रङ्गमहल में० ॥

जय जयकार मची दुहुँ दिशि ते सुख द्रुमफूल करथोरी॥
युगल चन्द्र छबि देखि अली सब तन मन धन तृन तोरी॥
परस्पर लेत अकोरी ॥ रङ्गमहल में० ॥

होली काफी

(४०)

आज फाग शृंगार युगल छबि लागत प्यारी।
हेम सिंहासन आसन सजनी कनक भवन सुखकारो ॥
भूषण वसन नवल अंग सोहैं मन मोहैं सखि सारी ॥
'सरस' अखियाँ कजरारी ॥ आज फाग० ॥
रसिकलाल अवधेश दुलारी श्रीमिथिलेश दुलारो ॥
चारुशीला श्रीकृपावती जू चन्द्रकलादिक नारी ॥
करन वर सौंज सम्हारी ॥ आज फाग० ॥
लाल गुलाल कपोलन सोहै कर कंचन पिचकारी ॥
मंद मंद मुसकात परस्पर लखि रति मतिमद गारी ॥
खेलैं दोउ नित्य बिहारी ॥ आज फाग० ॥
जय श्री वैदेही वल्लभ अलि जै जै शब्द उचारी ॥
यह जोरी होरी की सुखमा कबहुँ न होवे न्यारी ॥
रसिक यहि रस मतवारी ॥ ॥ आज फाग० ॥

होरी काफी

(४१)

गुईयाँ री होरी खेलन मन अटको।
श्रीवैदेही वल्लभ प्यारे खेलत सरजू तट को।
अबीर गुलाल कुमकुमा केशर रंग भरो बहु घट को॥
चलत पिचकारी चट पट को॥ होरी खेलन०॥
नखशिख शुभग शृंगार सजेदोउ गाल गुलाल लपटको॥
गावत राग धमार सप्त स्वर बजत साज गत नट को॥
सौज सब होरी ठट को॥ होरी खेलन०॥
जे यह रहस रसिक मतवारे निरख त्याग मन खट को॥
न तो और मृग की तृष्णा सम बहुत जन्म जग भटको॥
शरण होय मन नहिं हट को॥ होरी खेलन०॥
जाके मते भाय सो कीजे दीजे अब मोहि छट को॥
अलिविहारिणी सिय वल्लभके नवल केलि दृग अटको॥
नित्य लीला मुख रट को॥ होरी खेलन०॥

होरी काफी

(४२)

नित्य नवल दोउ खेलत होरी॥
नित्य फाग की कुँज रमन दोउ नवल किशोर किशोरी॥

नित्य चारुशीला सब परिकर नित्य कृपावति गोरी ॥
फाग की सौज सजोरी ॥ नित्य० ॥
नित्य नवल श्रीकनक भवन वर नित्य सिया पिया जोरी ॥
नित्य विहार श्याम श्यामा को नवल रसिक चित चोरी ॥
नवल नितनेह बढ़ौरी ॥ नित्य० ॥
रंग महल के मध्य चौक में परिकर नवल लसौरी ॥
केशर रंग गुलाल कुमकुमा वरसत नित्त दुहुँ ओरी ।
नवल बिहँसन मुख मोरी ॥नित्य०॥
सिय जू पर पिय, पिय पर सिय जू डारत रंग न थोरी ॥
हो हो होरी कह सब गोरी थोरी वयस करो री ॥
निरख मनसिजरति भोरी ॥ नित्य०॥
नित्य नवल वर दै गल बहियाँ बैठे दोऊ इक ठोरी ॥
नवल महामाधुर्य सिंधु विच नित्य नवल रस बोरी ॥
नवल रस केलि भयौरी ॥ नित्य०॥
नित्य नवल सौभाग्य सोहावन सरसत सुख यह पौरी ॥
श्री वैदेही बल्लभ अलि के जीवन धन वर नौरी ॥
नवल छबि पर तृन तोरी ॥ नित्य०॥

होरी

(४३)

प्यारे तेरे ये गाल गुलाल जोग,

मैं आई लगावन लाल जोग ।
चिक्कनगोल कपोल श्याम द्युतिमसल गुलाल रसाल जोग॥
चूमा लेंऊँ चपल दृग मारों गाय हँसों दै ताल जोग॥
चुनचुन कुसुम कलीनकरन निज लाई हूँमाल कृपालजोग।
तुम्हरे जोग स्वामिनी सिय जू तुम विहारिणी बाल जोग॥

होरी

(४४)

किशोरी होगीखेलौ रंगीलेके संग;नवगोरीसजकर विविधरंग॥
मृदुकर कंज कनक पिचकारी रंग भरि छोड़त पिय के अंग॥
भीजत भूषन बसन रसिक अँग हो हो होरी ध्वनि होत जंग॥
छोड़त लाल रंग भरि पिचका भीजत सारी चोलि तँग॥
छूटत दुहुँ दिश अमित कुमकुमा फैली चहुँ दिशलाली उमंग॥
गावत राग धमार अली गन बाजहिं ताल मृदंग चंग॥
सारंगी सितार सहनाई डफ झाँझ मंजीरा जल तरंग॥
खेलहिं दोउ दिसते पिय प्यारी करहिं अमित कौतुक सुढंग॥
चिरजीवो दोउरसिक शिरोमणि वारियेविहारिणी छविअनंग॥

दादरा कहरवा में

(४५)

मोरे बलम नीके लगें तोरे गाल॥

गोल कपोल श्याम दुतिझलकत मलत अबीरगुलाल।।मोरे०।
चूमत अतिसुख हिय उपजावत मैन मुकर छबि जाल।।मोरे०।
अधर सुधा सों पोषित निसिदिन तासें रहत रसाल।।मोरे०।
अलिविहारिणीमिसकरि परसतछवि लखि होत निहाल।।मोरे०।

होरी

(४६)

वैदेही बल्लभ जोरी. दृगन भरि भरि निरखौरी ।।
रंग महल रंगहौद भरे हैं अबीर गुलालको ढेर लगोरी।।वै०।
सर्वेश्वरी श्रीचारुशीला जू कंचन पिचका रीन सजोरी।।वै०।
फूलन डाली बहुविधि राजै धूर कपूर कौ धुन्ध मचोरी ।।वै०।।
अमित प्रकार सौंज सब राजै हो हो होरी गावत गोरी।।वै०।।
बाजत तालमृदंग झाँझ डफरितु वसंत नवकेलि लसौरी।।वै०।
श्रीरसिका श्रीअग्रअलीजू श्रीमतीं कृपावती रस बोरी।।वै०।
श्रीकामदलतिकासब परिकरअलि सब जै जै शब्दकह्योरी ।।

होरी काफी

(४७)

।। तुम्हें प्यारे सिय जू बुलाईं कई बार श्रीकनक भवन सुख सदन द्वार ।। चल रितुराज सौंज सब देखिये होरी

खेलिये दिल सम्हार श्रीसिय जू संग चारुशीलाजू श्रीकृपावती आदिक उदार ॥ तुम्हें प्यारे ॥ तुमहूँ अपने सखा संग लै चल खेलिये अब जीतहार ॥ श्रीसिय जू निरसंक सजी हैं लख लाजत रतिमार ॥ तुम्हें प्यारे० ॥ सुनि अलि बचन रसिक रघुनन्दन आये होरी रंग अगार ॥ श्रीवैदेही वल्लभ बैठे सिंधासन गल बाहिंडार ॥ तुम्हें प्यारे० श्री कामदलता छत्र युग लीन्हे श्रीचारुशीला मोरछल सुधार ॥ श्रीकृपावतीजू चमर चलावैं लखि विहारिणीसुख अपार॥तु०।

होली चलतू लैवाली

(४८)

बरजोरी न होरी मचावो पिया।
तोहिं खेल सुरीति सिखावों पिया ॥ बरजोरी० ॥
हे दिलदार रसिक चूड़ामणि।
नई नई तान सुनावो पिया ॥ बरजोरी० ॥
लेंहौं चुकाय कसर सबदिन की।
कुमकुम मार भगावों पिया ॥ बरजोरी० ॥
झपट पकर तब सखी रूप धर।
सिय सन्मुख लै जावों पिया ॥ बरजोरी० ॥
पद जावक दिवाय सिय जू के।

बचे सो भाल दिवावों पिया ॥ बरजोरी० ॥
दोउ करजोर निहोर पाँय पर।
सब गुमराई गमावो पिया ॥ बरजोरी० ॥
फिर बैठार युगल सिंहासन।
गाल गुलाल लगावों पिया ॥ बरजोरी० ॥
अलिविहारिणी प्रान जीवन धन।
यह सुख हीय बसावों पिया ॥ बरजोरी० ॥

होरी देश में

(४६)

रघुनन्दन बनमाली सँमलिया, श्रीप्रमोद बन छाय रहो ॥
श्रीवैदेही युत अलिमन सँग, राग धमारहिं गाय रहो ॥रघु०।
ताल मृदंग सितार आदि सब,बाजा बीन बजाय रहो॥रघु०॥
अलिनिकुञ्जविहरत दोऊ लखि,छबि मनसिंधु समाय रहो।र०।

होली खेमटा कहरवा

(५०)

अरि गोरी होरी बराजोरी खेलैं पिया।
मोरी टोरी पकर मोती माल हिया ॥
सुन प्यारी मदन मतवारो पिया ॥ ॥ अरि गोरी ॥

हगवान चला मोपै जुल्म किया ॥
पिचकारिन सों मार भिजाय दिया ॥ अरि गोरी ॥
मेरो मन वर बस चितचोर लिया ॥
अब मानै नहीं प्यारी मेरौ जिया ॥ अरि गोरी ॥
जबही से पिया मेरौ अंग छिया ॥
तबही से न मोरी कसक मिटिया ॥ अरि गोरी ॥
मर जावों जहर खाके ऐरीतिया ॥
तन जारै सदा विरहा अगिया ॥ अरि गोरी ॥
कब कठ लगाऊँ जुड़ाऊँ जिया ॥
यह मेरे मना बड़ अभ लखिया ॥ अरि गोरी ॥
इकठौरै लखों दोऊ भरि अँखिया ॥
तब अलिविहारिणी निवछावरिया ॥ अरि गोरी ॥

होली दादरे में

(५१)

बची रहियो आली या फागुन में। नृप किशोर नित नव मतवारो तामें फागुन लालो ॥ बची रहियो० ॥ नवला नवल ठोकहै लैन यौवनरसपरी चसक बनमाली। बचीरहियो०। तू अबहीं आई नैहरसे मन हरनीगज चाली ॥बची रहियो०। तेरे युवन रस की बातैं वह करत रहे पिय काली ॥ बची

रहियो० ॥ कौनिहुँ भाँ त बचन नहिं पैहौ राजसुवन बड़ जाली ॥ बची रहियो० ॥ होरी खेलन मिस घर अइहैं मसल गुलालन गाली ॥ बची रहियो० ॥ केशर अतर उरजन मलि है पुनि करिहैं सब ख्याली ॥ बची रहियो० ॥ आज अचानक मेरे ऊपर रँग पिचकारी घाली ॥ बची रहियो० ॥ रहि गई गुरुजन लाज भरी में भजि पैठी सखि पाली ॥ बचीरहियो० ॥ गावत फिरत धमार रसीली तान देत कर ताली ॥ बचीरहि० ॥ चितवत ही हँस देत मंत्र जनु चोट परत नहिं खाली ॥ बचीरहियो अलि विहारिणी अवश होइहैं जो विधि लिखो सो भाली ॥ बची रहियो० ॥

होरी काफी

(५२)

छबीले छैला घालो न रंग पिचकारी ॥
नव यौवन अंकुर अबही मम तापर झीनी सारी ॥ छबीले० ॥
परत रंग सब अंग दिखै है फिर हँसि हौ दै तारी ॥ छबीले० ॥
जइहों घर फिर केहि विधि प्रीतम गुरुजन लाजबिचारी छ० ।
सब राखतमर्याद फागमें भये तुम अजब खिलारी ॥ छबीले० ।
रँग छिरकतगुलाल पुनिफेंकत करतकुमकुमन मारी छ० ।
नवला नवल फाग के दिन में चाहे लघु मतवारी ॥ छबीले० ।

आपन दाँव लगावत प्यारे नैक दया न हमारी ॥ छबीले० ॥
हौ सब विधि हमरे पिय प्यारे हौं तुम्हार लघु प्यारी॥छबीले॥
अलिबिहारिणीमुग्ध जान के खेलहु फाग सम्हारी॥ छबीले०॥

होरी काफी

(५३)

ऐरी काहे खेलै तूं या सों फाग ॥
ये तो निपट अनारी या सों रही तू पाग ॥
कालि सखी होरी खेली किशोरी सँग पूछौ रसिक थे प्रमोद बाग ॥ ऐरी० ॥ खेलत में गहि लपटि झपटि पिय रहि बहुत दिनन की हमरी लाग ॥ ऐरी० ॥ या के संग न जी तौ प्यारी यह निशंक नहिं शरम दाग ॥ ऐरी० ॥ पकर जात करते विनती बहु छूटत ज्वाली जुल्म जाग ॥ ऐरी० ॥ धन्य भाग हमरो विहारिणी तन मन धन से बँधौ ताग ॥ ऐरी० ॥ मम सुहाग सिय पद पराग सों लैं भरों सदा सखि अपनी माँग ॥ ऐरी० ॥

गजल

(५४)

आज प्यारे को प्यारी बनावैंगे हम ॥

शैर—दिन से बहुत हमारे हिय में उमंग थी।
अवसर नहीं मिला अरु होरी न रंग थी॥
अब तो ऋतुवसंत औ फागुन का महीना।
प्यारे भी सजे फिरते हैं होरी के नगीना॥
छल करके पकर बतरावैंगे हम ॥आज०॥

शैर—जुल्फों में तेल डाल माँग चोटी कसैंगे।
चूडामणी लगाय नाग मुक्ता गुहैंगे॥
भरिहैं सिंदूर रुचि सों वेंदा भी लगावैं।
बन्दी लगाय वीज सीस फूल सजावैं॥
शीश चन्द्रिका विचित्रलै झुकावेंगे हम ॥आज०॥

शैर—टिकुली लगाय अर्ध चन्द्र बिन्दु सुहावन।
श्री रेख मधुर आस पास खौरि लगावन॥
कस्तूरी केशर रोचन को झोल कर।
कपूर अगर मिश्रित मलिहौं कपोल पर॥
ता पै श्यामा ढिटौना लगावैंगे हय॥ आज०॥

शैर—जगमगे करनफूल झूमका सुलोल के।
मौतिन की साँकरैं बड़ी कानों में डोल के॥
बाली में पान झूलैं मोती बड़े बड़े।
नयनोंमें लगा अंजनमसि विन्दु छविअड़े॥
नकबेसर अधर पर झुलावैंगे हम ॥ आज०॥

शैर—ना सामणी भी सजकर मिस्सी दसनबनी।
वीरी खवाय रुचि सों ठोड़ी पै तिल ठनी॥
कंठा भरन ठुसी छटा चिटौली गोप हैं।
दुलरी तिलरी पंच सप्त लरी चोप हैं॥
वर चम्पाकली पहिरावैंगे हम ॥ आज० ॥

शैर—ताबीज मुक्त कंठा शशि हरा भी सुहावन।
धुकधुकी हार औरहू हरबि ज्योति लजावन॥
चोली हरी कसवकी अध बहियन सोहै।
अंकुर उरोज ता मध गन मनमथ मोहै॥
भुज बन्दन औ अंगद सजावैंगे हम ॥ आज० ॥

शैर—चूरी विचित्र रंग कड़ा कँकना सजे।
गजरी बघौना छुन्नी पटेली औ वँद छजे॥
गुंजै दुलनिया कंकन कर पोस आरसी।
मुद्रिका औ छल्ला मिहँदी गुल अनारसी॥
यह विध सों शृंगार करावैंगे हम॥ आज० ॥

शैर—तोड़ा औ लच्छा नूपुर कटिकिंकिणी बनी।
घुघरू औ पायजेवी सोहैं जड़ी मनी॥
पद पोस कड़ा छडा जेहरो मणिन जड़ी।
छल्ला अँगूठा विछिया अनवट छबी बड़ी॥
पद जावक जमक सों लगावैंगे हम ॥ आज० ॥

शैर—लहँगा लहरिया दार माडवारी बनक को।
मोतिनलगी किनारी जरतारी कनकको॥
नीवी रची सुहाई करधौनी लटकती।
छबिमोतिन के गुच्छेकी अजबझलकती॥
पचरंगी चुनरिया उड़ाबैंगे हम॥ आज०॥

शैर—रस मय चलाबैं चाल मोर हँस केशरी।
गज पारावत कुककुट निजकरमें करधरी॥
सिंहासन पै बैठीं मिथिलेश किशोरी।
श्रीचारुशीला कृपावती अगणित गोरी॥
वहाँ हँस हँस के नृत्य करावैंगे हम॥ आज०॥

शैर—यह विधि नचाय गाल में गुलाल लगावैं।
जावक दिवाय सिय जू के चरण छुवावैं॥
मुख से कहो किशोरी श्रीसिय जू की जय।
सियजूकीअलिजितनीतिनहूँकि सदाँजय॥
गुमराई सदां की घटावैंगे हम॥ आज०॥

शैर—सिय जू को बना राघव शिर क्रीट धरैंगी।
जामा पोशाकअगणित भूषण भी सजैंगी॥
सिय जू को पिया रूप पिया प्यारी रूपमें।
बैठेगें आ सिंहासन अति ही अनूप में।,
श्रीसियजू के बाँये विठावैंगे हम॥ आज०॥

शैर—सब सौंज लेके आस पास सहचारीं बसैं ॥
वर चौंर छत्र इत्र पान दान कर लसैं ॥
भुकअलिबिहारिणी भिपीक दानि कोलिएँ।
यह श्याम गौर जोरी जुग जुग सदाँ जिएँ ॥
रस सिन्धू शृङ्गार भी सजावेंगे हम ॥ आज० ॥

दादरा होरी

(५५)

बलम बदनामी हो गई भारी ॥
प्रथम गवन मोय आज अचानक घाली रंगपिचकारी ॥ब०।
तिहिं पर गाल गुलाल मलत हो करकत आंख हमारी ॥ ब०
नवयौवन अंकुर पर टपकत वेसर केशर वारी ॥बल० ॥
शीत भरी कंपत दृग झंपत भीजी पचरंग सारी ॥ बल०॥
झीन रही तन लिपट गई अति दरशत अङ्ग हमारी ॥बल०॥
गुरुजनलाज जाऊँ घरकिहँ विध हायगजब करिडारी॥बल०।
ताहू पर अबहीं नहिं मानत गहि कुच कंचुकि फारी॥बल०।
गुन गर्वीले छैल छबीले बाँके अजब खिलारी ॥बल०॥
होरी मिस वरजोरी कीन्ही रही अबहिं सुकुमारी ॥बल०॥
यौबन पूर होय नहिं पायौ मदन बान मोय मारी ॥बल०॥

अलिविहारिणी अब नहि तजहौं रहिहों भरि अकवारी ॥
बलम बदनामी हो गई भारी ॥

होरी

(५६)

करजोरूँ बलम मोरी मानो बात,
कछू थोरी वयस अति मृदुल गात,
लाज भरी कंपत दृगझंपत राग रंग कछुनहिं सुहात॥कर०।
केशर रंग भिजाई सारी झीन रही सब अंग दिखात॥कर०॥
वेसर सों केशर की बूदैं अलक सजल कुचपर चुचात॥कर०।
भरो अबीर दृगनमधि करकतकरतसुपुनि पिचकारीघात।क०
जैहों भवनकौन विधबालम सिथिल अंगउर थरथरात॥क०।
लाज छोड़ि सबभाँति रमाई निठुर भयेसुकियाके नात॥कर०।
रहिहौं लिपट लाग गरतुम्हरे नहिं छोड़िहो छुड़ाये हात॥कर०।
होरी खेलौं पुनि रङ्गमेलौं सब झेलों कछु जो उतपात॥कर०।
अलिबिहारिणीसिय स्वामिनिकीकृपाअमितसुखदिवसरात॥
करजोरूँ बलम मोरी मानो बात।

होरी

(५७)

रँगीले सैयाँ बैयाँ छुओ जनि मोरी ॥

तुम रघुवंश किशोर साँवरे हम निमिवंश किशोरी ॥रँगीले॥
हौं तुम अजबअनोखे छलियाहम अबला अतिभोरी॥ रँगीले॥
नइहर से हौं अबहीं आई मुग्ध वयस अति थोरी॥ रँगीले॥
ताहू पर अंकुर यौवन लखि मसल लाज सब छोरी॥रँगीले॥
सिय जू की सेवा हित दीन्ही मात पिता यहिओरी॥रँगीले॥
ताहू पर पिय मानत नाहीं हा हा परौं पैयाँ तोरी ॥रँगीले॥
पुनि पुनि केशर अतर उरोजन मलत लाल रसबोरी॥रँगीले॥
पुनि गुलाल दोऊ गाल लगावत रसकी खेलत होरी॥ रँगीले॥
कहि हारी पिय मानत नाहींअस कहिसिय ढिंगदौरी॥रँगीले॥
अलिविहारिणी झपटि गही भरि लीनी लाल अकोरी ॥
रँगीले सैयाँ बैयाँ छुओ जनि मोरी ॥

होरी

(५८)

मोरी सारी न भिजावो बाँके पिचका चलाय ॥
यह सारी प्यारी सिय दीन्हो वरजोरी जो भिजैहौ तौ वढि जैहै बलाय ॥ मोरी सारी ॥ चोली पर जो चोट चलावो कहौंगी सुनैना लाडली ढिग जाय ॥ मोरी सारी ॥ सघन कुंज चलि रस सुख दीजै विहारिणी सिया के पिया हिय से लगाय ॥ मोरी सारी ॥

दादरा

(५९)

सुघर बलमा चोली ना भिजावो ॥
जीवन जोर मदन मदमाते बरजोरी ना चलावो ॥ सुघर ॥
अलकरि सारी भिजो दइहै कंचुकि दीठ लगावो ॥ सुघर ॥
जो चोली पर रंग पड़ैगो कुमकुम मार भगावो ॥ सुघर ॥
होश सम्हार फागपिय खेलौ सियस्वामिनिगुनगावो सुघर॥
जिनकी कृपा बिहारिणी के पिय रसिक कहे तुम जावो ॥
सुघर बलमा चोली न भिजावो ॥

रसिया

(६०)

छवि देखो सिया पिया प्यारे की ॥
रसिया रस केन्द्र दुलारे की ॥
मृगनैनी श्रीजनक दुलारीं कमल नैन दिलदारे की ॥छवि॥
गजगामिनी स्वामिनीसिय जू सिंघ ठवनमतवारे की॥छवि॥
गौर श्यामनव अङ्ग मनोहर भूषण वसनसम्हारे की ॥छवि॥
लाल गुलाल कपोलन सोहै गल बहियाँ बरधारे की ॥छवि॥
करनफिरावत कमलरसिकदोउ लखिमनमथमदगारेको॥छवि॥

राजत श्रीवैदेही बल्लभ कनक भवन सुख सारे की ।। छवि।
श्रीसर्वेश्वरो चारुशीला युत अलिगन मध्य बिहारे की ।।
छवि देखो सिया पिया प्यारे की ।।

होरी

(६१)

रसिकमणि प्यारे पिया पिचकारी न घालौ मेरी ओर।
मैं निमिवंस किशोर सहचरी मिथिलापुर घर मोर॥
हौं मैं सुकुमारी न थोर ।।
लघु वय लघु जोबन नव उन्नत हिय मृद सहत न जोर।
हरियल सारी भीज जाय जो उरहन दैहौं करोर ॥
लाज मैं डैहौं सब छोर ।।
कंचुकी कसी झीन कुच दरसत सरसत नव रस वोर।
चोली समनहिं तुलत राज तब सुन नृप अवध किशोर ॥
भूल जावै सब जोर ।।
जोबन जोर दिखाबहु जो पिय जाकहुँ सिय ढिग दौर।
चारुशीला श्री कृपावती पद निस दिन रहत निहोर ।।
अली चाहै दृग कोर ।।

———

श्रीरशिकाचार्य वन्दना

दोहा

(६२)

जय श्रीचारुशीला सुभग कामदलता उदार ॥
श्रीमत्कृपावती चरण भजों सदा सुखसार ॥ १ ॥
श्रीवैदेही वल्लभा चारुशीला जू कि प्यारि ।
श्रीकृपावतीजू सरसअलि सदाँकरों बलिहारि॥ २॥
श्रीकृपावती जू सदां तव, चरणशरण की आश ॥
कृपा कटाक्ष करीजिये, अली तिहारी खास॥३॥
कामदलता निकुंज बिच, अली अखंडविहार ।
चारुशीला सर्वेश्वरी, कृपावती सुखसार ॥ ४ ॥
हे श्रीसीते स्वामिनी, हे श्रीरघुकुल चंद ।
हे श्रीचारुशीला सुभग, कृपावती सुखकन्द ॥५॥
श्रीचारुशीला कामदलता, अग्रअली मन हर्ण ।
श्रीकृपावती जू के चरण, वन्दौंअलिप्रद शर्ण ॥६॥

पद

(६३)

सद गुरु स्वामि श्रीरामानन्द, श्रीरामानन्द श्रीअनन्तानन्द॥

स्वामि श्रीपयहारी भक्ति सुधाचन्द। रसिक मौलि मणि-अनन्य अग्र गन्य धन्य। स्वामी श्री अग्रदेव नाशन-भव फंद॥ श्रीस्वामी नाभा जू श्रीकृपा निवास दीनबन्धु। श्री करुणा सिन्धु मोद कन्द स्वामि कृपासिन्धु॥ श्रीरशिक अली श्रीदयासिन्धु। श्रीकामदलता हरण कलि मल दुख द्वन्द॥श्रीकृपावतीजू अलिविहारिणी को दीजे पद मकरन्द॥

छन्द

(६४)

जय जय श्रीअग्र स्वामि कृपा निवास॥
रस शृंगार करि प्रचार जयति भक्ति रास॥
रशिक मौलमणि अनन्य अग्र गन्य वास॥
चरण शरण अलि सदा चहूँ कृपा प्रकाश॥

पद

(६५)

जय श्री अग्रअली रस खान। रशिक सजीवन महल-विहारिणि सिय रघुनन्दन प्रान॥ लली लाल सुखसिन्धु-मीन मन रहत सदा सुख दान॥ अलि विहारिणी अरज-दारनी दीजै निज पद ध्यान॥

पद

[६६]

जय श्री अग्र स्वामी चरण ।
श्रीरसिक आचार्य सतगुरु पतित जन उद्धरण ॥
कृपाकरनअमित गुणयुत सकलकलिमल हरण॥
अगमभवसागरसुमधि जिहँकृपा नौकातरण॥
अधिप रैवासा सुगलिता ललित गौर स्ववरण ॥
युगलरशिक अनन्य जीवन अलिविहारिणिशरण॥

गजल

[६७]

बिना श्रीअग्रस्वामी के अनुग्रह श्याम नहिं पैहै ।
बिना श्रीअग्रस्वामी के रसिकता रीत नहिं लैहै ॥
कृपा श्रीअग्रस्वामी की सिया जू पास नित रैहै ।
दया श्रीअग्ररसनिध की नवल तन दिव्य मिलजैहै॥
सरस श्रीअग्रस्वामी नाम रसना सेजुजन केहै ।
महामृत पान करि अनुराग फिर संसार नहिं ऐहै ॥
नियम श्री अग्रवानी को सदा मुखचन्द्रसे गैहै ।
विहारिणि अग्रनागरि की कृपामय कोर निश्चैहै ॥

छन्द मालती

(६८)

सुखकरन सदा भय हरन भक्ति रस भरन अग्रस्वामि के चरन ॥ मृदुकमल वरन अति दीप्त धरन हर जन्म मरन जन तारन तरन ॥ मद मोह छरन सच शोक टरन सुख सिन्धु सुजन मन मीन परन ॥ मुदवेलि फरन अभिमान जरन नित अलिविहारिणि सदा सरन ॥

दोहा

(६९)

वीतत तलफत निस दिवस, बहत दृगन जलधारि।
कृपा विहारिणी पर करहु, अग्रअली की प्यारि ॥ १ ॥
अग्रलाडली करहु अब, पद पंकज की चेरि।
अलि विहारिणी शीघ्र, अब राखौं अपनी नेरि। २ ॥
अलि विहारिणि को सदा, अग्र स्वामि पद आस।
अग्रस्वामि पद कृपा से, कनक भवन नितवास ॥ ३॥
श्रीकनकभवनकेबासको, जो इच्छा हिय होय।
अलिविहारिणी तो सदा, अग्र स्वामि पद जोय ॥ ४ ॥
श्रीरसराज शिरोमणी, अग्रस्वामि गुरु जान।
नाम ध्यान सेवा सुनित, कीजे अग्र प्रधान ॥ ५ ॥

गजल

(७०)

मंगल करन कलिमल हरन भज चरन कृपा निवास के।
पंकज वरन अशरन शरन तारन तरन निज दास के॥
शोभा धरन आनँद भरन मेटन सकल भव त्रास के।
विभचार मत दूषन हरन प्रद युगल रहस उपाय के॥
श्रीयुगल रसिक अनन्यता श्री सम्प्रदा रस रास के।
श्रीजानकी वल्लभ युगल नवकेलि रूप प्रकास के॥
श्रीरंग महल विहार नित श्री प्रसादा खास के।
चाहे विहारिणि अलि सदा दृगकोर कृपा विलास के॥

पद

(७१)

जय श्री कामदलता उदार॥
श्रीजनक लली जू की संग विलासिनि रघुनन्दन उरहार॥
गौरांगी सौभाग्य विभूषण विविध शृंगार सुधार॥
अलि विहारिणी चरन कमल की राखत आस अवार॥

वन्दना

(७२)

श्रीवैदेही प्राण वल्लभ, जिनके शरण सकल सुख-

सुल्लभ, जय श्री जानकी वल्लभ नाम ॥ जय श्रीकनक भवन रस धाम॥ जय श्रीमती चारुशीला जू॥ श्रीसिय पिय सुख मिलन वसीला जू, जय श्री कृपावती ॥ सिय प्यारी कीजे कृपा कटाक्ष सुखारी ॥ अग्रस्वामि श्रीकृपा निवास॥ श्री करुणासिन्धु सकल गुण रास॥ श्रीमद रशिक अलीआचार्य ॥ श्रीकामदलतिका सुकमार्य्य ॥श्रीमद रशिकाचार्य महान ॥ श्रीयुगल स्वामि सतगुरु सुखदान ॥

दोहा

(७३)

श्रीसिय पिय की लाडली, चारुशीला सुखदान ।
श्रीमत्स्वामिनि कृपावति, कृपा करो रस खान ॥
जय श्रीअग्रअली सुभग, कृपानिवासी पाय ।
वन्द विहारिणि अली नित, हिय विच सदा वसाय ॥

श्री श्री सतगुर वन्दना पद

(७४)

नमौ श्री सतगुरु रसिक सुजान ॥
युगल मंत्र उपदेशाचारज युगल अनन्य महान ॥
रशिक उदार भावना कारक तारक भवनिधि वान ॥
श्रीयुगलकिशोर किशोरी जू के रहस माधुरी पान ॥

छन छन नव नव सुख उपजावन कामादिक भटभान।।
श्रीकामदलता चारुशीला जू अग्र अली रस खान ।।
जय श्रीकृपावती पद पंकज नित विहारिणी गान ।।

गजल

(७५)

श्रीमती कृपावती जू के वन्दौं चरण कमल ।।
शोभा अपार सरसे सुकुमारता अमल ।।
सिर अर्ध चन्द्र विन्दु चन्द्रिका सुधारन ।।
चितवत कृपाभरी सरस स्वरूप सुन्दरंम ।।
नखशिख वसन विभूषन करकंज शोभनं ।।
मुसकान मंद मंद बैन सुधा बरसनं ।।
श्रीचारुशीला संग सदा राजतीं महल ।।
पीवत अली विहारिणी अखंड सुख नवल ।।

पद विहाग

(७६)

जय श्रीकृपावती अभिराम ।।
रसाचार्य रसिकन की जीवन रंग महल प्रिय धाम ।।
सिय वल्लभ शृंगार मधुर रस पीवत आठों याम ।।

सब विध अपनो करि अपनाई अति लघु रहीं निकाम ॥
कृपाप्रसाद पीकदानी की अलिविहारिणी नाम ॥

कवित

(७७)

कृपावारी जनकदुलारी प्राण प्यारी श्रीचारुशीला सर्वेश्वरी संग में विहारतीं ॥ नवलसु अंग में विभूषन वसन चारु अर्धचन्द्र विन्दु सिर चन्द्रिका सुधारतीं ॥ कनक भवन मध्य रतन सिंहासन पै वैदेही वल्लभ मुख पान को सम्हारतीं ॥ रसाचार्य मेरी श्रीकृपावती सरस नाम ताके अलि शरण सदा जयति जय उचारतीं ॥

श्रीकृपावती पादपद्माभ्यांनमः

छन्द मनभावतौ

(७८)

जय श्रीकृपावती जू स्वामिन राखहु शरण सदां अपना ॥
तुमहिं छाँड़ि श्रीकृपावती जू सब सुख जस सपना ॥
पूजन भजन सदाँ आपहि का ध्यान हिये बसना ॥
रैंन दिवस नित अलिविहारिणी कृपावती जपना ॥

रेखता

(७९)

जग से हमहिं बचाय लीजे कृपावती जू ॥

निज पाद पद्म प्रीति दीजे कृपावती जू ॥
संसार मोह कोह काम घेर लियो है ॥
इहि दुख से बचा लीजे प्रान कृपावती जू ॥
हा हा करूँ पुकारूँ पायन परूँ सदाँ ॥
मोरी हृदय विदीर्ण भयो कृपावती जू ॥
देखूँ अनेक सुन्दरि सुन्दर सुखिद सगे ॥
तब माधुरी निहार जी जे कृपावती जू ॥
कासों कहूँ कहाँ चलूँ उपाय क्या करूँ ॥
करुणा विहारिणी पै कीजे कृपावती जू ॥

अस्तुति

(८०)

श्रीमति कृपावती पद पंकज ध्यावहु सदा शरण सुखदायक ॥
अरुण कमलमखमल दाडिम दुतिइनहूँ ते अति कोमलभायक ॥
कनकभवन आनन्दप्रदायक श्रीसियपियपद रतिउपजायक ॥
रंग महल निकुंज सर्वेश्वरि चारुशिला आचार्य मिलायम ॥
सेवनयुगलचरण नासतभव जन्म मरणसुखनित्य अमायक ॥
जयश्रीकृपावतीरसस्वामिन अलीविहारिणीनितयशगायक ॥

रेखता

(८१)

हे श्री कृपावंती जू अलि पर कृपा करौ ॥
मैं हूँ शरण तिहारी चितचूक ना धरौ ॥
सब ठौर से निराश हुई दिल दिमाग से ॥
निश दिन विरह दवारिमें तन जात है जरौ ॥
अब तो नहीं सहाइये संसार की फिकर ॥
दृढ़ प्रीत पाद पद्म को दै मोद उर भरौ ॥
तेरी कृपा कटाक्ष से श्रीचारुशीला जू ॥
अपनाय के निकुँज पास दैनें है परौ ॥
सर्वेश्वरी कृपा से निश्चय रशिक युगल ॥
वैदेही प्राण बल्लभ भेटैं सुरस ढरौ ॥
ऐसी कृपा स्वरूपणी मेरे हृदय बसो ॥
अनुदिन विहारिणी को चरणों से ना टरौ ॥

गजल

[८२]

हमारी श्रीमती स्वामिन कृपावति जू कृपा कारिन ॥
नवल वैदेहि वल्लभ को प्रिया अति रूप गुण धारिन ॥

सजे नखशिख वसन भूषन, चन्द्रिका ज्योति निर्दूषणा ।
अमलसौगंध मुख पूषण, अमित रति रूप मद गारिन ॥
ललित सिन्दूर अर्धेन्द, भृकुटि बर मध्य छवि विन्दू ।
सकल उपमा सुसरमिन्दु मधुर मुसक्यान मन हारिन ॥
वसें नित श्रीकनक भवनं मत्त गज हँस हरिगवनं ।
विहारिन दुख सकल दवनं, सदा आचार्य शृंगरनं ॥

छन्द छबीलौ

[८३]

छबिछाई श्रीकृपावती प्यारी की ॥
श्रीवैदेही प्राण बल्लभा श्रीनिमवंश दुलारी की ॥
श्रीनृपशत्रुजीतजू की नन्दनि श्रीचारुशीला सुखकारी की ॥
श्रीसाकेत सिया जू संग नित विहरत हिय मुदभारी की ॥
श्रीकनक भवननिकुञ्ज परिकर मधि दुति दामिन सुकमारी ॥
अलिविहारिणीकी निजस्वामिन सियपिय रसमतवारीकी ॥

अष्टपदी

(८४)

कनक भवन कुञ्ज श्रीमती कृपावती विहार । नित्य नवल ललित केलि कलित रूप रस शृंगार ॥ श्रीमद्वैदेही

प्राण वल्लभ प्यारी जू मान श्रीचारुशीला मोद दान लाजित रति अमित मार ॥ दीन्है शिर अर्ध इन्दु श्रीसुरेखमध्य विन्द विन्दु रेख श्री अमंद जुगल रेख लखि अनंद निरख सुजन सुख अपार ॥ चन्द्रिका अनूप भाल, झुकी ओर ललीलाल; हृदय माल दृग विशाल, श्याम अरुन चित विचार ॥ नख शिख शृंगार रूप, निरखत हिय सुख अनूप प्रगटी नगर जनक भूप अमित गुण कृपा उदार ॥ श्री कृपावतीजू नाम, रशिक लोचनाभिराम, गौरि श्याम छबि ललाम, सिय पिय सँग अलिनिहार ॥

रेखता

(८५)

कीजे कृपा कटाच्छ जयति जय कृपावती।
मैं हूँ शरण तिहारे जय जयति श्रीमती ॥
जप जोग जाग ज्ञान ध्यान कर्म वासना।
वैराग भक्ति भाव धर्म एक ना रती ॥
अति दीन खीन पाप पीन अघ अधमपती।
एक आप छाड़ि मेरी दूसर नहीं गती ॥
सुकमार रूप दृग विशाल गौर वर्न प्रभा।
छवि देखि लाजती हैं बहुरति रमासती ॥

श्रीकनक भवन मध्य अष्ट कुंज केलि में।
श्रीचारुशीला सिय पिय सँगनित विहारती॥
अब सही नहीं जात भवविथा अमित घनी।
लघुजानि अलि विहारिणी न क्यों दुलारती॥
चम्पक वरनी गति गज गवनी कृपावती।।
रति मद दवनी जन अघ समनी कृपावती॥
द्वादस विपिन मध्य नित विहरो कृपावती।
सिय पिय सँग सदा नहिं विछरो कृपावती॥
श्रीचारुशीला प्राणन की प्यारी कृपावती।
रसाचार्य सब भाँति हमारी कृपावती॥
जुत्थेश्वरी अमित गुण खानी कृपावती।
वसी करण जाके सिय रानी कृपावती॥
जानकी बल्लभ हियविच वासिन कृपावती।
मृदु मुसकान तापत्रय नासन कृपावती॥
मिथलावारी राज दुलारी कृपावती।
कमला तोर खेल खिलवारी कृपावती॥
नित्य किशोरी वय रस वोरी कृपावती।
पिय चितचोरी स्वामिन मोरी कृपावती॥
भव की त्रास सही नहिं जाती कृपावती।

अलि विहारणी हा हा खाती कृपावती ॥
कृपा करहु अलि विहारणी पर कृपावती ।

धुनि कहरवा

(८६)

कब मिलिहौ कृपावती प्यारी हमैं ॥
तुम बिन हे श्रीकृपावती जू जगत लगै सब खारी हमैं ॥
दीजे दरश कृपा अति कीजे का जिय आन बिसारी हमैं ॥
काम क्रोध मद मोह लोभ ने तुम बिन सब मिलजारी हमैं ॥
जो तुमको निठुराई अधिक प्रिय प्रथमहिं क्यों स्वीकारी हमैं ॥
हे श्रीकृपावती इक तुम विन अपर सकै नहिं तारी हमैं ॥
शरणगत रक्षक तुम सब विध यही भरोसा भारी हमैं ॥
भुक्ति युक्ति सुख एक न चाहौं नहिं यमपुर भयकारी हमैं ॥
चाहों कृपादृष्टि निज ढिंग ते करहु न छिनभर न्यारीहमैं ॥
अमित जन्म लगि आस विहारणी खरी कृपा सम्हारी हमैं ॥

पद

(८७)

वन्दों श्रीकृपावती चरण ॥ प्रात बिकसित अरुण आभा अरुण कैसे वरण ॥ रंग महल सुहेममहि खचिमंद

गति छवि धरण ॥ सेवतहि मिलजात जनको हुक्म होत जन्मन मरण ॥ नवल नित आनन्द दायक सकल भव रुज जरण ॥ मिलत इनकी कृपा ते वैदेही बल्लभ शरण ॥ एक आस विहारणी हिय युगल पद मन हरण ॥

रेखता

(८८)

जयति जय आचार्य स्वामिनी कृपावती । मंद हसन वित्त चसन जयति श्रीमती ॥ नवल केलि रही हेल प्रभा विलसती । मोद भरण सोक हरण राजतीरती कनकभवन हँस गवन रूप सरसती । जयति चारुशीला संग रैन दिन रती ॥ अर्धचन्द्र विन्दु चन्द्रिकासुसोभती । अलीविहारणी के एक शरण ही गती ॥

पद

(८९)

स्वामिनश्रीमती कृपावती चरणवा । नित ध्यावो रसिक मन हरणवा ॥ प्यारी मैं हूँ बलिहार सारो तन मन धनवार देखो करुण की कोर मेरी है तू शिर मौर माधुर्य्य सिन्धु मीन मन परनवा ॥

(९०)

जाकी दया से भिटान चारुशीला सुख खानि सर्वेश्वरी सयानी जग जाल शोकभानी वैदेही प्रान बल्लभ जू ढरनवा ॥ शिर सोहे अर्ध चन्द्र विन्दु चन्द्रिका अमंद आचार्य अलि अनंद मोपर हूजिये पसंदआनन्ददा विहारणी शरणवा॥

पद

(९१)

भजरे मन श्रीसतगुरु स्वामी ॥ रंग महल श्रीचारुशीला संग श्रीमती कृपावती नामी ॥ श्री कृपावती पद पद्म आस करि त्याग और सब मतवामी ॥ जाकी कृपा कटाक्ष अंकभरि भेंटत सिय बल्लभ धामी ॥ जापै कृपा होय सो समझे का जाने लघु मतकामी ॥ बिन श्रीसाचार्य पद सुमरें रशिक भावसुख नहिं जामी॥ श्रीमत्स्वामिन कृपावती जू अलि विहारणी अनुगामी ॥

गजल

(९२)

महा सरकार सतगुरु के युगल चरणों में जाहिर हो।
अमित शरणागती मेरी शीश रख दया सागर हो ॥

तुम्हीं भव तारने वाले तुम्ही सब आपदा हर हो।
तरन तारण हरण दुख के अमित दूषण छमा कर हो॥
युगल वर मंत्र को दीन्है शरण सियराम के कीन्हे।
बान धनु तप्तकर चिन्है रशिक पद्धति उजागर हो॥
युगल कण्ठी मधुर गल में ऊर्ध युग रेख सिर थल में।
अर्ध शशि विन्दु श्रीभल में चन्द्रका मुंद्रिका भर हो॥
युगल सम्बन्ध शृंगारी सरस सुख भावना भारी।
धन्य आचार्य सुखकारी पतित पावन रशिक वर हो॥
कृपा की कोर को कीजे शरण वर आपने लीजे।
कृपा वरदान यह दीजे युगलपद आस नहिं टर हो॥

कवित

(९३)

कीजिये कृपा की कोर हेरिये हमारी ओर सतगुरु कृपाल हे श्रीयुगलशरणय स्वामी॥ रशिक अनन्य अग्रगन्य रंग मन्दिर में रसाचार्य रूप श्रीमती कृपावती जू नामी॥ नित्य है बिहार चारुशीला स्वामिनी के संग सियलाल नवल सुकेलि अष्टयामी॥ दिव्य गुणखानि बान अधम उधारने की सदा है विहारणी अली पदाब्ज अनुगामी॥

छन्द

(९४)

सकल शुभ गुण खानि सुख प्रद सदा मंगल करण ॥
जिहँ युगल पदरज कृपा से मिले सिय मन हरण ॥
पतित पावन रस बढ़ावन कृपा मय अवतरण ॥
गौर दुति मृदु अङ्ग शोभा जात किहँ पै वरण ॥
शीश वडगल ऊर्थ पुंड सुरेख श्रीछवि अरुण ॥
ललित रस शृंगार मूरत कृपजल निध भरण ॥
युगल रसिक अनन्य षट गुण पूर्ण दृढ़ व्रत धरण ॥
महल नाम श्रीकृपावतो जू रसिक मनि चित छरण ॥
सदा आस विहारणी अली कृपासतगुरु ढरण ॥

शैर

(९५)

श्रीकृपावती जू सदा हम पर कृपा करती रहैं।
श्रीमती श्रीचारुशीला हृदय सुख भरती रहैं ॥
श्रीयुगल वैदेही वल्लभ लाडली।लालन सदा।
श्रीकनक भवन निकुञ्ज में केलि रस ढरती रहैं ॥
श्रीमती कामदलता श्रीअग्रअली सुहावनी।

श्रीप्रसादा आदि बहु सखि रूप रति झरती रहैं ॥
श्रीकिशोरी जू हमारी स्वामिनी सिरताज हैं ।
अलि विहारिणिशीश पर निजकञ्ज कर धरती रहैं॥

नित्य स्मर्ण

गजल

(६६)

जय जयति श्रीमतीजू वन्दौं कृपावतीजू ॥
नितरंग अपन कीजू हो वासनी सुखीजू ।
वेदेही पाशनो जू सेवत अनेकती जू ॥
प्रीतमप्रिया पियारी,भूषण वसन सुधारी॥
जय श्रीकृपावती जू यह भजन हमारे ।
जय श्रीकृपावती जू यह यजन हमारे ॥
जय श्रीकृपावती जू यह तंत्र हमारे ।
जय श्रीकृपावती जू यह मंत्र हमारे ॥
जय श्रीकृपावती जू यह गान हमारे ।
जय श्रीकृपावती जू यह ध्यान हमारे ॥
जय श्रीकृपावती जू यह नाम हमारे ।
जय श्रीकृपावती जू यह धाम हमारे ॥

जय श्रीकृपावती जू यह एक हमारे।
जय श्रीकृपावती जू यह टेक हमारे॥
जय श्रीकृपावती जू यह टेम हमारे।
जय श्रीकृपावती जू यह नेम हमारे॥
जय श्रीकृपावती जू यह जोग हमारे।
जय श्रीकृपावती जू यह भोग हमारे॥
जय श्रीकृपावती जू यह चाह हमारे।
जय श्रीकृपावती जू यह उत्साह हमारे॥
जय श्रीकृपावती जू यह धर्म हमारे।
जय श्रीकृपावती जू यह कर्म हमारे॥
जय श्रीकृपावती जू यह सेव हमारे।
जय श्रीकृपावती जू यह देव हमारे॥
जय श्रीकृपावती जू यह मुक्ति हमारे।
जय श्रीकृपावती जू यह भुक्ति हमारे॥
जय श्रीकृपावती जू आचार्य हमारे।
जय श्रीकृपावती जू यह कार्य हमारे॥
जय श्रीकृपावती जू गुरु वदन हमारे।
जय श्रीकृपावती जू सुख सदन हमारे॥
जय श्रीकृपावती जू यह लगन हमारे।

जय श्रीकृपावती जू मत मगन हमारे ॥
जय श्रीकृपावती जू यह इष्ट हमारे ।
जय श्रीकृपावती जू कृपादृष्टि हमारे ॥
जय श्रीकृपावती जू सत संग हमारे ।
जय श्रीकृपावती जू यहि रंग हमारे ।
जय श्रीकृपावती जू सिय बल्लभ प्यारी ।
जय श्रीकृपावती जू स्वामिनी हमारी ॥
जय श्रीकृपावती जू निकुंज वासनी ।
जय श्रीकृपावती जू भव रोग नाशनी ॥
जय श्रीकृपावती कनक भवन रस ढरन ।
जय श्रीकृपावती जू सियलालमनहरन ॥
जय श्रीकृपावती जू श्रीचारुशीला संग ।
जय श्रीकृपावती जू रस रासनित उमंग ॥
जय श्रीकृपावती जू वैदेही लाडली ।
जय श्रीकृपावती जू तन नील साड़ली ॥
जय श्रीकृपावती जू अर्ध चन्द्रधारिणी ।
जय श्रीकृपावती जू मिथिलाविहारिणी ॥
जय श्रीकृपावतीजू रसिकन कीस्वामिनी ।
जय श्रीकृपावती जू तन गौर दामिनी ॥
जय श्रीकृपावती जू सिय रशिक मोहनी ।

जय श्रीकृपावती जू शृंगार सोहनी ॥
जय श्रीकृपावती जू वर हंस गामिनी ।
जय श्रीकृपावती जू रशिका भिरामनी ॥
जय श्रीकृपावती जू बहुरति लजावनी ।
जय श्रीकृपावती जू साकेत भावनी ॥

धुनि कजली

[९७]

स्वामिन चारुशीलाजू के संग विहरत कृपावती सुख रासी ॥
नव रूप सरस दरसात, मुखमंद मंद मुसकात; अद्भुत,
छवि कह नहि जात, जाकी छवि लखि रति भई दासी ॥
श्रीकनक भवन मधिकुंज, जहँ रमत युगल सुख पुंज,
सौरभ परैं भ्रमर गुंजार, षट ऋतु नवल विहार प्रकासी ॥
शिर अर्ध चन्द्र सरसौरी, वर विन्दु सिन्दूर लसौरी,
अलि शरणविहारिण तोरी, कीजे कृपया सैन विकासी ॥

धुनि कजली

(९८)

जाकी कृपा भरी सुखपुञ्ज ताकी शरण सदा भव हरणं ॥ श्रीरसाचार्य अमिराक, श्रीमत कृपावती जू नाम

छवि लखि लाजै रति काम, सियपिय संग सदा मुद भरणां ॥
श्रीकनक भवन नवकुञ्ज, पुष्पन पर भ्रमरा गुंज, गायक गुण सकल हरूंज, तामधि नित्य केलि छवि धरणं ॥ श्री चारुशीला सुकमारी, सर्वेश्वरी परिकर झारि, छबि पर बहु रति मदगारि, छिन छिन नव नव सुख अति करणं ॥ ताही की प्राणन अति प्यारी, श्रीकृपावती सुखकारि, मैं रहूँ सदा वलिहारि, पद पंकज ढिंग से नहिं टरणं ॥ मम ओर हेर हिय नहि आन आस, अब दीजे महल निवास, तेरी अलि विहारिणा खास, कीजे जनकदुलारी शरणं ॥

रेखता

(६६)

हे श्रीकृपावती जू प्यारी सिया पिया ॥
कीजे कृपा सुखारी तलफे मेरी जिया ॥
भवजाल से उवारौ चरणों की करि दया ॥
दृढ़ता अनन्य टेक की धारण करो हिया ॥
तेरी कृपा कटाक्ष से श्रीचारुशीला जू ॥
होकर वसीला श्रीसियावल्लभ मिला दिया ॥
देखों अनूप रूप की नैनन से माधुरी ॥
वैनन से अलिविहारणी नित नाम रटलिया ॥

दोहा

(१००)

कीजे कृपा कटाच्छ बर ।। श्रीमत्कृपावती ॥ राखो सदा हजूर मोय ।। छवि लखि लजत रती ॥ १ ॥ हे श्रीकृपावती प्रिये करि करुण की कोर ।। अलिविहारिणी आप तज नहीं और कहुँ ठौर ॥ २ ॥ अमित जन्म भटकत गये भव दुख सहे अनेक ।। हे श्रीकृपावतीजू अब दीजे मोय विवेक ॥३॥ नहि अब भव दुख जात सहि लगी मिलन की आस ॥हे हे श्रीस्वामिन कृपावती दीजे जुगल विलास ॥ ४ ॥ श्री युगल स्वामिनी स्वामि हिंग श्रीचारुशीला जू के संग। आप रूप कब देखिहों छवि लखि लजत अनंग ॥ ५ ॥ पतितपावनी नाम तुव मैं पतितन शिर मौर ।। श्रीकृपावती जू सुगुरु मम करहु कृपा की कोर ॥ ६ ॥ आप कृपा से करत हैं कृपा लाडली लाल ॥ आप कृपा उपनाम है श्री चारुशीला नबबाल ।। ७ ॥ श्रीचारुशीला प्यारी सदां लाल लाडली जान । रसिकन की हौ स्वामिनी श्रीकृपावती सुखखान ।। ८ ।। कृपा विना नहिं मिलहिगे, श्रीवैदेहीलाल। श्रीकृपावती जू करि कृपा, अलिको करो निहाल॥९॥

सोरठा

(१०१)

श्रीवैदेही प्राण, बल्लभ जू की वल्लभा ॥
श्रीकृपावती सुखदान, अलिविहारणी स्वामिनी ॥
अलिविहारणी केर, आचारज सतगुरु सुभग ॥
नहिं कीजे अब देर, श्रीकृपावतीजू करि कृपा ॥
हे श्रीकृपावती प्रिये, स्वामिनि सबविधि मोर ॥
कृपादृष्टि करिहेरिये, अलि विहारणी तोर ॥

श्री सर्वेश्वरी श्रीचारु शीलाजू की प्रर्थना

छन्द

(१०२)

वन्दौं श्रीचारुशीला चरणं ।'अतिकोमल कंजवरण अरुणं॥
मानहु रशिक प्राणके जीवन हिय विच ध्यान सदा धरणं ॥
सर्वेश्वरी पद कमल अनूपम अमलअमित गुण वसकरणं ॥
पाद पद्म धोवत पीवत ही विभचारी मत रुज हरणं ॥
अधमोद्धारण प्रीत प्रचारण पतित जनन तारण तरणं ॥
सुभग स्वामिनी युगलचरण के नित नव अली सदासरणं ॥

पददेसमें

(१०३)

भज मन चारुशीला चरण ।। अरुण पंकज से प्रकासित अमित दूषण हरण ।। रसिक जन उर शुभग सर विच सदा प्रफुलित करण ।। जानकी बल्लभ प्रभाकर एक रस नित नहि टरण ।। चरण कमल पराग स्वादित रशिक मन अलिकरण ।। पाद पद्म पराग सेवत होत तारण तरण ।। विन चरण अम्बुज कृपा से युगल सुख नहिं भरण ।। स्वामिनी सर्वेश्वरी पद प्रीत टेक सुधरण ।। त्याग के सर्वेश्वरी पद यह मूढ़ चाहत मरण ।। श्रीचारुशीला अम्बुज कृपा से जात जियकी जरण ।। चारुशीला पद वसीला 'श्री, कनक भवन सुढरण ।। जाके स्वामिनी चरण गति सोरसो ढरण ।। नित्य नवल विहारणी अली स्वामिनी पद शरण ।

अष्टपदी

[१०४]

जयति चारुशीला चरण शरण मोद भरण पुंज ।।अरुन कमलचरण रज परागरसिक भ्रमरगुंज ।। सुजन हृदय वास करण, सकल ताप शोक हरण, जन्म मरण नसन रूप नवल धारि रहि निकुञ्ज ।। जानकी रमन विहार, मिलत कृपा से

उदार, विना चारुशीला कृपा रशिक रीत नहि मिलंजु श्रीसर्वेश्वरि हमारि, स्वामिनी वलिहारि,जात अलिहारिणी तिहारि कोर कृपा की करंजु ॥

गजल

(१०५)

चाहिये कृपा कटाक्ष सदा चारुशीला की॥ नहि आन आस मेरे यह टेक इस वसीला की ॥ जप जोग जाज्ञ ज्ञान ध्यान कर्म वासना, छूटी अनूप रूप की छवि मन लखील की ॥ चाहे प्रसन्न रहै कोई या नहीं रहै,हमको नहीं किसी से परवाह मील की ॥ दिन रैन चाहती है तन मन विहारणी, सर्वेश्वरी पदाब्ज प्रीत उर रहील को ॥

पद विहागमें

(१०६)

करु मन चारुशीला पद ध्यान ॥ अति मन हरण-शरण सुखदायक जावक युत छवि खान ॥ अरुण कमल से कोमल पग तल नख दुति मोहत भान ॥ भूषण मधुर कनक मणि सोभित रसिकन मनसुखदान ॥ जब इनके शरणागत होवे तब सिय जू पहिचान ॥ टहल महल की सब

विधि पावे वाजैं अभय निशान ॥ अलिविहारणी जीवन धन मम प्राणनहू के प्रान ॥

पद

(१०७)

करुमन चारुशीला पद आस ॥ पाद पद्म की आस करत ही छूटत जग की त्रास ॥ श्रीचारुशीला आचारज सबको सर्वेश्वरी प्रकास ॥ सिया पिया जू की प्राण वल्लभा रंग महल नित बास ॥ अभय प्रदान देत रशिकन को आनन्द सिन्धु विलास ॥ अलिविहारणी की प्रिय स्वामिन आचारज सुख रास ॥

भैरवी

(१०८)

अब मोहि श्रीचारुशीला जू की आसा ॥ प्रिय प्यारी जू की प्राण वल्लभा रशिक जनन सुख रासा ॥ विभचारी मत फन्द नशावन रशिक अनन्य सुपासा ॥ युगल परिकरेश्वरी कृपा से रंग महल नितवासा ॥ अलिविहारणा की आचारज दीन्हों युगल विलासा ॥

———

कवित

(१०९)

राजें श्रीसिय जू के संग में बिहार नित्य नख शिख शृंगार रंग मन्दिर निवासनी ।। मिथिलाधिराज सत्रुजीत की दुलारी नव वैदेही वल्लभ लडैतीलाल पासनी ।।आचा-रज सबकी सुधारे कर मोरछल की कृपा दया आर्दव अनन्त गुण विलासनी ।। स्वामिनी अली की प्रिथ जनकदुलारी की चारुशीला सर्वेश्वरी नाम सुख रासनी ।।

ठुमरी

(११०)

कीजिये कृपाकी कोर चारुशीला स्वामिनी।। खीझिये न दोष देखि आपनी विरद पेखि दीजिये युगल पद प्रीत सुख धामनी ।। रस दीजिये शरण अलिजान अनुगामनी ।। मीजिये कलुष ताप, जानो नहि ध्यान जाप आपही की आस और आस नहि जामिनी ।। जी जी ऐ हमारी बड़ी भीजिये करुण रस लीजिये शरण अलीजान अनुगामनी ।।

गजल

(१११)

सुनो श्रीचारुशीला जू वसीला आपही मेरी ।

तड़पते रैन दिन बीते नहीं अब कीजिये देरी॥
तिहारी आसमो दिल में लगी हरदम मिलन केरी।
कृपा कोर दीजिये दर्शन रहूँ अनुदिन चरण नेरी॥
तिहारे बिन जगत सारा निहारा सुख नहीं हेरी।
अमित अपराध को छमके हमारे शीश कर फेरी॥
धड़कता है जिगर मेरा विरह के ताप उमगेरी।
युगल वंदेहि वल्लभ जू मिलावो हौं शरण तेरी॥
तुम्हीं आचार्य कुञ्जन में तुम्हीं स्वामिन सदा सेरी।
तुहीं वहिनी बड़ी मेरी शुभग श्रीचारुशीलेरी॥
भुलानी जात थी भव में कृपावति जू लई टेरी।
कृपाकरि मोय वर दीन्हों करी पद कंज की चेरी॥
कही पुनि स्वामिनी तेरी महल सब भाँति रख देरी।
अली श्रीचारुशीला जू चतुर्थावर्ण राजैं री॥
वहीं से मो विहारिणा की हमेशा याद राखेरी।
खुशी तब दिल रहे जिसमें करो सो जोई भावैरी॥

गजल

(११२)

शुभग श्रीचारुशीला जू हमारी स्वामिनी प्यारी॥
नगर मिथलाधिपत भारी शत्रुजित राज की बारी।

रसिक ललिलाल मुदकारी सजे तन नील रंग सारी ॥
प्रियाप्रीतम स्ववसकरनी अधिक छवि को कहेवरनी।
कोटि रति काम मदगरनी कृपा की कोर सुखकारी ॥
महत्त आचार्य हैं सबकी शरण प्रद जानकी वरकी।
रत्तिका अलिबिहारिणा की युगल पद पद्म बलिहारी॥

रेखता

(११३)

जय स्वामिनी हमारी, श्रीचारुशीला प्यारी ॥
मिथिलेश वन्धु भारी, श्री शत्रुजीत वारी।
शशिकान्त की दुलारीं, मैं हूँ शरण तिहारी ॥
श्रीरंग अयन वासा, नवकेलि मंद हासा।
सर्वेश्वरी प्रकासा, सियलाल मोदकारी ॥
अतिशय कृपा करीजे, पद कंज प्रीत दीजे।
अपराध माफ कीजे, लीजे हमें उबारी ॥
जो आप के शरण में, सोहै अमित भुवन में।
सौभाग्य सिन्धु जनमें, कीजे अली सुखारी ॥

कजली

[११४]

श्रीचारुशीला पद पद्म आस सुख रास हिये मेरे।।

जाकी कृपा कोरते सिय पिय तजत नहीं नेरे ॥
छन छन नव नव सुख उपजावन भानन भट भेरे ॥
कनक महल प्रद रूप सिया पिया उनमत ह्वै हेरे ॥

कजली

(११५)

श्रीचारुशीला पद पद्म आस सब आस त्याग कीजे।
कर्म ज्ञान वैराग्य मुक्ति सब भूरि दूर कीजे ॥
केवल कृपा कोर आश्रयनिः सोच हिये दीजे।
पुनि सिय प्रीतम रूप सुधानिध चीख चीख पीजे ॥

दोहा

(११६)

यह युग पद विरचे सुखद चित्रकूट मधिवास।
श्रीसिया विहारणीशरनजी रूपलता गुण रास ॥१॥
रसिक अनन्य शिरोमणि रस शृंगार स्वरूप।
अलिविहारणी पद कमल बन्दों प्रेम अनूप ॥२॥

पद

(११७)

अति मन हरण शरण सुखदायक जावक युत छविखान।

अरुण कमल से कोमल शत गुरु पग तल परम सुहान ॥
भूषण कनक मणिन मय शोभित रसिक जनन सुखदान ॥
जब इनके शरणागत होवे तब सिय पिय पहिचान ॥
सब बिध अलिविहारणी के प्रिय प्रानन हू के प्रान ॥

पद

(११८)

पाद पद्म की आस करते छूटत भव की फाँस ॥
श्रीचारुशीला आचारज सबकी सर्वेश्वरी प्रकाश ।
सिय पियजू की प्राण बल्लभा रंग महल नितबास ॥
अभय प्रदान देत रसिकन को आनँद सिन्धु विलास ।
श्रीअलिविहारणीकीसियस्वामिनआचारजसुखरास॥

गजल

(११९)

देखो देखो सिय पिय संग राजत चारुशिला सुकुमारी शिर अर्द्धचन्द्र सिन्दूर वर विन्दु छबी भरपूर लखि रति मान भयो अलि दूर सारी नील रंग जरतारी ॥ झुक रही चन्द्रका नीकी, मुसक्यान मंद सुखजी की, हैं प्राण प्रिया सिय पिय की, मिथिला शत्रुजीत नृप वारी ॥ दृग कृपाकोर रस भीनी,

कर नील पद्म वर लीनी, सर्वेश्वरी अलि सुख दीनी, बिहरत कनक भवन सुखकारी ॥

दोहा

(१२०)

हे श्रीचारुशीला शुभग सिय पिय के नित संग।
दृग भरि कव अवलोकि हों बाढ़े अधिक उमंग ॥ १ ॥
हे सर्वेश्वरी स्वामिनी श्रीचारुशीला आचार्य।
अलि विहारणी कीसुरत भूलौं नहि चातुर्य्य ॥ २ ॥
मैं सब विध तुम्हरी अहों तुम सब विध हौ मोर।
रंग महल सुख दीजिये दम्पति श्यामल गौर ॥ ३ ॥

पदवंदनाके

[१२१]

शरण हूँ तोरी अग्र किशोर॥ श्रीचारुशीला श्री कृपावती जू सब विध स्वामिन मोरी ॥ कीजे कृपा हमेशा अतिशय कृपावती, लीजे उबार भव से मेरे तुही गती, मैं हूँ अली तिहारी नृपलाल ममपती, देहूँ मैं बार तन मन सर्वस्य श्रीमती ॥खोटी अधम अलापक परी आपकी पौरी॥ हम से अनेक तुम्हरे चेरी महल भरी,तुमसी कृपाल स्वामिन एकहि नजर परो, मोसी पतित घनी तिने जू पावनी करी,

रति रमा उमा अमित देखि रूप मदगरी, अलि विहारणी कृपाकोर करि चितवहु मेरी ओरी ॥

गजल

(१२२)

हे सजन श्रीजानकी बल्लभ अरज मेरी सुनो।
कीजिये नहि नेक मेरी वार को देरी सुनो ॥
इश्कका सायकलगा जिसके जिगरसोइ जानता।
हे सनम युग रूप मेरे आईये नेरी सुनो ॥
काम क्रोधादिक सुभट खब घेरते वे पीर हो।
हे सिया रघुवीर जू तिनकौ चही मेरी सुनो ॥
आपकी मैं हूँ सदा लघु जीव धमकाते मुझे।
कुछ नहीं तिनकी फिकर चाही कृपा तेरी सुनो ॥
छोड़ सब कुल कानि चारों मुक्त फल की वासना।
एक तेरी ही जुगल पद की अली चेरी सुनो ॥
अबविहारिण को मिले सुख रंग मंदिर का सदा।
श्रीचारुशीला जू जहाँ दृग कोर कर हेरी सुनो ॥

धुनि लावनी

(१२३)

सुन श्री वैदेही बल्लभ प्राण अधारे ॥

मैं तलफतहूँ निस दिन बिरह बियोगतिहारे ॥
मैं हूँ अति अधम निकाम पतित अघरासी ।
सब कर्म धर्म से हीन बुद्धि सब नासी ॥
यह अधम शरीर के हेत कीन्ह दृग न्यारे ।
भटकूँ घर घर निज रूप सुहोस बिसारे ॥
हे श्रीचारुशीला रसदानि रसिक मन भावन ।
करुण निध बँह पगार पतित अति पावन ॥
मम कुटिल कर्म को देखि तजो जनि प्यारे ।
जैसी हौं तैसी पड़ीं स्वामिनी द्वारे ॥
गिन हैं यदि मम अघ शेष कोटिशत अनुदिन ।
पावैं नहि पार सुजाहिं कल्प बहु चहिकिन ॥
बानी बहु रूपहि धारि गने अघ मेरे ।
तो भी नहि इति लगहिं अमित कृत मेरे ॥
मैं साँच कहूँ श्री कृपावती दिलदारे ।
एक आस विहारिण कृपा दृष्टि सुख सारे ॥

पद विहागमें

(१२४)

बसो नित नैनन में सिय प्यारे ।
तुम बिन श्रीवैदेही बल्लभ तलफत प्राण हमारे ॥

सब विधि से मैं तुव पद से बहुँ रहूँ निति प्रिति मतवारे।
दम्पति कृपा कटाक्ष चाहिये सम्पति तन मन थारे॥
नेम धरम परमारथ स्वारथ हैं सब शरन तिहारे।
अलि विहारणी मधुर शीला के हिय से होवन न्यारे॥

कवित्तसिंहावलोकन

(१२५)

मेरी न और कहूँ अवलम्ब विदेह सुता शरणागति तेरी।
तेरी कृपा की कटाक्ष चहूँ दिन रैन सदा पद पंकज चेरी॥
चेरी विचार क्षमा करिये अपराध विहारिन कीन्ह घनेरी।
नेरी रहूँ नित कुंजनमें अभिलाष यही सिय स्वामिन मेरी॥
कीजे कहा सिय स्वामिनजू मनकी कटुताई न नेकहु छीजे।
छीजे जवै तन से मन से धन से अपनी शरण गति लीजे॥
लीजे विचार बड़ी विरदावली रंग अगार महा सुख दीजे।
दीजे विहारिण को मुखपीकप्रसादिकी नित्य अलीमोय कीजे॥

गजल

(१२६)

हे श्रीसिया पिया जू मेरे वसो हिया जू॥ वैदेही प्राण वल्लभ, भूलो न एक पल्लभ, सतगुरु कृपा से सुल्लभ, तन मन तुम्हे दिया जू॥ मिथलेश राजवारी, नृपराज प्राणप्यारी,

प्रीतम प्रिया उचारी, लखि रूप तन जिया जू।। नहिं और ठौर मोरी, सुनिये लली किशोरी, सब भाँति आस तोरी, दृग टेक यह लिया जू।। श्रीचारुशीला स्वामिन, वर अंग गौर दामिन सुखमागजेन्द्र गामिन, श्रीगुन क्षमा किया जू।। हे श्रीकृपावती जू, हूँ शरण श्रीमती जू, मेरी तुहीं गती जू, अलि आपनी किया जू।।

राग मल्हार

(१२७)

हे श्रीसीते स्वामिन प्यारी छबि दरशाइये जू।। नवल कुञ्ज श्रीकनक भवन की, इस विलास प्रमोद विपन की, रस विलास प्रमोद विपिन की, निमि वंस दुलारी रस वरसाइये जू।। श्रीवैदेही राजकिशोरी, रसिक शिरोमणि पिय चित चोरी, गौर अंग छविवारी रूप सहाइये जू।। श्रीवैदेही महल विहारिणि, वल्लभ जू की हिय सुख कारिणी, श्रीचारुशीला मनहारी अलि अपनाइये जू।।

धुनि कजरी

[१२८]

हे श्री स्वामिन जनक दुलारी भूलौ सुरति हमारी ना। हमसी अमित सहचरी तुम्हरें, तुमसी स्वामिन तुमही हमरें,

रातदिवस आपहि को सुमरे कीजे न्यारी ना॥ रघुनन्दन की प्राण प्यारी, श्रीचारुशीला जू की अति सुखकारी, श्रीकृपावती तन मन धनवारी उपमा धारी ना॥ (हे श्री) श्रीकनक भवन नवकेलि रँगीली, श्रीनिकुञ्ज बन रास रसीली; अलि विहारिणी प्राणवसीली और निहारी ना॥ हे श्रीस्वामिनि जनक दुलारी भूलौ सुरति हमारी ना॥

गजल

(१२९)

सिया जू स्वामिनी तुम बिन हमारा और ना कोई।
पिया जू प्रीत के ग्राहक छोड़ जगनेह पद होई॥
तुम्हारे सम दया धारी, नहीं कोऊ दीषनृप वारी।
विना कारण परुपकारी कृपा अखियाँ भरी दोई॥
तुम्हारी प्राण से प्यारी श्रीचारुशीला जू कृपा कारी।
मेरी आचार्ज सोइ भारी रही ना जक्त में गोई॥
मिली मोकों पृथम स्वामिन कृपावति करिकृपा नामिन।
निहारी जान अनुगामिन सकल भव त्रास मम खोई॥
शरण में हूँ सदा तोरो खबर अब लीजिये मोरी।
करहु करुणा कृपा कोरी विरद वर आपनो जोई॥
धड़कता है जिगर मेरा सकल भव जाल में घेरा।

हित कोई नही मेरा किशोरी जू तुहीं होई॥
पतित मैं पावनी तू है शरण मैं स्वामिनी तू है।
रशिक चूडामणी तू है बड़ी जी जो अहै मोई॥
कबैवह दिन दिखावोगीं अलिन कर पान पावोगी।
विहारिण को बुलावोगीं प्रसादी पीक दन दोई॥

पद विहाग में

(१३०)

हे श्रीकृपावती के प्यारे सुनिये विनय हमारी।
यहमन बहुतठौर नितविहरत थिर न रहत मतवारी॥
बरजहु कृपाकोर करि प्यारी प्रीतम जन सुखकारी।
अलिविहारणी एक तुम्हैं बिन अपर ननैन निहारी॥

रेखता

(१३१)

काहे करो अवेर कृपाकोर के लिये।
मेरी न वार धारो निठुराई ता हिये॥
बहुतौं से हम सुना है देखा भी हम सही।
ऐसी कृपाल दूजी कोऊ नही सिये॥
कोटन अमित निवास करैं खास संगमैं।

मैं देखि देखि तलफों थिरता नही जिये ॥
यह जन्म कर्म मेरो सब आप के लिये ।
काहे भुलाय भवमें अबहुँ तौ कृपाकिये ॥
ऐसी हमार भाग्य आप सरस स्वामिनीं ।
श्रीचारुशीला संग श्रीकृपावती दिये ॥
ऐसी हवाल पर भी आह तन जला करै ।
चाहै सदा परागचरण कमल अलि पिये ॥

पद विहाग में

(१३२)

किशोरी जू तुम हो स्वामिन मेरी ।
सब विध तुम मेरी सिय स्वामिन हों सब विध मैं तेरीं ॥
श्री कनक भवन श्रीचारुशीला श्रीकृपावती पद चेरी ।
शरण विहारिण अली कृपा करि राखहु नित पद नेरी ॥

रेखता

(१३३)

हे स्वामिनी किशोरी सीते विदेह जा ।
तुम तजि न और मोरी सीते विदेह जा ॥
हे लाडली सिया जू पियकी विदेहजा ।

श्रीरशिक चित्त चोरी सीते विदेह जा॥
श्रीचारुशीला प्यारी सीते विदेह जा।
मैं हूँ चरण शरण में सीते विदेह जा॥
निस दिन विहारणीहिये वसिये विदेह जा।
सिय पिय अनूप जोरी सीते विदेह जा॥

नवल छन्द

(१३४)

हे श्रीवैदेही वल्लभ जू कृपा काहे विसारी॥
मैं हूँ शरण तिहारे दया काहे बिसारी॥
कृपा करी गौतम तिय तारी रही पाप भारी।
प्रबल ताड़िका मार एक शर मख रक्षा कारी॥
हे श्रीवैदेही बल्लभ जू कृपा काहे विसारी।
मिथलापुर में चाप शिंभु धनु खंडन करि डारी॥
भृगमान मदभृगु पतिमद हरि व्याही सियप्यारी॥
रूप अनूप दिखाय महा छबि मोहे नर नारी॥
अवध धाम श्रीकनक भवन की लीला विस्तारी।
युगल प्राण की प्राण अली श्रीशत्रुजीत वारी॥
विहरत सदा अष्ट कुञ्जनमें छिन भर नहि न्यारी।
तासु प्रिया श्रीकृपावती जू युगल मोद कारी॥

कृपा करो जासें अघ नाशै सब दुख संसारी।
मीन सुरक्षक एक नीर है और सबै मारी॥
तैसिहिं अलिविहारणीकी गति दूजी नहि धारी॥

गलज

(१३५)

कीजे कृपा कटाक्ष सीय लाल सुख करं।
भव जाल महा घोर ताप दुःखत्रय खरं॥
अति काम क्रोध मोह लोभ नित तनु गरं।
इनको निवार कीजे मेरे हृदय घरं॥
जब आपको निवास नित हूइहै उरं।
तब भागि हैं अनेक मान आदि निशचरं॥
माया स्वरूपी नारि नैन सैन सब छरं।
धारों अनन्य टेक हिये सकल दुख जरं॥
नव केलि रूप कल्प ब्रह्म सुख सुमन फरं।
श्रीयुगल माधुरी निहार सुधि भुला परं॥
श्रीचारुशीला चरण आस पास ना टरं।
श्री मत्कृपावती समीप वास मम ठरं॥
आपकी कृपा से इन्द्रादिना डरं।
श्रीयुगल चरण कमल शरण रीत रस ढ़रं॥

शील दया करुणादिक नैत गुण गरं।
दिव्य गुणसु आपके बिचार कर तरं॥
जब सेहों विलग भयो तब से नाथिरं।
माता पिता सजन सगे अनुज सो दरं॥
ऐ सब भये अनेकन हों जन्म बहु धरं।
अति भाग्य देव दुर्लभ पायो सो नर तनं॥
ऐसो अनूप रूप पाय जाल भव परं।
हति भाग्य कल्प वेलि दुखंद गरल फल फरं॥
सूझत न और ठौर सुनो श्री जानकी वरं।
करिके कृपा कृपाल युगल चरण सुख भरं॥
अब अलिविहारिणी के सकल शोक अपहरं॥

दादरा

(१३६)

सिया जू अब ना तजो हौं तेरी।
हौं तेरी चेरी सिय प्यारी स्वामिन सब विध मेरी॥
कृपा खान मुसक्यान विलोकतसुख अनंत उम गेरी।
अलि विहारणी अब नहि भूलो संसृति बहुत सहेरी॥

गजल

[१३७]

सिया जू स्वामिनी मोरी शरण हूँ में सदा तोरी।

तुम्हारे बिन अवध लालन नही कहुँ एक पग चालन ॥
दीन की हौ सदा पालन रशिक रघुलाल चित चोरी।
चरण वर चिन्ह पर वारी कोट कोटिन सगुन थोरी ॥
सुभग शृंगार निज करको रशिक पिय रचित निज करके।
निरख सुख अकथ है कवि को रंगीली रस भरी जोरी ॥
दृगन भरि निरख छबि नीको जुगल पद आस दृढ तीरी।
विहारिण चारुशीला की रहूँ आश्रय कृपा कोरी ॥

भैरवी

(१३८)

सिया जू पिया मम हिय आन बसौ।
जुगल रूप रवि प्रभा होय उर तम अवि वेक नसौ ॥
नवलजुगल चरणाम्बुजविचनित चित निस दिवस फँसौ।
जुगल केलि सुख सिन्धु मीन मन रहै अखंड धसौ ॥
श्रीस्वामिनी चारुशीला की कृपालता से गसौ।
कामदलता कृपावति जू पद पंकज अली लसौ ॥

गजल

(१३९)

हे स्वामिनी सिया जू ऐसी कृपा करौ।
तन मन बचन से जो किये अपराध अमित में ॥

तिनको विसार अपनी आप विरद अनु सरौ।
औरन कौ रूप देख नैन चैनना लहौ॥
निज रूप माधुरी दिखाय मोद हृद भरौ।
अपर नाम लेत कलेजा अधिक दहै॥
वैदेही प्राण बल्लभ उचरत सुमन हरौ।
आन धाम वास एक पलक सुख नही॥
श्रीअवध चित्रकूट एक क्षण नही टरौ।
उत्सव अपर विलोक लुभावै नही ए मन॥
छूटै सकल मुहुब्बत जग की ए दिल चहै॥
चाहे कोई न देवे चाहे दिया करै।
चाहे बुरा कहै कोई चाहे भला कहै॥
करि करि उपाय थक गया मन सुख के वास्ते।
परिणाम सब से दुख मिला निस दिन हिया दहै॥
अवरह गये मरने के दिन थोड़े सोभी करीव।
तौभीन मानना है हठ आपनी गहै॥
नव केलि सिन्धु हेलि मीन मन सदा परौ।
तन से कराई यो सदा कैंकय आपनों॥
मन से बचन ललाम नाम रावरौ ररौ।
ऐ विनय ख्याल कीजिये हमारी स्वामिनी॥
श्रीचारुशीला शरण अली आस दृढ धरौ॥

गजल

(१४०)

बैदेही प्राण बल्लभ जू की कृपा रहै।
अब तौ सुनौ श्रीचारुशीला स्वामिनी मेरी।
राखौ चरण शरण मैं निज रूप अलि लहै॥
श्रीमत्कृपावती निकुञ्ज पास वास की।
आसा लगी विहारणी भव त्रास ना सहै॥

दोहा

(१४१)

हे सिय जू मम स्वामिनी पिय जू अवध किशोर।
कृपा अली पर कीजिये तड़फत है जिय मोर॥
हे श्री वैदेही जू सदा चरण कमल की आस।
अली और नही ठौर कहुँ राखिये अपने पास॥
हे मिथलेश ललील लित, रशिक लाडली लाल।
अली बिहारिणिशरण है कीजे कृपा कृपाल॥
हे श्रीजनक किशोरी जू, नव किशोर चित चोर।
छिनपल वीतत कल्पसम, निरख अली दृगकोर॥
हे श्रीस्वामिन लाडली प्यारी अति सुकमार।

अलि विहारणी कीं सुरत दीजे नाहि बिसार॥
तुम सब विध मम स्वामिनी हौं सब विध अलि तोर।
चरण शरण मैं राखिये समुझ आपनी ओर॥

श्री युगल नामा वली

(१४२)

सिया जू पिया जू प्रिया जू बल्लभ जू
रशिक श्याम ललीलाल कहो जू॥
कहो जयति वैदेही वल्लभ युगल जू।
रशिक प्राण जीवन लिये कर कमल जू॥

दोहा

(१४३)

पिय प्यारी प्रीतम प्रिया लाल लाडली नाम।
बल्लभ उचरत बल्लभी कहत स्वामिनी श्याम॥
जै श्रीवैदेही रशिक, बल्लभ श्यामा श्याम।
जय श्रीनवल विहारणी रशिक बिहारी नाम॥
हे श्रीरघुवर वल्लभा जानकी बल्लभ लाल।
रशिककिशोरमणिरशिकप्रिय, जीवनरशिककृपाल
हे श्रीसीते स्वामिनी, स्वामी राम कृपाल।

कीजे कृपा कटाक्षवर छूटे भव भ्रम जाल ॥
श्रीविदेह नृपनंदनी, रघुनन्दन रशिकेश ।
युगलचन्द्र पद सजहु मन, रशिक अनन्य रशेस ॥

स्मर्ण

(१४४)

हे श्रीवैदेही बल्लभ जू ।
जयति युगल चूडामणि प्रभुजू ॥
हे श्रीलली लाल रघुनन्दन ।
जनक नन्दनी जय जन रंजन ॥
जयति चारुशीला पद कंजम् ।
हे श्रीकृपावती सुख पुञ्जम् ॥
जयति युगलरशि केन्द्र कृपालं ।
श्रीअग्रअली अतिभली दयालं ॥
श्रीकामादलता पूर मम कामं ।
रंग महल सुख प्रद अभिरामं ॥
श्रीअग्रअली कामदलतिका जू ।
श्रीचारुशीला श्रीकृपावती जू ॥
अपनी जान मोय अपनावो ।
अलि विहारणी सुरत करावो ॥

छंद मनभावतो

(१४५)

किशोरी जू सिया जू विदेह नन्दनी।
हे श्रीसीतेस्वामिनीजू वैदेही लाडलीजू हँसनिमंदनी
श्रीराम बल्लभा जू लाल जू प्रिया जू।
श्रीचारुशीला प्यारी निमवंस चन्दनी॥
रंग महल केलि कुञ्ज श्री प्रीतम बिहारणी जू।
अली ऐ नाम उचरैं करूँ मैं बन्दनी॥

स्मर्ण

(१४६)

हे श्रीयुगल किशोर किशोरी।
लली लाल मम हृदय बसोरी॥
हे श्रीयुगल प्रिया प्रीतम जू।
श्रीकनक भवन क्रीडा कृत्तम जू॥
हे श्रीसिय बल्लभ जू प्यारे।
श्रीसाकेत युगल मत वारे॥
हे श्रीश्यामा श्याम बिहारी।
हे श्रीसिय पिय जू बलिहारी॥
जयति जानकी बल्लभ रसिया।

हे श्रीचारुशीला हित बसिया ॥
जय श्रीकृपावती की स्वामिन ।
हे श्रीकामदलता सुनामिन ॥
हे श्रीवैदेही बल्लभ जू ।
तजोन मोय एक पल्लभ जू ॥
रहस विहरिणी रहस बिहारी ।
चिरजीवो अलि हिय सुखकारी ॥

दोहा

(१४७)

जयति लाडली लाल दोऊ, श्रीचारुशीला हिय हार ।
श्रीकृपावती के युगल वर, चिरजीवो सुकुमार ॥

श्री वैदेही बल्लभ लाल ।
श्रीचारुशीला शरणागत पाल ॥
जै श्री जानकी बल्लभ लाल ।
हे श्रीअग्र अली मुद माल ॥
श्रीसिय वल्लभ लाडली लाल ।
श्रीमत्कृपावती सुख जाल ॥
श्रीयुगलकिशोर किशोरी नाम ।
प्यारी प्रीतम श्यामा श्याम ॥

नित्य स्मर्ण

(११८)

श्री विदेह राजकिशोरी अवध किशोर।
श्री जनक ललो अवध लाल रशिक चितचोर॥
श्री विदेह नन्दनी श्री दशरथ नन्दन।
श्री युगल प्रिया प्रीतम कीजे कृपा की कोर॥
हे श्री कनक भवन विहारणी बिहारी जू।
हे श्री युगल रशिक चूडामणि शरण तोर॥
हे श्री वैदेही प्राण बल्लभ कृपाल।
शरण पाल अलि विहारणी सदा निहोर॥
श्री जानकी बल्लभ नाम मधु सुख कारी।
श्री जानकी वल्लभ रूपसु नयन निहारी॥
श्री जानकी वल्लभ ध्यान हृदय बिचधारी।
श्री जानकी बल्लभ गान सुनत सुख भारी।
श्री जानकी बल्लभ ललित चरित उच्चारी।
श्री जानकी बल्लभ पर बहु काम उबारी॥
श्री जानकी बल्लभ लाल रशिक मन हारी॥
श्री जानकी बल्लभ तन मन धन सुख सारी॥

श्रीजानकी वल्लभ युगल चन्द पिय प्यारी।
श्रीजानकी वल्लभ छवि तिहुँ लोक उज्यारी॥
श्रीजानकी बल्लभ श्रीनिमवंश दुलारी।
श्रीजानकी बल्लभ छवि दृग से नहि न्यारी॥
श्रीजानकी बल्लभ चारुशीला सुकुमारी।
श्रीजानकी बल्लभ कृपावती बलिहारी॥
श्रीजानकी बल्लभ सुख विन सब सुखखारो।
श्रीजानकी बल्लभ घन दामिनि मदगारी॥
श्रीजानकी वल्लभ के बिन सब जगछारी।
श्रीजानकी बल्लभ विरह मिलन तनजारी॥
श्रीजानकी बल्लभ स्वामी सुमम अघारी।
श्रीजानकी बल्लभ ईस परे अवतारी॥
श्रीजानकी बल्लभ सुमिर होत भव पारी।
श्रीजानकी बल्लभ रक्षक सब जग झारी॥
श्रीजानकी बल्लभ इष्ट सकल नर नारी।
श्रीजानकी बल्लभ मर्दन सकल सुखारी॥
श्रीजानकी बल्लभ दुर्घट भव दुखटारी।
श्रीजानकी बल्लभ नित नव प्रीत बढ़ारी॥
श्रीजानकी बल्लभ पति गल बहियाँ डारी।
श्रीजानकी बल्लभ विन सब चाह उठारी॥

श्रीजानकी बल्लभ बिन सब वृथा नफारी।
श्रीजानकी बल्लभ युगल छत्र शिर धारी॥
श्रीजानकी बल्लभ विमुख मनुष्य वृथारी।
श्रीजानकी बल्लभ जू से अलि दिलदारी॥

नित्य स्मर्ण

(१४९)

रटु सखी वैदेही बल्लभ जानकी जानकी बल्लभ सिया॥
श्यामा श्याम प्रिया प्रीतम जू विहरत रशिक हिया॥
लली लाल सिय बल्लभ रस निध कनक भवन रशिया।
रशिक उदार चूडामणि स्वामिन श्रीरघुराज प्रिया॥
जय श्रीजुगल किशोर किशोरी बल्लभ प्राण जिया।
रहस विहारिन रास विहारी जुलफैं जुलुम किया॥

गजल

(१५०)

सुनयना नन्दनी प्यारी जनक नृपराज वारी हैं।
रघूत्तम बल्लभा सीता किशोरी जू उचारी हैं॥
सिया जू स्वामिनी सबकी नवल वय रूप धारी हैं।
प्रिया वैदेही गौराङ्गी अमित रति मान गारी हैं॥
जनक तनया जनक नन्दनि जनक बेटी सुखारी हैं।

जनक पुत्री जनक कन्या जनक महिपति दुलारी हैं ॥
लडैती लाडली महिजा लली निम कुल कुमारी हैं ।
रशिक प्रीतम विहारिन जू अलीनित केल कारी है ॥

गजल

(१५१)

युगल सरकार श्रीवैदेही बल्लभ मैथली रघुवर ।
प्रिया प्रीतम पिया प्यारी लडैती लाल हिय सुखकर ॥
सिया वल्लभ रशिक जीवन रघूत्तम बल्लभा रस ढ़र ।
किशोरी जू अवध भूषन युगल वर चन्द्र सुखमासर ॥
रशिक चूड़ामणी सिय जू पिया जू प्रीतिमा मनहर ।
विहारिण जू विहारी जू युगल नवकेलि शोभा धर ॥
विहारें श्रीकनक भवनं रामरशिका रशिक रस भर ।
युगल सीता रमण आली सदाचिरजीवो जय जय रर॥

छन्द मनहरन

(१५२)

जय किशोरी स्वामिनी रघुवंश मणि प्रिय प्राण की ।
जय किशोर लाडली सर्वेश्वरी श्रीजानकी ॥
जयति सीता नामनी सुखधामनी बल्लभ प्रिया ।
जयतिहे गजगामनी तनुदामनी प्यारी सिया ॥

जयति कोटि मनोज रति मनमोहनी अभिरामनी।
जय कनक भवनस्थ कुञ्जन सोहनी सिय स्वामिनी॥
जयति श्रीचारुशीला प्रीतमा रस दायनी।
जयति हे श्रीमत्कृपावती हिय विहारिण भायनी॥

गजल

(१५३)

श्री सुनयना नन्दनी जू के शरण मैं हूँ सदा।
श्री सिया जग वन्दनीजू की शरण में हूँ सदा॥
श्री जनक नृप लाडली जू की शरण मैं हूँ सदा।
अंग नीली साडली जू के शरण मैं हूँ सदा॥
श्री रघुत्तम भामनी जू के शरण मैं हूँ सदा।
श्रीचारुशीला स्वामिनीजू के शरण मैं हूँसदा॥
श्रीजानकी बल्लभ प्रियाजू की शरणमैं हूँसदा।
श्रीरशिक विहरन हियाजू की शरण मैं हूँ सदा॥
श्री किशोरी जू अलिन सीता शरण मैं हूँ सदा।
श्री मती सर्वेश्वरी सीता शरण मैं हूँ सदा॥
बल्लभा रघुवंश मणि जू की शरण मैं हूँ सदा।
श्री पिया सुखवर्द्धनी जू की शरण मैं हूँ सदा॥
जयति श्री विदेह प्यारी जू शरण मैं हूँ सदा।

जयति श्रीमिथलेश वारी जू शरण मैं हूँ सदा ॥
श्रीरंग मन्दिर की विहरिणजू शरण मैं हूँसदा ।
श्रीसुजन आनंद कारिणजू शरण मैं हूँ सदा ॥
मैथली जनकात्मजाजू के शरण मैं हूँ सदा ।
भूमिजा मिथलेसजाजू के शरण मैं हूँ सदा ॥
जयति श्यामा जानकीजू के शरण मैं हूँ सदा ।
श्रीअली सुखदान जू के शरण मैं हूँ सदा ॥
जयकिशोरी मैथली नवकेलि नित पिय संगमैं ।
जयति श्रीवैदेही वल्लभ रास लालित रंग मैं ॥
जयति श्रीमाधुर्य रस अम्वोधि नित्य विहारणी।
जय किशोरी श्रीसुनैनानंदनी मुदकारणीं ॥
जयति वर नवला रघुत्तमभामनी मिथलाललली ।
जय किशोरी चित्तचोरी स्वामिनी मोरी भली ॥
जयति हे श्रीजनक राजदुलारी यह वर दीजिये ।
जान अपनी निजअलीपदकंज विलगनकीजिये॥

दोहा

(१५४)

श्रीचारुशिला युत अलिन को, नित्य महल सुखदेहु ।
श्रीकृपावती जू की स्वामिनी, मोय अपनि करिलेहु ॥

कुण्डलिया

(१५५)

मोय आपनि करिलेहु देहु रति चरण कमल की।
नित्तविहार बहार दिखावहु रंग महल की॥
रंग महल विच चारुशिला आचार्य हमारी।
श्रीकृपावती सँग रहूँ सदां दिन रैन सुखारी॥
यह अभिलाष विहारिण सब अपराध छमैहू।
श्रीकृपाती की स्वामिनी मोय आपनी करिलेहू॥

दोहा

(१५६)

श्रीकृपावती की कृपा से, जुगल किशोरि किशोर।
मिले सदा आनंद अलि, सुख छायो मन मोर॥
श्रीचारुशीला की बल्लभा रघुनन्दन की प्रान।
श्रीकृपावती की लाडली चिरजीव रस दान॥
सिय जू की प्यारी सदा चारुशीला सुकमारि।
चारुशीला की वल्लभा कृपावती बलिहारि॥
कृपावती मुद कारणी कामदलता किशोरि।
कामदलता कृपावती अली अनूपम जोरि॥

सवैया

(१५७)

जयति सिया रघुनन्दन जू मिथलेश लली अवधेश ललाजू।
जयश्रीजानकी बल्लभजू सियबल्लभ स्वामिन चारुशिलाजू
जयति विदेह सुता सियजू रशिकेन्द्र प्रिया चितचोरछलाजू।
जोरीसदा चिरजीवो अली निरखों दृगकोर कृपाकी भलाजू॥

गजल शैरों में

(१५८)

सिया जू पिया जू प्रिया जू कहो।
किशोरी जू प्रीतम सिया जू कहो॥
लली लाल वैदेही बल्लभ कृपालं।
रशिक चूडामणि भक्त वत्सल दयालं॥
जनक नन्दनी जू रघुत्तम उचारी।
युगल श्याम श्यामा विहारिण विहारी॥
रशिक राम रमणी श्रीवैदेही रमणं।
सिया अँग गोरी पिया श्याम वरणं॥
सिया चन्द्रका शीश प्रीतम सुभालं।
लसै क्रीट कलंगी सुकुंडल विशालं॥
हँसन मंद चितवन कृपा की भरी है।

रती काम की काँन्ति कोटिन हरी है ॥
ललित नाम सीता श्री राघव उदारं ।
जनक राज प्यारी सुशोभा अपारं ॥
रशिक स्वामिनी वल्लभा राम जू की ।
सदा दैन वारी परम धाम जू की ॥
कहो जानकी बल्लभं प्रीत पालं ।
सिया बल्लभं दीन बन्धू दयालं ॥
वैदेही रशिक राम रशिका विजयते ।
शरण पालनी दीन करुणा करयते ॥
कनक भवन शोभा प्रकासी अपारं ।
लडैती रशिक लाल भव दुख निवारं ॥
सुनयना दुलारी अवध पति दुलारे ।
वसो नित नवल हीय पंकज हमारे ॥
रशिक राम प्यारी सिया प्राण प्यारे ।
अली चारुशीला दृगनते न न्यारे ॥
कृपावती कृपा की भरी नित्य सोहै ।
युगल रुप झाँकी लखत चित्त मोहे ॥
विहारिणि अली पीकदानी सम्हारी ।
युगल चन्द्र झुकि पीक गेरे सुखारी ॥

नवल नाम मुख जयति जय जय उचारी ।
सदाँ दोऊ चिरंजी में तन मन से वारी ॥
जोगावेंगे सिय पिय के नाम ललामा ।
देवें विहारिणिकी स्वामिनी उन्हैंनितधामा॥

दोहा

(१५९)

श्रीसिय पिय नामावली, कहै नित्य मन लाय ।
जनक दुलारी शरण कृत रशिक सदा सुख पाय ॥

श्रीकिशोरी जू की नामावली

(१६०)

हे श्रीसीते जनक दुलारी । हेश्रीजनक लडैतीं स्वामिन॥
हे श्रीवल्लभ प्राण प्यारी । हे श्रीरंग महल विहारिण ॥
हे श्रीकनक भवन मुदकारी । हे श्रीसर्वेश्वरी सिया जू॥
हे श्रीरहस कंज रस दारी । हे श्री वैदेही सुकुमारी ॥
हे श्रीमिथला धिप की वारी । हे श्रीचारुशीला सुखकारी ॥
हे श्रीकृपावती बलिहारी । हे श्रीरामवल्लभा नृपजा ॥
हे श्री श्रीमैथली सुखारी । हे श्रीरामलाल रसदानी ॥
हे श्री श्री निमवंश उजारी । हे श्रीरास माननी श्री जू॥

हे श्रीजनक किशोरी हमारी। हे श्रीनव माधुर्य्यरसोदधि॥
विहरन चलन मत्तगज न्यारी। हे श्रीनीलकंजकर धारिन॥
सारी नील रंग जर तारी। हेश्रीबल्लभरतिदानरसीली॥
हे श्रीअर्द्धचन्द्र शिर धारी। हे श्रीचन्द्रकादि अँगभूषन॥
निरदूषन छवि रति मदगारी। हे श्रीराघव अंक भूषिता॥
अमित अली सेवत छवि भारी। राखहुसदाविहारिणअलिको॥
युगल पाद जल जात मझारी।

रसाचार्य स्मर्ण

(१६१)

श्रीवैदेही बल्लभ हे श्रीकृपावती जू।
श्रीचारुशीला प्यारी हे श्रीकृपावतीजू॥
श्रीस्वामिनी किशोरी हे श्रीकृपावती जू।
श्रीकनक भवन वासनी हेश्रीकृपावती जू॥
श्रीलाडली लडैती हे श्री कृपावती जू।
श्रीलाल लाडली जू श्रीकृपावती जू॥
श्रीजानकी दुलारी हे श्रीकृपावतीजू।
श्रीमैथली किशोरी हे श्रीकृपावती जू॥
श्रीरंग महल मणि हे श्रीकृपावती जू।
श्रीस्वामिनी हमारी हे श्रीकृपावती जू॥

श्रीवैदेही प्यारी हे श्रीकृपावती जू।
श्रीलली लाडली जू हे श्रीकृपावती जू॥
श्रीप्रिया प्रीतम जू हे श्रीकृपावती जू।
हे नवल नागरी जू हे श्रीकृपावती जू॥
श्रीरशिक मोहनी जू हे श्रीकृपावती जू।
श्रीबल्लभा छवीली हे श्री कृपावती जू॥
श्रीलाल हिय वसीली हे श्रीकृपावती जू।
श्रीराम विहारणी हे श्रीकृपावती जू॥
श्रीनव कमलधारणी जू हेश्रीकृपावतीजू।
श्रीरशिक रंजनी जू हे श्रीकृपावती जू॥
श्रीनयन खंजनी जू हे श्रीकृपावती जू।
श्रीयुगल चित्त चोरी हे श्रीकृपावती जू॥
श्रीरहस किशोरी हे श्रीकृपावती जू।
श्रीनवल केलि करनी हे श्रीकृपावती जू॥
श्रीप्रिया मोद भरनी हे श्रीकृपावती जू।
श्रीशरण पालनी जू हे श्रीकृपावती जू॥
श्रीरशिक स्वामिनीजू हे श्रीकृपावती जू।
श्रीवैदेही रशिक हे श्रीकृपावती जू॥
श्रीकनकभवन वसिका हेश्रीकृपावतीजू।
श्रीकुञ्ज सुख पद हे श्रीकृपावती जू॥

श्रीयुगल रूप जसवद हे श्रीकृपावतीजू।

श्रीयुगल स्मर्ण

(१६२)

जय जय श्री वैदेही प्राण बल्लभ जू।
जयजय श्रीयुगलरशिक चन्द्रसियपियजू॥
जय जय श्रीस्वामिनी किशोरी जू की।
जय जय श्रीरघुवंश मणि वल्लभाजू की।
जयजय श्रीमद रशिक चूडामणिजू की।
जय जय श्रीयुगल प्रिया प्रीतम जू की॥
जय जय श्रीलली लाल साहिब जू की।
जय जय श्रीविहारणी बिहारी जू की॥
जयजय श्रीयुगलकिशोर किशोरीजू की।
जयजयश्री जानकी बल्लभसियवरजू की॥
जयजय श्रीरहस विहारणी विहारीजू की।
जयजयश्रीजानकी रशिकसियपियजू की॥
जय जय श्रीवैदेही रशिक रसनिधजू की।
जय जय श्रीकनक भवन विहारीजू की॥
जयजय श्रीरंगमहल जुगलबल्लभजू की।

जय जय श्री निकुञ्ज बल्लभ जू की ।।
जयजय श्रीसरजू निकुञ्ज विहारीजू की ।
जय जय श्रीसर्वेश्वरी जू सुखारी जू की ।।
जय जय श्रीचारुशीला स्वामिनी जू की ।
जय जय श्रीकृपावती स्वामिनी जू की ।।
जय जय श्रीकामदलता जू की ।
जय जय श्रीकरुणावती जू की ।।
जय जय श्रीअग्रअली रशिका जू की ।
जय जय श्रीप्रसाद चारुशीला जू की ।।
यह द्वादश युग जयति शब्दक है नेंम से ।
ताकों मिलें विहारिणि अली जू प्रेम से ।।
धारे अनन्य टेक रशिक रीत अनुसरै ।
सोई रशिक सुजान जक्त जाल सेतरै ।।
जनक नदंनी जू रशिक रंजनी जू ।
रघुत्तम प्रिया जू हँसन मंदनी जू ।।
विजयतेति श्रीचारुशीला सु स्वामिन ।
सदा रंग मन्दिर विहारिन सुपासिन ।।
नवल नाम कामदलता मोद रासी ।
विहारिणि सिया संग सोभा प्रकासी ।।
कृपा रस भरी श्रीकृपावति ललामा ।

कृपाकोर कीजे अली और श्यामा ॥
रसाचार्य मेरी शरण मैं सुतेरी।
कृपाकोर हेरी अली राखुनेरी ॥

कवित्त इच्छावलम्बी

(१६३)

हे सियजू पियजू लली लाल किशोर किशोरीजू पिय प्यारी।
जानकी बल्लभजू सिय बल्लभ श्यामाश्याम निकुंजबिहारी॥
श्रीवैदेही बल्लभ जू सर्वेश्वरी चारुशीला सुखकारी।
रंगभरी चिरजीवो प्रिया प्रीतम जोरी अलि हों बलिहारी॥

मञ्जु छन्द

(१६४)

जय श्रीवैदेही बल्भ जू।
जय श्री प्रीतल प्यारी जू॥
जय श्री लाडली लाल सलोने।
जय श्री महल बिहारी जू॥
जय श्री दशरथ राज दुलारे।
जय श्री जनक दुलारी जू॥
जय श्री कनक भवन रस ढ़रिया।
जय श्री रशिक सुखारी जू॥

जय श्री वन प्रमोद रस दानी।
जय श्री सखि मन हारी जू॥
जय श्री चारुशीला के प्यारे।
कृपावती मुदकारी जू॥
जय श्री जानकी बल्लभ रसिया।
सरजू कुञ्ज खिलारी जू॥
जय श्री कमला कूल विहारी।
मिथला कर धनु धारी जू॥
जय श्री रास बिहारी सिय पिया।
मृदुकर कमल उछारी जू॥
जय श्री अवध ललन सुकुमारे।
सिय स्वामिन सुकमारी जू॥
जय श्री युगल किशोर किशोरी।
रति मन मथ मद गारी जू॥
जय श्री चित्रकूट कामद गिर।
नित नव रास अहारी जू॥
जय श्री श्यामा श्याम छवीले।
जय श्री अधम उधारी जू॥
जय श्री अग्र रशिक चूड़ामणि।
नित नवकेलि अपारी जू॥

जय श्री पतित सुपावन नाम।
सुजनवहु जन्म अधारी जू॥
जय श्री दीन वन्धु सुख सिन्धु।
कृपाकर आनंद कारी जू॥
जय श्री दिव्य गुणन आगार।
युगल तन शोभा भारी जू॥
जय रघुनन्दन जू नृप वारे।
शीर ध्वज नृपवारी जू॥
जय श्री अमित अलिन के मध्य।
रसीली तान उचारी जू॥
निरख छवि दंपति छवि निध नैन।
विहारिण गई बलिहारी जू॥
जय श्री रशिक लाल रघुनन्दन।
जयति स्वामिनीं जनक दुलारी॥
जयति जानकी बल्लभ प्रीतम।
श्रीसीते निम वंश उजारी॥
जय श्री वैदेही वल्लभ जू।
रहस विहारिण रशिक विहारी।
अली पीकदानी की सेवा।
राखिये नही पलक टारी॥

श्रीवैदेही वल्लभ नाम री।
रसना रटत अमित सुख पावै।
छिन पल आठौं यामरी ॥
लली लाल सिय बल्लभ सिय पिय।
रंग महल मन भावरी ॥
युगल किशोर किशोरी प्यारी।
प्रीतम श्यामा श्यामरी ॥
युगल रशिक चूडामणि सुख निध ॥
रास कुंज अभि रामरी ॥
रशिक जानकी बल्लभ प्यारे।
मिथला अवध ललामरी ॥
श्रीचारुशीला जू के हृदय विहारी।
घन दामिन दुति दामरी ॥
युगल प्रिया पिय जू की छवि पर।
लाजै बहु रति कामरी ॥
रहो सदा चिर जीव अली के।
हृदय बसो सुख धामरी।

सवैया

(१६५)

जयति सिया रघुनन्दनजू मिथलेश लली अवधेश लला जू।

जयश्रीजानकी बल्लभजू सियवल्लभ स्वामिन चारुशीलाजू
जयति विदेह सुता सिय जू रसकेन्द्र पिया चितचोर छला जू।
जोरी सदा चिरजीवोअली निरखों दृगकोर कृपाकी भलाजू॥

मञ्जु

(१६६)

हे श्रीयुगल रशिक चूडामणि नवल निकुंज विहारी।
श्रीवैदेही बल्लभ सिय पिय रस निध प्रीतम प्यारी॥
हे श्रीचारुशीला सर्वस श्रीकृपावती मुदकारी।
युगल चन्द्र छवि देखि विहारिणि तन मन धन सववारी॥

गद्द जैजैकार

(१६७)

अनंत श्री मज्जुगल रशिक उदार चूडामणि, कोटरिझवार शिरोमणि, मुकुट मणि मंजरी कोटि कंदर्प लावण्य, प्रिया प्रीतम, लाडली लाल नित्य नवल लालित्य शृंगार माधुर्य्य रसो दधि श्रीरंग महल कनक भवन निकुंज विहारी श्रीयुगल विहारणी विहारी श्रीवैदेही प्राण बल्लभ श्रीयुगलकिशोर किशोरी श्रीसीताराम रशिकचन्द्र श्रीजानकी बल्लभलालजू की जैहो जयहो अनंत श्रीमिथलाधिप नन्दनी अवधेशनन्दनश्रीजानकीबल्लभ श्रीयुगलरासविहारणीविहारी

चक्रवर्ती चतुर चूडामणि श्रीमदविदेह राजकिशोरी श्रीमहाराज किशोर जू की जै हो जय हो ॥ अनंत श्रीमज्जन नन्दनी रघुनन्दन प्रिया प्रीतम नवल किशोर किशोरी बाहु पगार उदार चूडामणि पतित पावन सर्वो पाय सून्य शरणागति पाल अशरण शरण सुखदायक श्रीयुगल रशिक चन्द्र जू की जय हो जय हो ॥ अनंत श्री मन महाराजा धिराज सर्वभौम पत्य श्रीसाकेता धीश दिव्य मंगल विग्रह परम कारुणीक श्रीरघुकुल कमल प्रभाकर श्रीनिमकुल कुमदनी श्रीस्वामिनी सरकार दिव्य दंपति अखंड एक रस नित्य नवल केलि विहारणी विहारी श्रीविदेह राजकिशोरी श्री अवध राजकिशोर युगल प्रिया प्रीतम रशिक जीवन जू की जय हो जय हो ॥ अनंत श्रीनिमि कुलोद्भव श्रीमहाराज शत्रुजित नृप नन्दनी श्रीचन्द्रकान्ति दुलारी श्रीजनक नन्दनी प्राण प्यारी श्रीसिय पिय प्राण बल्लभा सर्वाचार्य सर्वेश्वरी जुगलपरिकेरश्वरी श्रीमती स्वामिनी श्रीचारुशीला जू की जय हो जय हो ॥ अनंत श्रीरसकेश्वरी श्री अग्रअली कामदलता जू की जय हो जय हो॥ अनंत श्रीमती रसाचार्य रशिक संजीवनी युगल रशिक सिय पिय प्राण बल्लभा श्रीकृपावती स्वामिनी जू की जय हो जय हो ॥

॥ श्रीविदेहजालालि शृंगार नामावली ॥

(१६८)

कहोरी किशोरी लडैती प्रिया जू।
रंगीली रसीली छबीली सिया जू॥
सुचन्द्रानना चम्पवर्णी कृपाला।
कहोरी मृगाक्षी महारूप माला॥
महामंजु केशी शुभग श्रौन वारी।
कहौरी शुभग चन्द्रका शीश धारी॥
तिलक रेख श्रीविन्दु अर्द्धचन्द्र धारिन।
कहोरी नवेली पिया सँग विहारिन॥
मदन चाप भृकुटी सघन श्याम बाँकी।
कहोरी हँसन मंद चितवन कृपाकी॥
दसन दाडिमी कम्बु कंठी सुश्यामा।
कहोरी महारास रमणी ललामा॥
उरोजोन्नती पीन वाहू विशाला।
कहोरी रशिक राम प्यारी दयाला॥
शुभग लंक लचनी कृशोदरि शुभागा।
कहोरी नवल नागरी वर अदागा॥
कदलि खम्भ जंघा कदलि पत्र प्रष्टी।

कहोरी सखी अंग जायासु अष्टी
सरस गुरु नितम्वी छिपी गुल्फ पादा।
कहौरी चरण जासु अम्बुज नवादा॥
निकुञ्जाष्ट विहरन अलिन मध्य जोरी।
कहौरी सिया स्वामिनी वयस थौरी॥
अली चारुशीलादि सव विध सुनीता।
कहौरी ललित नाम वैदेही सीता॥
जनक नंदनी, जानकी राम रशिका।
कहौरी सदा रंग मन्दिर सुवसिका॥
स्मारति विधात्री उमा कान्ति दमनी।
कहौरी शरण पालनी शोक शमनी॥
लली लाडली वल्लभा हंस गमनी।
कहौरी सदा नित्य साकेत रमणी॥
लता कंचनी प्रीतमा रंग रामा
कहौरी सुखद लाल नवला ललामा॥
महा सुन्दरी कोमलाँगी रषेशा।
कहौरी अली अग्र स्वामिन हमेशा॥
कृपावती अली प्राण संजीवनी जू।
कहौरी अली रक्षिका प्राणनी जू॥
सदा दिव्य भूषन वसन नील सारी।

कहौरी स्वकर नील अम्बुज उद्धारी ॥
महा माधुरी मोहिनी मोद रूपा ।
कहौरी अवध राज रानी अनूपा ॥
शृंगार माधुर्य्य छवि रूप सरिता ।
कहौरी अमित दिव्य गुण जासु चरिता ॥
महामाननी मन्द हंसनी प्रभावा ।
कहौरी सुयश जासु त्रैलोक छावा ॥
कहोरी कहो श्री सिया जू पिया जू ।
कहौरी कहो प्राण प्रीतम प्रिया जू ॥
यगुल नाम रशिकन के जीवन हमेशा ।
विहारिण रटै श्री सिया जू विशेषा ॥

विरह के पद

दादरा

(१६९)

बलम निरमोही अवध रसिया ।
नवल माधुरी जबसे देखी भई विहाल मारी मदन गसिया ॥ बलम ॥ निस दिन सजनी तलफत वीतै कसक नमिटेरी करों कसिया ॥ बलम ॥ अलि विहरणी को सिय प्यारी लगालै गले से मधुर हँसिया ॥ बलम ॥

विरहा

(१७०)

भई सो भई पर बोलिया न बोल। तुम निरमोही रूप गुमानी सुन्दर सरस कपोल योवन मेरी योंही गई॥ मैं विरहिन रहिजात नवस कछु तुम्हरी गति अनमोल कहा जिय प्यारे ढई। अलि विहरणी सिया स्वामिनी सत्य कहूँ कर खोलन दूजी कहूँ निरमई॥ पर बोलिया न बोल भई सो भई॥

सवैया

(१७१)

काह कहो सखि काह लिखों अरु काह करों चित चैन लहैना।
जानै हमारो हियोसिय स्वामिन औरन तीसर जान सकैना॥
ज्ञान विराग गयो सब भाग सुनेह कथा सुनि हीय सहैना।
काह दसा भई अलीविहारिण हाय सखी अति प्रीत करैना॥
जान लई सियस्वामिन की तोय मेरी सुप्रीत बड़ी हियमांही।
जैसी दसा हिय मैं भई मोर जू ऊपरहू तैसीदरसाहीं॥
तो विषई जन हाँस करैं अति मूर्ख सुप्रीत में जानत नाहीं।
तासै जवै करिहै दृगकोर सिया जू कृपा करिहैं तबही मिलें भेंटपसार भुजाहीं॥

———

मञ्जु

(१७२)

अब तौ नही सही जाती सखि प्रीत जुदाई केरी।
सिय स्वामिन जू जाने ताको प्रीत बड़ी अति मेरी॥
सत्य कहूँ छल छोड़ि अलीरी और न कछू चहेरी।
अलिविहारणी नाहि लगे अस प्रीत महा दुख सिन्धु कहेरी॥

दादरा

(१७३)

सिय पिय प्यारे दृगन दिखलाजा।
तुम बिन विरह विथा तन बाढ़ी दुख प्रद मदन जगाजा॥
जोवन जोर किशोर तुम्है विन हँस करिकंठ लगाजा।
अलि विहारणी करकी वीडी करि कटाक्ष पिय पाजा॥

दादरा

(१७४)

श्रीवैदेही बलम मन हर लीना॥
जब से देखी युगल माधुरी तबसे मदन जुलुम कीना।
छिनपल बीतत कल्प सरिस सखिनेह लगा करि दुखदीना॥
अलि विहारणी कासों कहिये विरह विथा तन अतिपीना।

16743

दादरा

(१७५)

छवि दिखला पियरवा किधर गयोरी।
जब से देखी युगल माधुरी विहंसन लखि मन हर गयोरी॥
श्रीवैदेही बल्लभ प्यारौ प्यारी अखियन भरि गयोरी।
दिन नहि चैंन रैन नहि निदिया विरहा नल तन जारि गयोरी॥
अबनहि निठुरकरौ पियाजियरा हियरालगि दुख टरि गयोरी।
हे दिलदार रशिक चूडामणि हाय व्यथा क्यों करि गयोरी॥
कोयल कूक पपीहा धुनि सुनि हूक मदन को ढर गयोरी।
श्रीकृपावती के प्राण जीवन धनचरण शरण अलि परिगयोर॥

दादरा

(१७६)

हिय हेरौ हमारौ हवाल पिया।
जबसे देखी अदा तिहारी मनमथ मोपै जुलुम किया॥
हाय हाय दिन रैन पुकारु अति कठोर भयो तेरो हिया।
एक वार मोह भेंट भुजन भर छैल छवीले रसिक रसिया।
अबनहिविलम लगावो रसीले अलि तनमन सबवारिदिया॥

मञ्जु

(१७७)

छवीले छैल लडैती लाल अली पर निठुर भये काहे।

काम क्रोध मद मोह लोभ सब निस दिन हिय दाहे ॥
बहुत विनय करि जानत नाही हौं सब विध पाहे ।
मन क्रम वचन विहारिणा तेरी कीजिये जो चाहे ॥

रेखता

(१७८)

थोड़ी अदा दिखाकर दिलदार कित गयौ ।
घायल पड़ी पुकारूँ बिरहा जुलुम कियौ ॥
मेरी हवाल लखिकै निठुराई ना धरौ ।
आकर गले से लगजा तन मन तुझे दयौ ॥
यदि लेना मंजूर जान आशकान की ।
तो लीजिये प्रशन्न अवन देर कर नयौ ॥
तरशाय प्राण आधे न लीजिए प्यारे ।
तुम हौ शनम हमारे अलि शरण तब लयौ ॥

रेखता

(१७९)

ऐसा हृदय कठोर नही कीजिये प्यारे ।
अब तो ऐ पतित प्राण दान लीजिए प्यारे ॥
प्रीतम अदा दिखाय नैन बान मार के ।

जाकर कहाँ छिपे हो दरस दीजिए प्यारे ॥
ऐसा स्वाभाव प्यारे क्यों लिया आपने ।
यदि बदल जाय आशिक तौ जीजिए प्यारे ॥
श्रीवैदेही वल्लभजू तन मन जीवन ।
सबविध विहारणीअलि सुख भींजिए प्यारे ॥

दादरा

(१८०)

पियरवा काहे करै बदनाम ।
नैन दिखाय अदा थोड़ी सी जाय छिपो किहँ धाम । मृदुमुसक्यान कृपान मार कैं लै गयो मन विन दाम ॥ छिन भरहू नाही सुधि भूलत तलफत आठों याम । तन धन भवनकान कुल कीरत भूल गई निज गाम । देखि देखिपुर पुरुष नारि सब हँसैं कहैं मन भाम ॥ जहर भरी चितवन जादू करि क्यों निरदई हो वाम । अलिविहारणी जानकी वल्लभ आहिय लग अभिराम ॥

दादरा

[१८१]

सिया प्यारी शनम जादू डारि गयौरी ।
भृकुटी कमान तानकर तिरछीदृग चितवन शरमार गयौरी ॥
बिन देखे नहि चैन सखी री विरह सिन्धु विचपार गयौरी ।

मृदु मुसकाय हाय निरमोही हूक मदन तन जार गयौरी ॥
सारी नील रंग जरकस कीकर गहि रसिया फार गयौरी ॥
अलि विहारणी विरह पीर दैस्वामिन ढिग दिलदार गयौरी ॥

कवित

(१८२)

जबसे निहारो दृग दिलवर तिहारो रूप तब से हमारो मन धीर ना धरत है। हाय कब लाय हिय नैनन सिराय मुख मृदु मुसकाय बचन अमृत झरत है ॥लावौ जोबेर तौ पै प्रान हानि वेर भई गये सब चैन विरहा आगि जिय जरत है। तनक छवि दिखाय महादुख उपजाय अलिफेर के दिखाय अब और का करत है ॥

मञ्जु

(१८३)

तलफत बहुत दिवस भये प्यारे सुनिये सिय सुखदानी।
मिहिरवान करि मिहर रँगीले आश कानकी वानी ॥
हाय हाय दिन रैन वितावत दृग वरसत नित पानी।
अली विहारिन खुशी रहै जो सो करि जो दिलठानी ॥
हम विषई तव रूप रंगीले नित नव चाह तिहारी।
ताहू पर दिलदार यार तुम मोरी सुरत विसारी।

तुम हो रसिक राय रघुनन्दन हौं अलि जनक दुलारी ।
दिलवर दिलकी जान न्याय करि नहिसिय पास सिधारी॥

गजल

(१८४)

प्रीतम तुम्हारी प्रीत में सब परि हरैंगे हम ।
सूरत की अदा देखि दृगन रस भरेंगे हम ॥
तकसीर माफ कीजिये मुझसे जोवनी हो ।
यदि ख्याल कीजिये तो नहि उघरेंगे हम ॥
अपनाय लीजिये सदा चरणों के शरण हूँ ।
नहि तोभवाब्धि ज्वालमें निसदिन जरैंगेहम॥
तुम्हारे बिना हितू हमार जक्त में नही ।
वैदेहि रशिक कृपाल कृपा से तरेंगे हम ॥
श्रीजानकी वल्लभ रशिक चूड़ामणी मधुर ।
वैदेही प्राण बल्लभ नित उच्चारेंगे हम ॥
दिनदिन विरहकी आगमें तन खाक हो चुका ।
अब तो चरण कमल की अली ह्वै ढरैंगे हम ॥

दादरा

(१८५)

रघुनन्दन समलिया पियरवा सखीरी चित चोर गयो ।

मृदु मुसकाय दिखाय साँवली सुरत हिय दुखदै गयौ ॥
खान पान नहि भावत तबसे जबसे तिरछी चितैं गयौ ॥
श्रीवैदेही बल्लभ प्यारौ अलि मम मन हर लै गयौ ॥

दादरा

(१८६)

श्रीवैदेही बल्लभ पियरवा दरस दिखलाजा।
मुख शशि बचन सुनाय सुधासम हिय की तपन बुझजा॥
लोक लाज मर्याद त्याग सब साज फकीरी साजा।
अलि स्वामिनी श्रीवैदेही पिय नयनन बीच समाजा॥

गजल

(१८७)

सनम तुम आज अपने दिल में हमसे क्यों जुदाई की।
तनक हँसि बोलकर कह दो कि हमने क्या बुराई की॥
तुम्हारी दोस्ती मैं यार बैठे शीश खोने को।
हमारी प्रीत थी सच्ची मगर तुमने दुराई की॥
लगाकर सेज सारी रात देखी राह दिलवर की।
न आये ना हँसे बोले कहो हम क्या बुराई की॥
जरासी बात हमरी पर किया तुम दिलको दीवाना।
तुम्हारी बात लाखों पर विहारिण कर जुराई की॥

दादरा कहरवा

(१८८)

वैदेही रशिक सरकार निठुर चित काहे करौ।
दीन मलीन अली चरनन की राखत आस अपार सकल अपराध हरो ॥ वैदेही ॥

शैर

माफ कीजिये जो तकसीर बनी मेरे से।
काम क्रोध मोह लोभ रैन दिवस घेरे से ॥
कृपा की कोर लखो मेरी ओर चितचोर जरा।
युगल पाद पद्म शरण आस यही नेम धरा ॥
पिय भूलो न सुरत हमार निठुरचित काहे करो।

शैर

इक इश्कपीर सनम तुम्हीं जानने वाले।
तुमहिं कहन मेरे की याकीन माननें वाले ॥
परी हूँ इश्क फेरे में बेर कीजे ना।
लैना मंजूर जान आसिक क्यों लीजे ना ॥
आमोहन गले भुज डारि निठुर चित काहे करो ।

शैर

कितौ तूँही आप सूरत टुक दिखला जा रे।

तरसत दोउ नैन रूप माधुरी पिला जा रे ॥
दरस आसा दृग प्यास जनक लखी रशिक रास।
पूरन पिय कीजे है जबलों यह घट में स्वाँस ॥
अलि विहारणी विथा निवारणी पिया प्रीतम।
करिहाहाविनय जियधारि निठुरचित काहे करो ॥
वैदेही रशिक सरकार ॥

धुनि कहरवा में

(१८६)

मोय प्यारे गले से लगाय लै रे ॥
काम क्रोध मद मोह लोभ को दृग सर मार भगाय दै रे।
मोह नींद में जो मन सोवै कृपा पठाय जगाय दै रे ॥
श्रीचारुशीला श्री कृपावती पद पंकज प्रीति बढाय दै रे।
श्रीकनकभवनसियजू मम स्वामिन दृगभरि रूप छकाय दै रे।
विरहा नल तन दह निसवासर ताको वेग मिटाय दै रे।
अलिविहारणी को या भव से वेग पिया बुलवाय लै रे ॥

गजल

(१९०)

अदा सिया श्याम सुन्दर की जिगर सेना निकलती है।
बिना देखे प्रिया प्रीतम हृदय ना धीर धरती है ॥

सरस चितवन मधुर विहँसन अधर नासामणी डोलन।
भुकन सिय ओर पियजू कीं सिया पिय ओर ढरतीं है॥
लटक शिर कृीट कलगी की सिया जू ओर अति प्यारी।
पिया की ओर सिया जू की चन्द्रिका चित्त हरती है॥
शुभग गलवाँहि दै बैठन कमल फेरन करन नीकी।
सखी मोरी ललित जोरी लखे विन स्वाँस भरती है॥
सिया जू स्वामिनी मोरी पिया मम प्रान धन जीवन।
बसो सजनी सदा आँखिन विहारिण पायँ परती हैं॥

पद बिहाग में

(१९१)

रसिया अब मोय क्यों तरसाय।
विन देखे जुग रूप माधुरी छिन छिन कल्प विताय॥
हे श्रीवैदेही वल्लभ जू रशिकन को सुख दाय।
काम क्रोध मद लोभ सवन से लीजे वेग छुटाय॥
रहूँ दिवस निस पद पंकज मैं दंपति लेऊँ बलाय।
महल श्रीचारुशीला कुञ्जन की अली सदां मनभाय॥
रसिया अबमोय क्यों तरसाय॥

मञ्जु

(१९२)

हे श्रीवैदेही बल्लभ जू क्यों हमको तरसाते हौ।

बोलन चितवन हँसन रसीली चलन गयन्द लजाते हौ ॥
रूप देख रति पति के उरमें अधिक लाज उमगाते हौ ।
रहौ सदा चिरजीव युगल वर अली सदा मन भाते हौ ॥

गजल

[१९३]

वरछी से मत मारो हमें चितवन के मारे मर चुके ।
कोयला कि आगी मत जरावो विरह आगी जर चुके ॥
लाख हों बदनामियाँ हमने सहीं दिलदार पर ।
क्या फजीहत कोइ करै हम खुद फजीहत हो चुके ॥
लोग समझाते हमें तुम छोड़ दो इस इश्क को ।
तगदीर के पाँसा हमारे परने थे सो पर चुके ॥
जप जोग भक्ती ज्ञान ध्यान करना चहे पर नहि भये ।
श्रीजानकी बल्लभ कृपा संसार सागर तर चुके ॥
प्रारब्ध संचित कर्म निज निज दावहित बाधा करैं ।
हिय विच विहारिण टेक रशिक अनन्य ताहड धरिचुके ॥

दादरा

(१९४)

दृगन छवि अटकी सिया बल्लभ की ।
श्रीचारुशीला की कृपाकोर से रंग महल सुल्लभ की ॥

कर्म ज्ञान वैराग्य मुक्ति वर त्याग आस फल्लभ की ।
बिन देखे अलियुगल माधुरी कलन एक पल्लभ की ॥

रेखता

(१९५)

प्रीतम तुम्हारी प्रीत प्रान हरन सत्य है ॥
तेरी सनम मुहब्बत पर त्याग सब चुका ।
अबजरा कहो तो कुछक्या करना सत्य है॥
इस जक्त में हजारों बदनामियां भईं ।
आओ गले लगालो अलि सरन सत्य है ॥

गजल

(१९६)

कदा वैदेही वल्लभ जू कृपा करि हिए भेंटोगे ।
कदा दोउ रूप बस हिय में महातम मोह मेंटोगे ॥
कदा नितकेलि कुञ्जन में हमारे साथ डोलौगे ।
कदा प्यारी अली कहके विहँस मृदु हमसे बोलौंगे॥
कदा श्रीचारुशीला जू सुभग स्वामिन सदा मोरी ।
कदा कहिहैं कि तूँ मेरी अहूँ में स्वामिनी तोरी ॥
कदा श्रीमत्कृपावति जू लपटि भरि अंक लेवेंगीं ।

कदा कर कंज ममसिर पर परसि अति मोद देवेंगीं ॥
कदा श्रीरंग मन्दिर में महा रस रास छबि देखों।
कदा निज रूप सुख लहि के रमारति रूप लघु लेखों ॥
कदा दंपति छके रस में परस्पर पान पावैंगे।
बिहारिणी पीकदानी कर युगल झुकिपीक नावैंगें ॥
सुदिन शुभ सो कदा प्यारी जदा सिय चरण शिरधारी।
सिया निज गोद बैठारी करै हिय लाय अति प्यारी ॥
लखैं आनन्द सुखकारी कहैं तुमते नमें न्यारी।
तू मेरे हृदय में प्यारी जो मैं हूँ सो तूँ सुकुमारी ॥
पुनः करकंज शिरधारी विविध भूषन से शृंगारी।
बदन को चूम सुखभारी निरख के रूप बलिहारी ॥
सुदिन आली सुभग कारी कदा ह्वै है सुमन हारी।
कदा सिय लै हिए धारी मुदित सिर सूँघती प्यारी ॥
सुकर नक मुक्त का धारो सिरन वन्दी सुदुति कारी।
लखैं मुख इन्दु दुतिहारी करैं भूषन वसन वारी ॥
ललित ताँम्बूल चख प्यारी पवावें प्रेम भर वारी।
बहुर बहु विधतैं चुचकारी कहैं तूँ मम दृगन तारी ॥
भगनि तूँ प्राण की प्यारी सदां मेरी री सुकमारी ॥
निरख सिय सील सखि भारी मुदित जय जयति उच्चारी।
गुणन की तेरी बलिहारी रसिक प्रीतम कि मनहारी ॥

तुम्हारे सम तुम्ही प्यारी कहैं अस सुघर सब नारी ॥
समय यह निरख सुखकारी कहोंगी स्वामिनी म्हारी।
करौ निज चरण कीचारी तथास्तू कह्यो सिय प्यरी ॥

दादरा

(१९७)

सिया जू कब लै हौ भरि अंक ॥
हिय लगाय हुलराय विविध विध लखिहौ बदन मयंक।
लै निजकर मम श्रवण सुहावन पहिरइहौ ताटंक ॥
कहिहो मधुर बचन लघुभगिनी तू है मम निःशंक।
सुनि सुख लहों रूप तव अनुपम लखों मनहु धन रंक ॥
अलिबिहारिणी अवलोकँहुँगी रशिकराय दृग वंक।सियाजू।

दादरा

(१९८)

सिया जू कबहिथ आस पुजैहौ।
अलि गण मध्य तिकुंज भवन में जब बहुविध दुलरैहौ ॥
भुज भर सजल नैन सिय प्यारी पुनि पुनि हृदय लगैहौ।
कोमल कर दुहुँफेर शीश पर बार बार बलि जैहौ ॥
निज नख शिष वर वसन विभूषन निजकर मोय पहिरैहौ।
पिया सुहाग भाग की भाजन वैंदी ललित लगैहो ॥

अर्ध चन्द सिन्दूर भाल बिचनाशा मणि छबिछैहौ।
कज्जल नैन लगाय चन्द्रका अपनी ओर भुकैहौ॥
निज मुख गत ताम्बूल बीटका पुलकित मोय खवैहौ।
पुनि पुनि दोउ कपोल कर फेरन पुनि पुनि चुम्बन लैहौ॥
ऐना ललित दिखाय बिहँस मुख बचन सुधा रस प्यैहौ।
मेरी प्राण पियारी बहिनी अस कहि विहँस बतैहौ॥
लघु भगनी प्रिय अलिबिहारणी को कब पास बुलैहौ।
मिथला से अम्बाकी भेजी चुँनरी हमँहिं उढैहौ॥
मेरी तें तेरी में सब बिधि निशि दिन नेरी रैहौ।
रैन सैन संग सेज केलि सुख प्रीतम सँग दिखरैहौ॥
सर्वेश्वरी श्रीचारुशीला ढिंग परिवौ पाँयँ सिखैहौ।
पुनि पुनि कृपा दृष्ठि मुख देखत कवँहुँन विहिन अघैहौ॥
प्रीतम सँग जिवनार समय मैं निजकर ग्रास पवैहौ।
मंडल रास मध्यकर घर मम बहुविध नृत्य करैहौ॥
अलि विहारणी प्राण जीवन धन बिछुरन तपन बुझैहौ॥

श्रीरूप माधुरी मञ्जु

(१९९)

श्रीकनकभवन राजैं पियप्यारी रस निधिरघुवर जनक दुलारी।
दिव्य सिंघासन मणिमयशोभित सकलसौंज सुखमा अतिभारी॥

सिर पर क्रीट चन्द्रका सोहै मन मोहै चितवन अनयारी।
मृदु मुसक्यान दिये गल बाँहीं नीलपीत अम्बुज कर धारी॥
श्रीसर्वेश्वरी चारुशीलाजू कर विच मुरछल ललित सम्हारी।
श्रीकृपावती जू चवँर चलावैं कामदलता छत्र छवि न्यारी॥
श्रीअग्रअलीकर विजन सुधारें रूपलता जुग रूप निहारी।
श्रीरशिकअली दर्पन लीन्हे करमाधुर्य्या धनुबान सुखारी॥
श्रीसौभाग्यलता कर सोहै अतर दान सौगंधित ढ़ारी।
चन्द्रकला कर पान दान वरलता अंग अंगन सुकुमारी॥
अलीविहारिण पीकदान की सेवा लिए खड़ी सुखकारी।
श्रीवैदेही बल्लभ जू की नित नव जय जय शब्द उचारी॥

दादरा

(२००)

रस मातीं नवल तेरीं आँखें पिया।
श्याम स्वेत अरुणारीं बड़रीं अमी हलाहल मदलसिया।
लेहिकी ओर तनक हँसि हेरत तन मन घायल करत हिया॥
जियत मरत झुक झुक कें कहरत मानौं कलेजाकतल किया।
श्रीवैदेही बल्लभ प्यारे अलीं विहारिण प्राण जिया॥
रस मातीं बलम तोरी आँखें पिया।

दादरा

(२०१)

वैदेही बल्लभ काहे जुलुम किया।

रति मन मथशत कोटि अमित छवि स्याम गौर तन दुतिल सिया। नील पीतकर कञ्ज मंजु मृदु फेरत हेरत हरत हिया। श्रीकनक भवन निकुंजमधि बैठे प्रीतम प्यारी सिया पिया। श्रीचारुशीलाके प्राण जिवनधन अलितन मन सब वारदिया॥

दादरा कहरवा

(२०२)

मन भावै हमें सखि सिया पिया॥

गल बाँही दोऊ दै बैठे रङ्ग महल सुख सेजरिया। अनुरागिन रशिकन जीवन धन निशिदिन विहरत हिया हिया॥ सब विधि अगम सुगम एकै विधि जिन जाना तिन जान लिया। श्रीवैदेही बल्लभ छबि ऊपर तन मन सब अलिवार दिया॥ मन भावै हमें सखि सिया पिया॥

दादरा कहरवा

(२०३)

सिया प्यारी सखीरी हमारी बलम॥

रशिक रसीलौ छैल छबीलौ गुन गरवीलौ रंग रलम् ।।
जोवन मद मातौ विहँसत मुखचितवन में चित लेत छलम् ।
मदनलजावन अतिछवि छावन मनभावन रसराज भलम् ।।
बिन देखे सिय बल्लभ आली बीतत कल्प समान पलम् ।।

दादरा कहरवा

(२०४)

सिय प्यारी हमारी सुभग स्वामिन ।
अनुरागिनि बड़भागिनि सेवित हमसीधन्य कोटि कामिन ।
जनक किशोरी पिय चित चोरी गोरो तन लाजत दामिन ।।
श्रीकनकभवनसुखसदनमदन रतिलखिलाजतकरिवरगामिन।
श्रीवैदेही लाल सनेही अलिविहारणी अभिरामिन ।।

दादरा कहरवा

(२०५)

सियाप्यारी हमारी विदेहलली ।।चितवनमें रंगीलेललनकोछली।
श्याम सरोज सुभग पिय सुन्दर सिय जू सुन्दरि चम्पकली।।
पिय जू से करुणा सियजू में अधिक बसै यह सत्य अली ।
अली भली मिथलेश लली सम नहि जन्मी ब्रम्हाड थली ।।
उमारमा सेवत पद जाके सबकी स्वामिन वेद रली ।
जाकी कृपा कटाक्ष विहारिण सुख द्रुम लतिकास फलफली ।।

रँगीली धुनि

(१०६)

रसीली प्यारी चितवन कृपा की कोर की।
निहारूँ सदाई मैं लेवों वलाई छबि दृगन समाई जुगल किशोर की॥ सिया जू पिया जू बसो मोहिया जू शरन मैं लिया जू कहूँ निहोर की। महल में बुलावो जुगल सुख दिखावो विहारिण न लावो विलम थोर की॥

दादरा

(२०७)

किशोरी जू के नैनन में करुणा वसाय॥
बल्लभजू से अधिक सियाजू शरण पालनी मोददैनी लखाय।
मंद मलिन अति नीच आसुरी कपिवर जू सें लईं बचाय॥
श्यामस्वेत अरुण भई छाई सखी रेख काजरकी चुभीचित हाय।
तबहीसे दिन रैन विहारिणीलडैती संगरहिवोहमारे हियभाय॥

गजल

(१०८)

रंग भरी जोरी बसी चश्मों में सिय दिलदार की।
देखकर दिलवर की सोभा जक्त छबि वेसार की॥
श्रीजानकी बल्लभ युगल सम कोई नही इस खल्क में।
रुपकी सुकमारता लखि अल्प दुति रति मार की॥

जिसको जो भावै सो कीजे चाह जिसको ध्याइए।
पै नवल नित सुख जो चाहो श्रीनिकुञ्ज बिहारको॥
तौ शरण मेरे सनम श्रीवैदेही बल्लभ के रहो।
श्रीचारुशीला श्रीकृपावती स्वामिनी उरहार की॥
एहि हैं आचार्य हमरी श्रीकनक भवन बिहार की।
श्रीमती कामदलता श्रीअग्रअलि मुदकार की॥
श्रीप्रसादा श्रीरशिक अलि निवास निकुञ्ज में।
अमित परि कर अलि बिहारिणि ध्यान रंग अगार की॥

पद देस में

(२०६)

सिया जू गोरी श्यामल राज कुमार।
देखि सखी झाँकी बाँको अति दम्पति रूप उदार॥
अमित रती मनमथ मन मोहत रशिकन के हिय हार।
श्रीचारुशीला श्रीकृपावती कर वीडी बदन सम्हार॥
श्रीवैदेही बल्लभ रस निधि चिर जीवौ सरकार।
श्रीजुगल किशोर किशोरीजू की पीकदानि अलिधार॥

कवित

(११०)

माधुरी हँसन मंद चितवन कृपा की भरी तिलक सुरेस

सिर टोपी जर तारी की। कुण्डल कलित वर जामा सुहाव नोरी दुपटा अमोल मणि भूषन सम्हारी की ॥ कोटिन मनोज के गुमान हरत वीर तीर धनु कबहुँकर कमल कर उछारी की। रतन सिंघासन पै आसन निहार आली झाँकी अति बाँकी श्री विदेह जा विहारी की ॥

कवित

(१११)

तिलक ललाट बरविंद अर्धचन्द्र जुत कर्णफूल वन्दी वर चन्द्रका सम्हारी की। नासामणि वेसर विलोक मुसकान मृदु चितवन कृपा की रसो दधि सुखारो की ॥ हृदय वरहार नव कंठी कंचुकी सुधारि चूरी कर हेम तार साड़ी नील धारी की। श्रीजनक दुलारी छबि अदभुत अनूप अति कहो जयति वैदेही स्वामिनी हमारी की ॥

पद राग रामकली

(२१२)

सिया ललित लडैली जानकी।
श्रीनिमिवंस उजागरि नागरि जीवन धन प्रिय प्रान की ॥
कनक भवन नितरास रसीली ललित सप्त स्वर गान की।
अष्ट निकुंज बिहार नित्य सुख अगणित रति छबिखान की ॥

पिय प्यारी गलबाँह दिये दोउ अति प्रिय मृदु मुसकानकी।
श्रीवैदेही वल्लभ दंपति नव किशोर वयमान की॥
श्रीचारुशीला की प्राण जीवन धन कृपावती सुखखान की।
गौर श्याम मनहरण रूप दुति नहिं जग समता आन की॥
क्रीट चन्द्रकादिक नव भूषण लाजत दुति शशिभान की।
चितवन में चितहरत परस पर अलिकर पावन पान की॥
शरणागत की सदाँ रक्षिका जन्म मरण दुख हान की।
श्रीमिथलेश किशोरी प्यारी अधम उधारन बानकी॥
जन रंजन भंजन भव रुज सब हृदय प्रीत पहिचान की।
अलिबिहारणी की सिया स्वामिन नासन जक्त गलान की॥

पद विहाग में

(२१३)

बसौ मेरी आँखिन मैं सियलाल॥
तन मन प्राण जीवन धन सर्वस प्रभू शरणागत पाल॥
श्रीरस राज कुंज सर्वेश्वरि श्रीचारुशीला प्रिय बाल।
कृपारूपणी कृपाकोर करि कृपावती मुद माल॥
कनक भवन सुख सदन बिहारी रंग महल सुख जाल।
श्री प्रमोद शृंगार विपिन मधि नित्य बिहार रसाल॥
श्रीप्रसाद श्रीचन्द्रकला जू इन्दु विन्दु लिख भाल।

श्रीवैदेही बल्लभ छवि पर तन मन अली निहाल ॥

दादरा रँगोली धुनि

[२१४]

पनघट की ओर ठाड़ो अवध कौ छैला ॥

ठाड़ो अवध कौ छैला अवध कौ छैला रशिक अलबेला छेड़ै मोरी गैला हँस हरै हिया मोर ॥ ठाड़ो ॥सजनी मदन मत वारौ सिया प्राण प्यारौ नयन शर मारौ बिरहा अति जोर ॥ ठाड़ो ॥ सुन्दर तिलक शिर सोहै मदन मन मोहै तनक दृग जोहै रशिकन चितचोर ॥ ठाड़ो ॥ ऐसौ समय जो पाँऊँ गले से लगाऊँ अली ना भुलाऊँ जग की भय तोर ॥ ठाड़ो अवध कौ छैला पनघट की ओर ॥

झोलना छन्द

(२१५)

छबीले लाल छबीली बाल छबीली चारुशीला प्यारी ॥ छबीली मौज छबीली सौंज छबीली कुंज बनी भारी ॥ छबीली केलि छबीली मेल छबीली सैल छटा न्यारी। छबीली सैन छबीले नैन छबीले बैन सुधाकारी ॥ छबीली प्रीत छबीली रीत छबीली झुंड अली सारी। छबीली सीय छबीले पीय रँगीली सीय रँगीले पीय रसीली-

सीय रसीले षीय बिहारिण छवि पर बलिहारो ॥

(२१६)

छवि देखो सिया जू किशोरी की ॥
चन्द्रका अनेक चन्द्र सूर्य को लजाती है।
चितवन कृपा भरी हिये में समाती है ॥
द्युति दामिनी लजायें अंग गोरी की ॥ छवि देखो ॥
एक हाँथ प्रीतम के कंठ में सुहावैरी।
एक नील कंज फिरन चित्त को लुभावैरी ॥
मृदु हांसी पिया चितचोरी की ॥ छवि देखो ॥
प्यारे के अंक बाम भाग छटा छाती है।
श्रीचारुशीला करसेमुख बीड़िया चवाती है।
श्रीमती कृपावती जू चमर को चलाती है ॥
चन्द्रकला श्रीप्रसादा छत्र को फिराती है।
अली लेतीं बलैंयाँ सुजोरी की ॥ छवि देखो ॥

घनाक्षरी कवित

(२१७)

पहरें पग नूपुर उर, तोड़ा कडा संग तापर पीताँम्बर कटि में छवि रोपी है। जामा उर दुपटा गोप गुंज माल गरे कुंडल कपोलन पै उपमा सब लोपी है। तिलक भाल अर्ध-

चन्द्र विन्दु युत नासामणि दसन मंद हँसन नैसुदामिनि छवि छोपी है। जुलफैं घुँघरारीं श्रीघैंदेही बल्लभ जूकीं तापै यह रँगीली सोहै जरीदार टोपी है॥ ❀

दादरा

(२१८)

रशिक मणि प्यारो हमारो सखी यार।

मृदु मुसक्यान चपल चितवन में जुलम करै चुरायो चित प्रीतम हमार॥ कोट काम निवछावर छवि पै किशोरी जू प्यारी हमारी सरकार॥ रसिकन के जीवन धन दोऊ करत नईं नइँ कला अपार॥ अलि बिहारणी चारुशीलाजू कृपावती ऊपर सब तन मन बलिहार॥

रँगीली धुनि

(२१९)

देखोरी गोरो जोरी री कुञ्जन में सोहै री।

छबि श्याम गौर मन भाई, मुसक्यान मंद सुखदाई, शिरक्रीट चन्द्रका दीन्है, कर कमलन अम्बुज लीन्हैं री॥ जुग रेख तिलक सिर सोहै बिच अर्धचन्द्र मन मो है-श्रीरेख

❀ यह कवित एक भक्त ने टोपी बनाकर भेजी थी उसी पर निर्माण किया था।

विन्दु छवि न्यारी खौरी की शोभा क्यारी। पट नील पीत तनु धारे भूषन नख सिख सज सजे सारे॥ दृग चितवन की बलिहारी जुलफों की छहरन प्यारी री॥ श्रीचारुशीला दिक राजै, श्रीकृपावती सुख साजैं, लखिकें रति पति मद भाजैं मम धन्य भाग अलि आजैरी॥

गजल

(१२०)

रशिक वर श्रीजुगल सरकार हिय के हार आली री।
निरख छवि कोटिशत लाजैं सहित रति मार आली री॥
दिये शिर चन्द्रका टोपी जुलुफ घुघरार आली री।
श्रवन वर फूल अरु कुंडल तिलक सुखकार आली री॥
सकल अंग सोहते भूषन वसन जरतार आली री।
हँसन चितवन चलन बोलन कथन से पार आली री॥
दिये गलबाँह बैठे हैं कनक आगार आली री।
बिहारिण नित नवल गावैं सुजस रसदार आली री॥

गजल

(१२१)

चश्म भरि देखौ अली छबि श्रीलडैती लाल की।

क्या कहूँ सुखमा अनोखी कंठ मुक्ता मालकी ॥
कीट कुंडल चन्द्रका कलगी झुकी दुहुँ ओर से।
और नख सिख सप्त नव भूषन वसन सुख जाल की॥
खौरि युत रेखैं तिलक कीं अर्धचन्द्र सुविन्दु वर।
रेख श्रीअद्भुत लगी शोभा युगल वर माल की॥
प्राण बल्लभ वाम अंक विदेह नन्दनि जू लसें।
एक कर गलबाँह दीन्हैं एक पंकज नाल की॥
मृदु हंसन बोलन चलन चितवन कृपा रस की भरी।
श्रीमती श्रीचारुशीला श्रीकृपावती बाल की॥
चँवँर छत्र अनेक सौंज कमल करन बहु अलि सजे॥
पीकदानी कर बिहारिणि जयति रशिक कृपाल की॥

पद सोंहनी

(२२२)

श्रीवैदेही बल्लभ जू प्यारे चश्मों में वसे वीर॥ चश्मों में बसे वीर॥ मुसक्यान मंद अति भाई, चितवन रस कृपा भराई, गलबाँह की सोभा क्यारे॥ श्रीचारुशीला संगराजैं, श्रीकृपावती सुख साजैं, निज निज कर सौंज सुधारे॥ चश्मों में बसे वीर॥ श्रीकनक भवन रंग जोरी, चिरजीवो जीवन मोरी, अलि कृपा मिले सुखसारे चश्मों में बसे वीर॥

दादरा

(२२३)

वैदेही बलम चितचोरै सखी।
भृकुटी धनुष तान श्रवनन तक दृग चितवन शर जोरै सखी।
तक तक मारत हारत नाही ऐसौ निठुर कठोरै सखी॥
बायल करि मुसक्यात मजे से माधुर्य्या दधि बोरै सखी।
रहस विहारणी मान करहिं जब दोउ करजोरै निहोरै सखी॥

दादरा लैदार

(२२४)

मन भाई हँसन सुकुमारी की। सुकुमारी सिय प्यारी की॥

शेर

प्रीतम के संग बैठ कैं गल बाँह दिए कुञ्जन में॥
कनक भवन में नवल केलि नित विहार गुञ्जन में॥
अंग गोरी कोटि दामनी प्रभा प्रकासी है।
चितवन कृपा भरी महान सुख विलासी है॥
छवि छाई नवल अंग सारी की॥मन लाई हँसन॥
उन्नत सुभाल अर्धचन्द विन्दु सहित सोहैरी।
गोरोचन जुगल रेख खोरि चित्त मोहै री॥
सिन्दूर रेख माँग में सौभाग की सुहाई है।

किर्णा जाल चन्दका की रवि प्रभा लजाई है ॥
कलगी की झुकनि सुख भारी की॥ मन भाई हँसन॥
नख सिख वसन विभूषन अँग सुहातरी सखी।
देखि करि अनेक काम भामनी लजात री सखी ॥
सिय जू को तप्त हेम चंप सरिस गात री सखी।
वर्वन मुखपान की सुदेखि पिय लुभात री सखी ॥
धनि जीवन विहारणी विहारी की अलि मैं हूँ शरण
मतवारी की ॥ मन भाई हँसन सिय प्यारी की ॥

दादरा लैदार

(२२५)

मोहि हरदम हँसन हिये खट कै री ॥
श्रीवैदेही बल्लभ लालन सो हिय से नहि छटकै री ॥मोहि॥
चितवन चारु उदार कृपाकीजुलुफ जाल मन भटकैरी॥मोहि॥
गोल कपोल श्याम दुति झलकत मणि नासा अधर पर
लटकै री ॥ मोहि ॥ अलि विहारणी बिन सिय बल्लभ अपर
प्रीत जग भटकैरी ॥ मोहि ॥

पद विहाग में

(२२६)

बसौ मेरे नयनन अग्र किशोरी ॥

अति सुकमारी स्यामा सिया जू वय किशोर छवि गोरी ॥
सारी झीन खीन कटिवारी कंचुकी कुचदर सोरी। बसौ॥
मंद मधुर मुसक्यान प्यारी चितवन चाव भरोरी ॥ बसौ ॥
लचि लचि जात लंक केहरिसी सुखमा नवल घरोरी ॥बसौ ॥
सानुकूल श्रीललित चन्द्रका झुकी पिया की ओरी ॥ बसौ ॥
श्रीसौभाग विन्दु मनमोहत अर्धचन्द्र चितचोरी ॥ बसौ ॥
कंज खंज्ज मृग मीन लजावन बड़ अँखियन मद बोरी। बसो॥

छन्द

सुक नासिका सुहाई वेसर जटित मनी ॥
अधरन बुलाक डोलै जनु हंस शिशु बनो।
वीरी पिया सुकर की चरवन कहूँ में क्या ॥
कर नील पद्म लीन्है बैठीं लिपट पिया।
गलभुज माल लाल के दीन्है अदभुत छवि यह जोरी ॥बसो॥

शेर

पगतल अरुण रसीले चालीस अष्ट चिन्ह।
जावक लगो सुहावन मिहंदी छटा सुभिन्न ॥
पद पोस पैंजनी कड़ा छड़ा सुहावनें।
नूपुरसु पायजेव प्रभा रवि लजावनें ॥
अनवटबिछिया छल्ला अँगुरिन रशिकन चित्तथकोरी॥बसौ॥

शैर

कोटन उमा रमा सची निहार रूप को ॥
रति के सहित लजाय मग्न मोहे रूप को ॥
अदभुद अनूप रूप छवी को सकै बखान ।
सब प्राप्ति श्रीविदेह नन्दनी कृपाप्रधान ॥
अलिबिहारणी नवल छबीली ममहिय से न टरोरी ॥ बसौ ॥

मञ्जु

[२२७]

हमारे श्रीवैदेही बल्लभ प्यारे नयनन तारे हैं ।
रंगीले ठसकीले चितचोर अलिन विच मद मतवारे हैं ॥
लजत रतिकाम देखि छबिश्याम गौर तनदाम सिया प्यारी।
मत्त गज चाल तिलक छवि भाल युगल गलबहियाँ धारे हैं ॥
सजे नव सात, विभूषन गात दिष्ट दरसात सुछबि भारी ।
दिये शिरताज चन्द्रका राजवार चिक्कन घुंघरारे हैं ॥
चरण युतरेख, जू चाहे देखि नील अरुपीत अरुण तल हैं ।
सुजावक रेख लगी दृगपेखि सुनुपुर युत अति प्यारे हैं ॥
अली श्रीचारुशाला सिर मोर मोर छल सौंज सुछविकर में ।
कृपावती चमर करत सिय ओर अपर अलि सौंज समारे हैं ॥
करै सखी गान लेत कोऊ तान देत कोऊ ताल पखावज में ।

बजावत बीन सप्त स्वर झीन नाचतीं कला अपारे हैं ॥
सदा यह नित नव रास विलास महा श्रीकनकभवन सोहै ।
देखो है जिन तिनके बड़भाग कहत शेषादिक हारे हैं ॥
लहयो सखि रूप निकस भव कूप भई श्रीअग्र कृपा जिनपर ।
विहारिण के जिय की जो जानी सोई संसार सुखारे हैं ॥

कवित सिंहावलोकन

(२२८)

ताकी तमाम महाननमें उपमा न मली छबि के सम जाकी ।
जाकी सदा पद पंकज कीरज की महिमा कहि वेदहु थाकी ॥
थाकी गती सहसानन की कमला रति दामिन की छबि झाकी ।
झाकी अलीअखियाँ हमरी लखि के मुसक्यान विदेह सुताकी ॥

सांगीत

(२२९)

अली सिय पिय की मधुर मुसक्यान री चिरजीवो जुगल रस खान री । दृग चितवन करुण भरी जुलफन में जुलुम सर सान री ॥ सिंघ ठवन प्यारी लगे गलबाँही दिये सुख दान री । झाँकी रशिक जुग चन्द की अति भावत विहारिण प्रान की ॥

पद देस में

(२३०)

छबीले श्रीवैदेही प्राण बल्लभ लाल ।
बाँकी चितवन हँसन रसीली बाँकी ऊर बन माल ॥
सर्वेश्वरी श्रीचारुशीला जू श्रीकृपावती सुख जाल ।
कनकभवन श्रीरंग महल बिच सुभग निकुंज रसाल ॥
विहरत जुगलकिशोर किशोरी लखि छबि अली निहाल ।
चिरजीवौ जोरी रँग बोरी रशिक सुहाग सुभाल ॥

पद दस में

(२३१)

बनी बाँकी झाँकी श्यामा श्याम ।
बाँकी कनक भवन की शोभा बाँकी कुंज ललाम ॥
बाँकी गलबहियाँ दोउ दीन्हैं बिहरत नव सुख धाम ।
बाँकी श्रीचारुशीला अलिबेली कृपावती अभिराम ॥
श्रीवैदेही बल्लभ प्यारे लाल लाडली नाम ।
बाँकी मृदुमुसक्यानि बसी हिय अलि सुख आठौ याम ॥

छन्द झोलना

(२३२)

वैदेही बल्लभ पर वारी तन मन धन सब सुख सारी ।

मृदु मुसक्यान अनोखी चितवन कतल करै जुलफन कारी ॥
क्रीट चन्द्रका कर्णफूल वर कुंडल तिलक रेखधारी ।
सुभग नासिका छबिवेसर पुन नासा मणि सुखमा भारी ॥
नील पीत अम्बुज कर धारे गलबहियाँ दोन्है प्यारी ।
कंठा कंठ गोप कौस्तुभ मणि पदिक हार शोभा न्यारी ॥
कटि किंकिणी पैजनी नूपुर मणि भूषन नख सिख झारी ।
बसन विचित्र सुरंग पिया के सारी नील हेम तारी ॥
जुगल किशोर किशोरी छबि पर कोटि काम रति बलिहारी
अलिबिहारणी की प्रिय जोरी छिन पल कबहुँ न हो न्यारी ॥

पद विहाग में

(२३३)

छबीली छवि निरखौ लडैती लाल की ।
गलबहियाँ दीन्है बैठे दोउ छबी चन्द्रका क्रीट पुस्प मालकी ॥
मृदु मुसक्यान रसीली चितवन फसन चित्त सजनी नवेली
बाल की । सर्वेश्वरी श्रीचारुशीला जू पिया कान लगि बात
कहैं ख्याल की ॥ श्रीमत्कृपावती जू परसें करन से मधुर-
तासु जुगल गाल की । झुकि झुकि पान पीक मुख गेरत
लिये पीकदानी अलीशरण पालकी ॥ छबीली छबि० ॥

गजल

(२३१)

लेखरी सबसे अधिक, सौभाग्य रेखा भाल की।
बाँकी चितवन रस भरी मुसक्यान बाँकी अति मधुर॥
बाँकी जुलफैं मारनी बाँकी ढरनि गल माल की।
बाँकी कलगी चन्द्रका शिर क्रीट की बाँकी झुकनि॥
बाँकी नासा मणि अधर बाँकी भृकुटि जनपाल की।
बाँकी रेखा तिलक गोरो चन तडित द्युति लजाती॥
अर्धचन्द्र सुविन्दु श्रीबाँकी छबि रँग लाल की।
खौरि केशर आस पास बिचित्र शिर पर लसत है॥
कर्णफूल मयूर कुंडल अलक नागिन चाल की।
नील पीत दुकूल नख शिख जटित नग भूषन सजे॥
परस्पर गलबाँहिं दीन्हैं करन पंकज ख्याल की।
कनक भवन विचित्र सिंघासन सुभग बैठे दोऊ॥
श्रीचारुशीला चूमती बाँकी मधुरता गाल की।
चौर छत्रादिक सकल वर सौंज अगणित कर लिये॥
श्रीकृपावती सकल सखी गावति बजावति ताल की।
कोउ नवल नवला रँगीली तान लेकर नाचतीं॥
अंग मोरन ग्रीव फेरन कंज गैंद उछाल की।

कोउ लगावति इत्र अंग पवावती बिरि पानकी ॥
कोऊ उतारत आरती विछवत कोऊ मणि जाल की।
अष्ट कुंज विहार नित नव करत दोउ प्यारी पिय। ॥
कबहुँ सरजू तीर क्रीडा बाँकी रशिक रसाल की।
बाँकी झाँकी देखि के आली विहारिण कहत जय ॥
लेति हूँ पुनि पुनि बलैंयाँ अवध सर सुमराल की ॥

दादरा रँगीली धुनि

(२३५)

सियबल्लभ लाल, बैठे दिये गलबहियाँ। सौभारतन सिंघासन ॥ अमित रवि प्रकाशन । सकल दुख त्रासन। पहिरे बन माल ॥ बैठे ॥ छत्र शिर छहियाँ। निकुंजन महियाँ। सेवत बहुवाल ॥ बैठे ॥ बतियाँ करत सुख पावैं। मधुर मुसक्यावे। रशिक मन भावैं। चितवन छबि जाल ॥ बैठे दिए ॥ बैदेही बल्लभ प्यारे। नयन रतनारे। तनक कजारारे। मन मथ उरसाल। बैठे ॥ तिलकन की रेखा सो हैं। मदन सर मोहै। विन्दु विच जोहै। लखि होवै निहाल। बैठे॥ सिय शीश अर्धचन्द्र विन्दू। बनो श्याम विन्दू। रति मदन मान निन्दू। चन्द्रका सुभाल ॥ बैठे ॥ दिव्य शीश क्रीट राजै। अधिक सुख साजै। कहत कवि लाजै। अम्बुज कर नाज

॥ बैठे ॥ श्रीचारुशीला सुख भारी । निरख पिया प्यारी। अली बलिहारी । शरणागतपाल ॥ बैठे दिए ॥

रसिया रँगीली धुनि

(२३६)

रस लोभी गशिक सरदार सजनी सिया पिया। मृदु मुसक्यातु करत रस बतियाँ, श्रीचारुशीला उरहार । वर-बस हरन हिया ॥ रस लोभी ॥ नव किशोर चित चोर साँमरो । मारहुते सुकुमार । जुलफैं जुलुम किया ।रसलोभी। कनक भवन बिच नित्य करैं दोउ । अष्ट निकुञ्ज विहार । प्रीतम प्यारी सिया ॥ रस लोभी ॥अलि गन मध्य अधिक छबिसरसत श्रीकृपावती सुखकार । सखि मनमोह लिया ॥ रस लोभी ॥ श्रीवैदेही बल्लभ ऊपर अलि तन मन धनवार। सर्वस प्राण जिय। ॥ रस लोभी ॥

छन्द माधुरी

[२३७]

देखरी सखि श्याम श्यामा कनक भवन निकुंज दोऊ राजही बसुजामा ॥ परस्पर गलबाँह दीन्हे लखि लजत सत कामा ॥ हँसन चितवन झुकनि चमकनि झमक बदन

ललामा । सिय हृदय पर कमल परसत रसहि रस सुखधामा ॥
अलि बिहारिणी जुगल छवि पर बिक गई बिन दामा ॥

दादरा

(२३८)

दृगन छबिछाई प्रीतम प्यारी ।
श्यामा श्याम रशिक चूडामणि रघुनन्दन सुकमारी हंसन मन भाई ॥ दृगन ॥ कनक भवन नव केलि बिहारिणी रहस निकुञ्ज विहारी ॥ दृगन ॥ नखशिख भूषन वसन सम्हारे कोटि मदन रति वारी ॥ दृगन ॥ अलि बिहारणी प्राणजिवन धन रशिकन के सुखकारी ॥ दृगन ॥

गजल

(२३९)

मेरा सनम विहार करै कनक भवन मैं ।
बाँकी अनूप झाँकी छाई है दृगन मैं ॥
प्रीतम के शीश क्रीट सिया जू शीश चन्द्रका ।
नखशिख बसन विभूषन सजे युगल वदन मैं ॥
सिय अंग नील सारी पिय पीत उपरना ।
गलबाँह दिये बैठे दुति दशन हँसन में ॥
नाशामणी की लटकन अधरन पै हो रही ।

अलकें छुटीं कपोलन नागिनसी हलन में ॥
चितवन कृपा भरी सरसरसीलीं अँखियाँ ।
यह छबिसम नहि छबि लखात सुरति मदनमें॥
श्रीचारुशीला मोर छल मुख चन्द्रपर करैं ।
सिय ओर कृपावती सुछबि चमर करन में ॥
श्रीचन्द्रकला चन्द्रवती छत्र युग लिये ।
युगपूर्ण चन्द्र पर जनु युग हसें गगन में॥
श्रीअग्रअली पानदान कर कमल लिये ।
सुभगा जू फूल गेंद हस्त कमल दलन में ॥
श्रीलक्ष्मणापद्म गंधा आली सुलोचना ।
हेमा छेमा वरारोहा सौंज करन में ॥
बहु झुंड झुंड सखिअपार राजकुञ्ज लसत हैं ।
पिय प्यारी रास केलि सकल कुंजबनन में ॥
कोऊ सखि मृदंग लीन्है कोऊ बीन बजावैं ।
कोऊ नाचतो हैं झमक घूघुर बाँधि पँगनमें॥
पावत हैं पान निजकर पिया प्यारी परस्पर ।
सखी पीकदानी लिये खड़ी दोऊ दिसॅन में ॥
झुकिझुकि के पीकगेर सखि मुखहि पोंछतीं।
करि आरती भरें हिए आनंद क्षण क्षण में ॥
यह रस विलास नित्य नवल प्यारी पिया के ।

लखि जै बोलतविहारणी परती है चरण में ॥
श्रीरशिक अली इत्र भरे अतर दान में।
श्रीकामद लतिका जू धनुष बाण कर लिये ॥

गजल

[२४०]

देखो अदा अली री रघुराज बल्लभा की।
शिर अर्द्ध चन्द्र सोहै वर विन्दु चित्त मोहै ॥ श्रीचन्द्रका भली री चहुँदिश प्रभा खिलोरी। धनु काम भौंह बाँकी ॥ देखो ॥ श्रुति फूल झूलते हैं रति मान भूलते हैं। तिल गाल विन्दु नीको जनु श्याम रूप पीको। चितवन कृपा भरी की ॥ देखो ॥ नाशा बुलाक प्यारी शुक चौंच मुक्त धारी। नथझूलनी मजा की ॥ देखो० ॥ दाडिम दशन सुहावन। विद्रुम अधर लजावन। मुसक्यान चन्द्र आनन। अमृत बचन रसावन। विन्द चिबुक प्रभा की ॥ देखो ॥ वर कम्बु कंठ रेखा भूषण छवि अलेखा। एक बार हू जो देखा तासम सुभाग्य काकी ॥ देखो ॥ बाहू युगल विशाला-ननु कंज युग सनाला। शरणा गतो की पाला। गल डारनी पिया की। देखो ॥ उन्नत उरोज नीके जनु बिल्व श्री फली के। सरवश किशोर जी के। बलिहार नृप सुता

की ॥ देखो० ॥ पहिरन सुकंचुकी । जनु श्याम रूप पोकी । वरणैं सुबुद्धि की की । वागीश शेष था की ॥देखो॥ स्वामिन रशिक जनों की । अदभुत अनूप झाँकी ॥ देखो ॥ वरलंक केहरीरी शोभा कृशोदरीरी । नाभी भँवँर परीरी । अम्बर सुनील ढाँकी ॥ देखो ॥ युगचक्रवरनितम्बी । जुग जंघ कदिल खम्भी । वर पृष्टि लघु नलम्वी । बैंणी विहार छाकी ॥ देखो ॥ पिंड़री सुढ़ार प्यारी । पद गूढ़ गुल्फ वारी । लहंगा सुरंग धारी । मुक्ता किनार टाँकी ॥ देखो ॥ युग पाद पद्म शोभा मुनि मन भ्रमर सुलोभा । तिनके समान कोभा । जिन सयन दृग लखा की ॥ देखो ॥ चालीस अष्ट रेखा नूपुर छवि विशेषा । वरनत मुनीद्र वेषा । शोभा अनूप जाकी ॥ देखो ॥ अनवट छलादि भूषन जावक लसै अदूषण । लाजैं अनेक भूषण । नष ज्योति कर सुधा की । देखो अदा अलीरी । वर तप्त हेम अंगी बैठी पिया के संगी । गल मेल भज सुढंगी । कर में कमल कला की ॥देखो । श्रीचारुशीला नेरे । बहु आली मध्य घेरे । कोऊ चवँर छत्र फेरे । कोऊ गावती अदा की ॥ देखो ॥ आगम निगम सुवरणौं सब है सिया जू शरणौं । यह ध्यान नित्य धरणौं सोहै अली प्रिया की ॥ देखो अदा अलीरी रघुराज वल्लभा की ॥

———

खिमटा शैरों में

[२४१]

मधुरसवा चुँयैं तोरी आँखन में ॥

शैर

स्याही सिताई अरुणई अधिक दृग लसैं ।
मधुओ सुधा हलाहल यह भी सदा बसैं ॥
एक बार जोनिहारे तेरी सनम अदा ।
झूमत जियत मरत है निज जन्म भर सदा ॥
यह झूठी नहीं सब साखन में ।
मधुरसवा चुँयें तोरी आँखन में ॥

शैर

जबसे लखी तिहारी सूरत को हम सनम ।
तबसे बिना निहारे छिन पल रहै न गम ॥
तेरा सा खूबसूरत दूसर न जक्त में ।
होगा नहै भया न कहीं दिव्य शक्ति में ॥
छिपहौना बसौ चाहे लाखन में ॥ मधुर ॥
श्रीस्वामिनी सियाजु कृपा से मिलैं ॥
सब विध विहारणी सुहाग कंज हिय खिलैं ।
वैदेही प्राण बल्लभ जू की कृपा चहों । नहि और आस मेरे
खाकर सपथ कहों ॥ सब मुक्ति धरी रहु ताखँन में ॥मधुर॥

मञ्जु

(२४२)

रंगीले रशिक राज शिरताज सदाँ सिय जू के प्यारे हैं।
मृदु मुसक्यात बतात परसपर गलभुज धारे हैं॥
नील अरुण कर कंज फिरावत जुगल दुलारे हैं।
श्रीकनक भवन की कुंज नवल नित नवल बिहारे हैं॥
नवल 'अली श्रीचारुशीलादिक सौंज सुधारे हैं।
चिरजीवो दोऊ रास बिहारी सखी उचारे हैं॥

दादरा कहरवा

(२४३)

बाँकी झाँकी छबीली छबीले की।

शैर

बाँकी सिया जू शीश चन्द्रका चमक रही।
प्यारे के क्रीट बाँकी कलगी दमक रही॥
प्यारी के कर्णफूल श्रवण झूल रहे हैं।
कुंडल मयूर अलक देखि झूल रहे हैं॥
वय थोरी रँगीली रँगीले की॥ बाँकी झाँकी॥

शैर

सिय जू के अर्धचन्द्र विन्दु-श्री की रेख है।

केशर की खैरि दुहुँ दिश वन्दी विशेष है ॥
प्रीतम के तिलक रेख शुक्ल रंग बनी है ।
तिहिं मध्य रेख श्री की तरविन्दु कनी है ॥
दुहुँ ओर खौरि केशर शोभा सरस रही ।
बेसर बुलाक अदभुत झलत अधर सही ॥
मृदु हाँसी रसीली रसीले की ॥ बाँकी झाँकी ॥
भूषन वसन सजेरी नख शिख छबी अपार ।
गलबाँहि दैविराजे करमें कमल उछार ॥
भृकुटी मनोज चाप दृगन वान सजे हैं ।
छवि देखि देखि अमितरती काम लजे हैं ॥
दुहुं गोल है कपोल अधिक अलक छहरती ।
पावत हैं पान दोऊ अति रंग लहरती ॥
इतरावन हँसीली हँसीले की ॥ बाँकी झाँकी ॥
सब आस पास सौंजचमर छत्रसखि लिये ॥
आनन्द कन्द जुगल चन्द मुख सदाँ पिये ।
श्रीचारुशीला श्रीकृपावती बनी रपनी ॥
चूमत कपोल दोऊ सुख सिन्धु में सनी ।
मणि जटित पीकदानि को बिहारणी लिये ॥
झुकि पीक युगल गेरें यह छवि सदा जिये ।
ठस काली अदा ठस कीले की ॥ बाँकी झाँकी ॥

मञ्जु मनोमय

(२४४)

श्रीवैदेही बल्लभ जू की छबि ऊपर तन मन धन वारी।
मृदु मुसक्यान अनोखी चितवन करैं जुल्म जुलफैं अतिकारी॥
खौरी तिलकरेख अदभुत छवि भृकुटी बंक अखियाँ रतनारी।
कुंडल कर्णफूल वैंदी पर पाटी मुक्ता माल सँभारी॥
चूड़ामणि चन्द्रका सोहे क्रीट कलंगी ललित सुधारी।
बेसर झुलन हलन नाशामणिकंठ गोप कौस्तुभ मणि प्यारी॥
हार हवेल वाहु जुग अंगन कंकन पहुँचिं चूरिं दुतिकारी।
महँदी करन मुद्रका युत छबिकटि किंकिणी नूपुर धुनि न्यारी॥
कडा पैजनी अनवट बिछिया जावक युत पद भूषण सारी।
पद तल अरुण चिन्हवर अति छबि धोती पीत रंग रसदारी।
लहँगा लाल कंचुकी चित्रित साड़ी नील रंग जर तारी।
जामा हरित पीत दुपटा वर नख शिख नवल शृंगार सुखारी॥
जुगल रशिक गलबाँहदिये वर नील पीत जुग कमल उछारी।
कनक भवन मधि रतन सिंघासन स्वेत छत्रवर चमर सुढारी॥
तामधियुगलचन्द्रवर बैठे लखि रति कोटि मदन मदगारी॥
श्रीचारुशीला सर्वेश्वरी युत मधुर वैन जय शब्द उचारी॥
जय श्रीरंगमहल बिहारणी चिरजीवो रस रंग बिहारी।

जयश्रीरशिक लाल रघुनन्दन जयश्रीस्वामिन जनकदुलारी॥
जयति जानकी बल्लभ रसनिध श्रीसीतेनिमवंस उजियारी।
अली पीकदानी की सेवा राखिये शरण पलक नहि टारी॥

धुनि मनोमय

(२४५)

हमारी स्वामिनी वैदेही बल्लभा जू।
नवल अङ्गवर बसन विभूषन अम्बुज करमें है जू॥
बल्लभ वाम भाग अति शोभित गलभुज दीन्हे जू।
मंद मंद मुसक्यात परस्पर सुख सरसै हिय जू॥
श्रीचारुशीला जू के कर लै बीड़ी निज मुख ली है जू।
श्रीवैदेही बल्लभ अली के सत्य सनेही जू॥

राग विहाग

(२४६)

किशोरी जू तुम सम तुमहि लखात।
रशिकलाल निशदिवस आपकी लखि माधुरी सिहात॥
कृपावान करुणा उजागरी रूप सरस दरसात।
श्रीचारुशिला प्यारी अलिगन विच मंद मंद मुसक्यात॥
अलि विहारणी जुगल माधुरी लख लोचन बलजात॥

मञ्जु मनोमय

(२४७)

श्रीवैदेही बल्लभ पर,वारी तन मन धन आदिक सुख सारी।
मृदु मुसक्यान अनोखी चितवन-कतल करैं जुलफैं कारी॥
क्रीट चन्द्रका कर्णफूल वर कुंडल तिलक विन्दु धारी।
सुभग नासका छविबेसर युत अति अदभुत सुखमा भारी॥
नीलपीत अम्बुज कर धारे गल बहियाँ दीन्हे प्यारी।
कंठा भरण गोप कौस्तु मणि पदिक हार शोभा कारी॥
कटि किंकिणी पगपैंजनि नूपुर नखशिख मणिभूषण झारी।
वसन रंग चित्रित सिय पिय के सारी नील हेम तारी॥
जुगल किशोर किशोरी छबि पर कोटि मदन रति बलिहारी।
जोरी नवल अलोके हिय से छिन पलहूँ न होय न्यारी॥

धुनि रसिया सारँग में

(२४८)

छबि देखो सिया पियाप्यारे की॥रसियारस क्रेन्द्र दुलारे की॥
मृगनैनी श्रीजनक दुलारी कमल नैन दिलदारे की॥छबि॥
गज गामनी स्वामिनी सिय जू सिंघ ठवन मतवारे की छवि।
गौर श्याम नव अंग मनोहर भूषण वसन सम्हारे की॥छबि॥
जुगल माधुरी अलिबिहारिणी हमसबके निस्तारेकी॥छबि॥

कवित

(२४६)

देखोरी अनूप छबि युगल स्वरूप आज कनक सिंघासन पै मंद मुसकावहीं। कनक भवन रंग महल निकुंज मध्य आस पास लीन्हैं सखि सौंज सब शोभा मनभावहीं॥ चारुशीला पिया ओर लीन्है मोरछल चँवर कृपावती जू सिय ओर को चलावहीं। श्रीप्रसाद छत्र लीन्है श्रीचन्द्रकला पंखावर अग्र अली लीने दरपन छवि छावहीं॥ रशिका इतर दान कामदलता गुमान भरीं धनुषवान-लीनें सुख वरषा बरषावहीं। रूपकला जुगल रूप की बलैंया लेत चन्द्र प्रभा सुन्दरसु वीटिका पवावहीं॥ पीकदान नवल विहारणी अनंग लता लीने पिय-प्यारी पीक झुकि झुकि के नावहीं। और सखी अमित-अपार सौंज लीने कर ठाडी पिय प्यारी सुख सिन्धु में समावहीं॥ भूषण वसन लली लाल के सुधारें कोई कोऊ पिय ओर नैन-सैन को चलावहीं। दोन्है गल बहियाँ श्याम-श्यामा सुख धाम दोऊ नील पीत कञ्ज नव करन से फिरावहीं॥ श्याम गौरि जोरी देख काम रति भोरी भईं तोरें तृन कोऊ-कबि उपमा न पावहीं। धन्य भाग मोरी झाँकि झाँकी जुगलकिशोरीजू की आली बिहारिणि नित्य नए नए जस गावहीं॥

दादरा

(२५०)

सिया जू बाँकी हँसन हँस हेरौ ॥

बाँकी लटक चन्द्रका लखिकें ललचत ललन लोल ह्वै चेरौ ॥ सिया जू ॥ बाँके सयन नयन कजरारे भृकुटि कमान बान धर प्रेरौ ॥ सिया जू ॥ घाइल कर प्रीतम प्यारे को आज कसक सब फेरौ ॥ सिया जू ॥ अलि बिहारिणी प्रान जिवन धन तुम प्रीतम की प्रीतम मेरौ ॥ जिया जू ॥

दादरा

(२५१)

प्यारी जू की बहिन मधुर मुसक्यात ॥

निजकर देत सिया मुख बीड़ी पिया जू के करनिज मुख बीड़ी चवात ॥ नख शिख वसन विभूषन सोहैं पंगन में जावक सुरची महँदी हाथ ॥ लँहगा लाल कंचुकी चित्रित फबी नील सारी बनी गोरे गात ॥ अर्द्ध चन्द्र श्रीविन्द तिलक दिये हिये हार शोभा कहि नासिरात । चितवन कृपा कटाक्ष भरी बर भृकुटी पै मन मथ घन शोभा लजात ॥ शिर शौभाग्य सिन्दूर चन्द्रका सिया जू की शोभा लखि पिय जू लुभात । आसपास श्रीचारुशीलाजुत अलीसौजलीन्है उमंग ना समात॥

श्री जानकी बल्लभनाम का प्रेम परत्व कजरी

[२५२]

पिया तुम पले सिय जू के प्यार यहाँ से श्रीजानकी बल्लभ नाम। सिय जू प्राण बल्लभा तुम्हरी रूप सुगुण अभिराम ॥ पिया। जब चितवत तब सिय जू के दिश चाहत कृपा ललाम ॥ पिया ॥ निजकर से वीरी सिय जू मुखदेत पिया आराम ॥ पिया ॥ कमल उछारत गल भुजडारत अँग परसत विश्राम ॥ पिया ॥ त्रन तोरत करजोर निहोरत जब कछु जानत वाम ॥ पिया ॥ बलि बलिजात हसात मोरि मुख लखि विकात बिन दाम ॥ पिया ॥ नित्य नवल माधुर्य्य केलि सुख कनक भवन ममधाम ॥ पिया ॥ परि कर सहित चारु-शीला जू सेवहि आठो याम ॥ पिया ॥ सिय जू के संबन्ध विहारिण पूरण सब ममकाम ॥ पिया ॥ तुमपले सिया जू के प्यार यहाँ से जानकी बल्लभ नाम ॥ पिया ॥

श्रीपिया प्रेमोल्लासपद विहाग में

(२५३)

सदा यह मेरो सुमरन प्यारो ॥

तुम बेठोवर मंच रँगीली मैं कर छत्र सुधारी ॥ सदा ॥
सैन मध्य जब सैन करहु सिय में पद चाप सुखारी ॥ सदा ॥
जब स्नान सुरति तब निजकर उबटन कर अन्हवारी ॥ सदा ॥
निजकर लैककही तब अलकै सुरझावों सुकुमारी ॥ सदा ॥
यह तन प्राण सदा तब किंकर हों निस दिन बलिहारी ॥ सदा ॥
एतेहु पर जबमान करहु तुम तब बहु बिनय उचारो ॥ सदा ॥
हे श्रीवैदेही मम प्यारी श्रीमिथलेश दुलारी ॥ सदा ॥
श्रीनिमवंस उजागरि नागरिअलि तन मन धन वारी ॥ सदा ॥

पद

(२५४)

आवो आवो सब मिल श्रीचारुशीला दरबार।
चलुदरबार सितार लेय कर रिझावो सिया दिलदार॥
सिय दिलदार प्यार बिन सजनी फीको जग सुखसार।
जग सुखसार श्रीजानकी बल्लभ अलि मम प्राणाधार॥

गजल

(२५५)

श्रीजानकी बल्लभ से आली प्रीत लाना चाहिये।
और सब जगकी मुहब्बत टूट जाना चाहिये॥
लाडली लालन को छबि लखि मस्त निज मन को करौ।
आनछवि बिसरायकेअपमानकरिसियलाल ध्यानाचाहिये

दूसरे वर इष्ट का सुनके सुजस मन में डरो।
आपने रस केन्द्र के रस राग गाना चाहिये॥
आन प्यारे की प्रसादी भोग छप्पन होय जो।
त्याग कर निज इष्ट जूँठन सुख सो पाना चाहिये॥
और कारन दाम तन मन की हिफाजत राखिये।
प्राण बल्लभ के विषै सर्वस उड़ाना चाहिये॥
छोड़कर परधाम को सुख निज सदन दुःख को सहै।
जिस जगह वैदेही बल्लभ सोई भाना चाहिये॥
सिया बल्लभ मैथली वर प्रिया प्रीतम स्वामिनी।
नित नवल नामन अली रहु सुख समाना चाहिये॥

गजल

(२५६)

श्रीवैदेही प्राण बल्लभ सुमरन किया करौ।
नैनन से रूप माधुरी लखि कै जिया करौ॥
शिर पै सुचिन्ह अर्द्धचन्द्र विन्दु श्रीअरुण।
जुग रेख शुक्ल पीत चन्द्रका दिया करौ॥
दुहुँ ओर नाम गजै वैदेही बल्लभ।
भृकुटी के अन्त मुद्रका जुगजुग दिया करौ॥
कंठी जुगल मनोहर धनुबान कर लिखो।

श्रीजुगल मंत्र राजको नित जप लिया करौ ॥
हाथों से कीजिये सदा कैंकर्य सुखारी ।
श्रीरंगमहल मध्य निज स्तुतनुतिया करो ॥
उत्तमसु मुक्ति भुक्ति कर्म धर्म वासना ।
सब त्याग कर अनन्य टेक दृढधिया करौ ॥
विस्वास आस राखो श्रीचारुशीला को ।
श्रीमत्कृपावती चरण, सुधा पिया करौ ।
येही बिहारणी अली मानो वचन भली ।
हठकर कुसंग त्याग रशिक सँग किया करो ॥

गजल

(२५७)

नवल नित नाम रसना से रटौ वैदेही बल्लभ जू ।
कृपा श्रीचारुशीला की सटौ वैदेही बल्लभ जू ॥
रशिक गुरुचिन्ह अँग धारौ । करो दृढ टेक सुख भारौ ।
छाड़ि सुखनेह जग सारौ । जटो वैदेही बल्लभ जू ॥
करौ कैंकर्य कर कंजन प्रीत नित सिन्धु में मंजन ।
काम क्रोधादि मद गंजन ठटौ वैदेही बल्लभ जू ॥
रशिक आचार्य श्रीमती जू हमारी श्रीकृपावती जू ।
बिहारिण के हिये गति जू । डटो वैदेही बल्लभ जू ॥

पद

(२५८)

शशिक चूडा मणि सिय पिय नाम ।। रटौ नेह युत मृदु स्वर रसना छिन पल आठौ याम ।। सत गुरु चिन्ह अंग निज धारौ तिलक तुलसि का दाम ।। युगल मंत्र कौ नेम नित्य प्रति हृदय ध्यान सिया राम ।। बृत अनअन्य टेक दृढ धारौ ज्यौं चातकी लालमा ।। रहै मस्त प्रीतम की छबि पर बसै कोनहूँ गाँम ।। दृगन लखै जुग रूप माधुरी कर सेवा सुख धाम ।। जग नाते सब स्वारथही के परमारथ वे काम ।। बिना अनन्य स्वाद नहि पावै जैसे रवि बिन घाम ।। हरदम सजगरहौ या जगते दुख पै हो परिनाम । अलि जीवन वैदेही बल्लभ चिरजीवौ मन भाम ।।

दादरा

(२५९)

शरण सुखदानी सिय महारानी ।
अति उदार सौशील्य गुनन पै पिय मन रहत लुभानी ।।
पद पनही रज का तरसत नित उमा रमा ब्रम्हानी ।।
वारों तन पर कोटि चन्द्र छबि लखि रति हू सकुचानी ।
तन मन प्रान जीवन धन स्वामिन अलिविहारणी मानी ।।

दादरा

(२६०)

चलौ सिय स्वामिन शरण सखि चलिये।
जिनके शरण गहे भव निधि में फिर नाही पिलिए।
श्रीसाकेत निकुंज महलमें श्रीचारुशीलाजु से मिलिये॥
श्रीकृपावती आचारज करिके पिय प्यारी सुख हिलिये।
अलि बिहारणी रशिक रति गहि विरहा नल निलिए॥

गजल

(२६१)

अमित अवतार के स्वामी युगल सरकार चिरजीवौ।
युगल वर नाम सीताराम सुखमा धाम रस पीवौ॥
सकल धामन शिरोमणि हैं अवध साकेत चित दीवौ।
ललितलीला सिया पियाकी दृगन अवलोक सुखसीवौ॥
सकल रस राज श्रीशृंगार तिहँ की भावना कीवौ।
शुभग श्रीचारुशीला जू परे आचार्य पद धीवौ॥
रशिक दृढ़ टेक धारण करि न भट कौ और कथ नीवौ।
बिहारिण कौ हितू सोई कही तिहँ को सो सुख लीवौ॥

गजल

(२६२)

सिया जू नाम में जिसके जिगर से प्रीत भारी है।

जिया जू के सुजस सुनिके दृगन से आँसु जारी है।
सिया जू स्वामिनी मेरी यही दृढ टेक धारी है।
सिया जू रूप दृग प्यासे पपीहा स्वाँति वारी है॥
यही वर टेक है जिसकी उसीसे मेरी यारी है।
वही माता पिता भ्राता वही संगी सुखारी है॥
पिता सुत मातु दाराकिक जहाँलग नेह कारी है॥
सखी सियपिय बिना अपना न यह निश्चय बिचारी है॥
अली दिल खोलकर भेंटों लजावौ लाज सारी है॥
पती पर वार सरवस दे वही नारी सुनारी है॥

गजल

(२६३)

श्रीजानकी बल्लभ के सजनी नित नवल गुण गाइये॥
श्रीजानकी बल्लभ की सुन्दर श्याम छबि हिय ध्याइये॥
श्रीजानकी बल्लभ बिना रहना नही सखी एक छन।
श्रीजानकी बल्लभ की सोभा देखि के बलि जाइये॥
श्रीजानकी बल्लभ से सखि सबन्ध निज जिय लाइये।
श्रीजानकी बल्लभ के परिकर मध्य बस सुख छाइये।
श्रीजानकी बल्लभ विहारिण अली सर्वस प्राण धन।
श्रीजानकी बल्लभ कृपा वैदेही बल्लभ पाइये॥

मञ्जु

(२६४)

युगल चन्द श्रीस्वामिन जू को का जानै मति मंद।
श्राजनक किशोरी कृपाकोर विनद्रवैं न कौशल चंद॥
सीताराम नित्य विहरत दोऊ रस निध सुखमा कंद।
उमा रमा ब्रम्हाणी शारद बृह्मादिक मुनि बृन्द॥
सेवत चरण सदा सिय जू के गावत गुण जस छंद।
सर्वेश्वरी स्वामिनी अलि की नाशन भव के फंद॥

देश

(२६५)

सिया जू को जे जन जान चुके।
ताकों रशिक लाल रघुनन्दन आपन मान चुके॥
भव भय जन्म मरण रोगादिक सब दुख दान चुके।
हक्कदार ह्वै नित बिहार में अनित विधान चुके॥
अलि विहारणी की सिय स्वामिन दृढ पहिचान चुके॥

कवित

(२६६)

धिक वह साधु जो न साधु जाने साधना को धिक वह साधना जो शुद्धता नहूनी है। धिक वह सुद्धता न जाने

ध्यान धारना को धिक वह धारना जो सत्य बिन सुनी है ॥
धिक वह सत्य गुरु शब्द सोन बुद्धि लागी धिक वह बुद्धि
जोन ज्ञान धन ऊनी है । धिक वह ज्ञान जोन भक्ति रसना
उफनान धिक वह भक्ति जो अनन्यता विहूनी है ॥

(२६७)

सया जू के रहस रशिक जन जानें ॥
महल मधुर रस पीवत प्यावति विध निषेध नहि मानें ।
अगम अनन्य टेक दृढ़धारत वृथा वाद नहि ठानैं ॥
रसना रहत श्री जानकी बल्लभ वानी 'श्री' अग्र बखानें ।
अर्धचन्द्रश्रीविन्दु चन्द्रिका धारत भुज धनु वानें ॥
कंठी युगल मधुर मन मोहन हृदय लाल सिय आनें ।
अलि विहारणी लाडली बल्लभ इनकी कृपा पहिचानें ॥

गजल

[२६८]

श्यामा श्याम के विना आराम दिल पाता नही ।
श्याम श्यामा के भजन से फेर जग आता नही ॥
श्याम सुन्दर रामजी श्यामा सलौनी जानकी ।
जिसके दिल में दोऊ बसे तिसको अपर भाता नही ॥
श्रीचारुशीला श्रीकृपावती अष्ट कुंजविहार मैं ।

मस्त जिसका दिल हुआ सुख तिसका कहजाता नहीं॥
रशिक सत गुरु संप्रदा श्री जिसको मिलत बिहारणी।
येहि मत साकेत प्रद कोइ दूसरा दाता नही॥

दादरा

(२६६)

हमारी स्वामिनी सियरानी॥
स्वामि सिरोमणि श्रीरघुनन्दन अवधपुरी रजधानी।
श्रीमिथला निज धाम हमारो तीरथ कमला मानी॥
श्रीसरजू श्रीकनक भवन वर बन प्रमोद सुखखानी।
अगुन सगुन से चगुन हुसे वर नित्य बिहार बखानी॥
येही कर्म धर्म वृत तीरथ येही मुक्त कहानी।
ज्ञान विराग जोग वृत संयम सकल सास्त्र श्रुति वानी॥
चारुशीला श्रीकृपावती जू करहि कृपाजनि जानी।
अलिविहारणी कोनव यह सुख मिल है भव दुख हानी॥

लावनी

(२७०)

हे श्रीरशिक अनन्य सुजान कहिये टेक अनन्य सुखारी॥
सुनि बचन शरण सुख दैन बोले श्रीसतगुर मृदु वैन।
सुनि धारहु हिय मै चैन कामादिक मद भीर निवारी॥ हे॥

निज इष्ट नाम रट वावै हिय इष्ट स्वरूप बसावै।
निज इष्ट छबी दृग छावै गावै गुण जस प्रीतम प्यारी॥ हे॥
सिय बल्लभ जूठन पावै सिय बल्लभ महल सिधावै।
सिय बल्लभ लाड लडावै ध्यावै जुगल चरण सुखकारी॥
शिर तिलक शुक्ल रज केरी जुग रेख ललित लिखियेरी।
बङ्गल शुभ नाम कहेरी तामें मध्यछिद्र छबि न्यारी॥ हे॥
श्रीअर्धचन्द्र मनहारी तिहँ ऊपर विन्दु सँभाँरी।
श्रं रेख अधिक सुखकारी ए सब अरुन रंग रचनारी॥ हे॥
श्रीअंत चन्द्रका पीत जुग नामावली पुनीत।
दृग पास मुद्रका दीत जुगललर कंठी मधुर सुखारी॥ हे॥
दहिने कर वान लगाय कर वाँय धनुष छब पाय।
हिय नाम मुन्द्रका लाय अर्पै तन मन धन सुखसारी॥ हे॥
श्रीयुगल षडक्षर मंत्र नित जपकर चित्त सुतंत्र।
एक आस युगल पद जंत्र बिहारिणी अभय भाव शृंगारी॥
हे श्रीरसिक अनन्य सुजान कहि टेक अनन्य सुखारी॥

गजल

(२७१)

कृपा श्रीचारुशीला की मिले वैदेही बल्लभ जू।
दया मय श्रीकृपावती जू रसाचारज मुखुल्लभ जू॥
महल सुखअति अगम जानी सुगम स्वामिन कृपामानी।

जुगल पद कंज रति दानी महाँ रस खानि सुल्लभ जू॥
अनेकन जन्म सें भटकी नटी ज्यों पूतरी नटकी।
करी करुण शरण छटकी सकल भव त्रास छल्लभ जू॥
कहा मुख एक से गावों सुजस वर पार ना पावों।
चरण पंकज हिये ध्यावों बिहारिणि जयति ख्ल्लभ जू॥
चहों ना लोक मैं बसना बड़ाई मान सुभ जसना।
रटौं प्रिय नाम नित रसना न चाहों धर्म फल्लभ जू॥

भैरवी

(२७२)

हमारें श्री वैदेही बल्लभ आस।
जिनकी कृपाकटाक्ष विलोकन रहत न एकौ त्रास।
श्रीवैदेही बल्लभ प्यारी चारुशीला सुख रास॥
श्रीचारुशीला की प्राण बल्लभा कृपावतीजु विलास।
श्रीकृपावती जू की अलीबिहारणी दीजे निकट निवास॥

घनाक्षरी

(२७३)

गाइये श्रीयुगल स्वामि सतगुरु चरण भव त्रास सुख करण जनके सदा॥ ध्याइये जानकी जानकी रमण सुखमा सदन मदन रति कोटि छबि वारिये लखि अदा॥पाईये परम

फल नयन नित चरित लखि जाईये अवध मिथला सुगिर कामदा ॥ खाईये रशिक जूँठन सुनित नेम करि पीजिये पाद जल मान आनन्ददा ॥ लाईये अंग निज अर्धशशि विन्दु युत तिलक शिर कंठ कंठी युगल तुलसिदा । भाईये सदा शृंगार पथ श्रीअग्रगुरु अलिबिहारणी हृदय यह वर भावदा॥

पद लटकदार

(२७४)

हमारी सिय स्वामिनी जू प्यारी रे पिय जू सरकार रे
श्रीकनकभवन श्रीचारुशीला युत नवल अली सारी रे॥
नवल श्रीमती कृपावती जू सुभग रूप वारी रे।
कामदलता श्रीअग्रअली रशिका छवीली छवि भारी रे॥
श्रीप्रसाद श्रीचन्द्रकला जू श्रीरूपलता सुकमारी रे॥
इनकी कृपा अली नित चाहीये यही टेक में धारी रे॥

दादरा

(२७५)

रहैं हम श्रीजनक लडैती जू के राज।
उमारमा बृम्हाणि अमित सब निरखत भृकुटी मिजाज॥
चक्रवर्ति दश स्पदंन नन्दन प्राण बल्लभा भ्राज।
श्रीचारुशीला श्रीकृपावती जू नित्य अखंड समाज॥

जनक किशोरी स्वामिन शिर पर सुर नर से क्या काज।
अलि बिहारणी जनक नंदनी सब विध मम सिर ताज॥

गजल

[२७६]

निम वंश राज वारी रघुवंश प्राण प्यारी।
सीता सिया उचारी त्रैताप पाप जारी॥ करुणा दया अपारी रति कोठि मान गारी। सिय बिन प्रभू उचारै सिर पाप भार धारै॥ शिवसंहिता पुकारै जय जानकी बिहारी॥ सिय विन प्रभुहि जो पूजै सो मन्द भागहू जे करि संत संग बूझै जुग रूप ध्यान धारी। सिय सुयश वेद गावै ब्रह्मादि माथ नावै वैदेही नाम ध्यावै अलिस्वामिनी हमारी॥

गजल

(२७७)

वैदेहि बल्लभ के बिना दिल और को नहि दीजिये॥
वैदेहि बल्लभ आस करि नहि आस दूसरि कीजिये।
वैदेही बल्लभ छवि दृगन लखि आन छबि नहि देखिये॥
वैदेहि बल्लभ के दिवस निशि चरित अमृत पीजिये।
वैदेही बल्लभ महल जूँठन खाय सुख नित सोइये॥
वैदेही बल्लभ दृगन से पल भर विलग नहि होइए।

वैदेही बल्लभ युगल छबि लखि लीजिये ॥
वैदेही बल्लभ दरस सुख हिय और सुख जग मोजिये ।
वैदेही बल्लभ सगुन निरगुन से परे वैदेही बल्लभ-
की कृपा से अलि बिहारिण जीजिये ॥

दादरा

(२७८)

वैदेही बलम से लगन लागी ।
गीता ज्ञान योग जप संयम कर्म सुभा शुभ सब त्यागी ।
वृत तीरथ आचार नेमवर भुक्ति मुक्ति मति नहि वागी ॥
आचारज गुरुदेव लखायौ सोइ रस रूप रंग पागी ।
तन मनप्राण जीवनधन सियपिय अलिबिहारणी नितमांगी॥

दादरा

(२७९)

सिय जू मेरी जीवन प्राण ॥
मेरी सिय जू मैं सिय जू की सोहं शब्द प्रमाण ।
सब विध मन विकगयो सखीरी लखि मधुरी मुस्कान ॥
जाकी सूरत पर रघुनन्दन बारत तन मन प्राण ।
कृपा चाहिये सिय स्वामिन की रूठें सकल जहान ॥
सिय पद कमल वसत जाके हिय पिय भोंरा मड़रान ।

याचत जुगकर जोर विहारिण दीजे पद रति दान ॥

दादरा

(२८०)

किशोरी जी कों का जानें मति मंद ।
श्रीजनक किशोरी कृपाकोर बिन दृवैंन कौशलचन्द ॥
सीताराम नित्य बिहरत दोउ रस निध सुखमा कन्द ।
उमा रमा बृह्माणी सारद बृह्मादिक मुनि बृन्द ॥
सेवत सदा चरण सिय जू के गावत गुण जस छन्द ।
सर्वेश्वरी स्वामिनी अलि की नाशन भव के फन्द ॥

सवैया

(२८१)

देहों दिवाकर की दुतिबार सुधाकर की करनी लघुकैंहों ।
कैंहों कहां कमला रतिसे तडिता घनकीउपमा नवनैहों ।
नैंहों नही विमुखी जनसे तनसे मनसे सिय के जस गैंहों ।
गैंहौं गुमानभरे पद पंकज विहारिण हियसे जाननदेंहो ॥

सवैया

(२८२)

ताकी तभीसे बनी जगमें जब से सियबल्लभ की छबिछाकी ।

छाकी निरन्तर नेम यही रसना दृढ नेम लगी रटु जाकी ॥
जाकी ज़हानपयो दधिसे मन भिन्नभयो सचि प्रेम सुधाकी।
धाकी कहैं सियजू की विहारिण नित्यबिहार विदेह सुताकी॥

रेखता

(२८३)

वैदेहीप्राण बल्लभजू के चरण शरण ॥त्रैताप पाप नासन संसार दुखहरण । सब कर्म धर्म भर्म वासना विहायके ॥दिन रैन चैन दैन सिया पिया मुखरण । करिके वसीला सर्वेश्वरी चारुशीला जू श्रीमत्कृपावती जू ॥ आर्चायसुख करण । जै श्रीमिथलेश नन्दनी जू स्वामिनी ॥ जै जै श्रीरघुनन्दन शृंगार रस भरण ॥जै श्रीयुगल किशोर किशोरीजू रशिकवर॥ लली लाल श्याम श्यामा घन दामनी वरण । श्रीकनक भवन युगलचन्द्र प्रीतम प्यारी निस दिन विहारणी अली दृढ़ टेक या धरण ॥

गजल

(२८४)

अमित बृम्हाड की स्वामिन किशोरी जू कृपा कर जो ॥ युगल वैदेहि बल्लभजू नवल जल जातकर धर जो ॥ महल श्री चारुशीला जू हमारी रक्षिका निस दिन कृपा जिहँ की

लडैती जू धरौ मम शोशकरवर जो। युगल संबन्ध आचारज हमारी श्रीकृपावती जू करों पद कंज की सेवा विहारिण नाम भवहर जो।। करूँ नित नाम उच्चारण धरूँ हिय रूप की छबि को। रहूँ निरभय विमुख जन से करै क्या खल्क अलि ढर जो।।

मञ्जु

(२८५)

देख रूप मन मस्त भया है चारुशीला की दाया।
श्रीकृपावती की कृपाकोर से जन्म लाभ भल पाया॥
रहै जाय वरु मान बढाई अलि विहारणी गाया।
श्रीवैदेही बल्लभ जू तज और नही कोई भाया॥

मञ्जु

(२८६)

श्रीवैदेही बल्लभ जू से नाता नेह निवहना है।
जात पाँत कुलमान बढाई रिद्ध सिद्ध नहि चहना है॥
सत गुरु कृपा भरोस अहर निस रशिक रीत से रहना।
जयति कृपावति चारुशिला जू अली सदा मुख कहना॥

मञ्जु

(२८७)

श्रीस्वामिनी चारुशीला विन रंग महल नहि परसै।

रसाचार्य श्रीकृपावती विन निज सम्बन्ध न दरसै ॥
अर्धचन्द्र अरुविन्द चिन्ह विन तिलक छबी नहि सरसै ।
जानकी बल्लभ शरण भये विन सब गुण युतनर खरसै ॥

दादरा

(२८८)

नहि छूटै लगन कोउ लाख कहै ॥
तन मन धन सब विध से लागी बाजी सिर दुख कोटि सहै ।
परवत गिरै नीर मधि बूड़ै शीत घाम अति अग्नि दहै ॥
शस्त्र चले वरु भूमि गड़े तन शूली चढ़ै प्रवाह बहै ।
नाग सर्प के हरि आदिक भय सुधा प्यास अति भीत लहै ॥
ज्यों ज्यों बढ़ै विन्ध अति त्यों त्यों लगनि टेक दृढ़ गहनिगहै।
श्रीवैदेही बल्लभ जू तजि अपर विहारिण नाहि चहै ॥

राग विहाग

(२८९)

पिया की जीवन धन सिया प्यारी ।
निति उठ नवल नेह सरसावत रसिया रस विस्तारी ।
सिया पियारी प्राण जीवन धन प्रीतम रास बिहारी ॥
श्रीकनकभवन नवनित्यकेलि सुखश्रीचारुशीला सुखकारी
श्रीमत्कृपावती की स्वामिन अलि सब तन मन वारी ॥

मनोमय सँगीत

(२६०)

गावो गावो सजनी श्रीवैदेही बल्लभ जू के केलि।
गावो केलि सरस मन लावो रस मय फूली वेलि॥
फूलो वेल लगे फल सिय पिय तन मन धन सब मेलि।
धन सब मेलि हेलि सुख अम्बुधि आली कर नहि झेलि॥

मञ्जु

(२६१)

श्रीवैदेही बल्लभ नामरी रसना रटत अमित सुख पावै
छिन पल आठो याम री !
लली लाल सिय बल्लभ सिय पिय रंग महल मनि धाम री॥
युगल किशोर किशोरी प्यारी प्रीतम श्यामा श्याम री।
युगल रशिक चूडामणि सुख निध रास कुञ्ज अभिराम री॥
रशिक जानकी बल्लभ प्रियवर मिथला अवध ललाम री।
श्रीचारुशीला वर हृदय बिहारिण नवल बिहारी नाम री
युगल प्रिया पिय जू की छबि पर लाजै बहु रति काम री।
रहो सदा चिरजीव अली के बसो हृदय सुख धाम री॥

कबित मालती

(२६२)

राज किशोर रँगीलो करत नवल नित केलि मृदुल स्वर

गाय रहो। करन फिरावत कमल सखीरी करत अनेकन फैल चितहिं चुराय रहो ॥ श्याम सुरत चित माहसमानी विसर गयो सब खेलि जिय तरसाय रहो। अलिबिहारिणी मिलहु वेग पिय काहे लगावहु झेल हिए मम आय रहो ॥

दादरा लैदार

(२६३)

पिया धानी दुपट्टा रँगाय दे रे ॥
आन देस प्रद में नहिं पहिरों मिथिला खास मगा देरे ।पिया।
गौतिन की लर छोर गुहादे मीर पपीहा लिखा देरे ॥ पिया ॥
अंजन राग महावर दैकें निजकर कमल उढ़ाय दे रे ॥पिया॥
जान बिहारिणी मुग्धा अलिको हँसकर कंठ लगायलेरे।पिया।

कवित

(२६४)

जुगल सरकार श्रीवैदेही बल्लभ जू जेहिके सुहात भरी श्रीसीता किशोरीसरन॥ रहोंगी सदाँही संग आचारंज चारु-शीला कृपावती आदि सब परि करि की कृपा ढ़रन ॥ वास कनक भवन मध्य अष्ट कुंज सेवा सुख वयस वर्ष ग्यारा दुति अङ्ग स्वामिनी के वरन। आली विहारणी सुआषिशा हृदय से भेंटि देतीं शिर सूँघतीं भाव प्रिय सोच दुखहरन ॥

छन्द चोबोला

(२९५)

लखिहौं कब भरि नयन प्रीतम प्यारी सुख के दैन ॥
प्यारी लखि प्रीतम सुख पावै पिय लखि प्यारी चैन।
प्यारी बिन प्रीतन नहि मिलहैं पिय बिन प्यारी हैन ॥
प्यारी छबि लखि रति सकुचत हैं पियछबि सकुचतमैन।
पिय प्यारी गलबाँह दिये दोऊ बैठे कंचन ऐन ॥
प्यारे केकर मैं से बीडी प्यारी निजकर लैन।
देख विहारिण मस्त भई है बोलन आवत वैन ॥

रशिकाचार्य वन्दन

(२९६)

अनंत श्रीवैदेही प्राण बल्लभो विजयतेति श्रीसर्वेश्वरी श्रीमती चारुशीलायै नमः ॥ श्रीमत्कृपावत्यै नमः ॥ श्रीअग्र अली कामदलतायै नमः ॥ श्रीप्रसादायै नमः ॥ श्रीमती चन्द्रकलायै नमः ॥ श्रीअग्र अली कामद लतायै नमः ॥ श्रीजानकी बल्लभायनमः ॥ श्रीमत्कृपानिवासाय नमोनमः ॥ श्रीसतगुरु चरण कमलेभ्योनमः ॥

(२९७)

अथ श्रीवैदेही प्राण बल्लभ युगल रस मंजरी ॥

दोहा

प्रिया प्यारी प्रीतम प्रिया, लाल लाडली नाम ।
बल्लभ उचरत बल्लभी, कहत स्वामिनी श्याम।।

श्रीकृपा निवासाय रूप लतायैं नमः

दोहा

जयति चारुशीला चरण, युगल हृदय धरि ध्यान ।
श्रीमत्कृपावती सरस, रसाचार्य गुण खान ।।
जय श्रीकामदलता जू । अग्र अलीं रस खान ।।
श्रीयुगल रशिक रस मंजरी, युगल केलि सुखमान।
श्रीस्वामी सतगुरु सुममरशिक अनन्य महान ।।
श्रीयुगलशरणजी युगल, पद वन्दों मंगल खान ।
श्रीयुगल रशिक रशिक चन्द्र जू की जै ।।

श्रीचित्रकूट जानकीकुण्ड निवासी श्रीस्वामी सिया बिहारीशरण जी का महत्व वर्णन कवित

[२६८]

श्रीसतगुरु कृपाल की कृपा से बहु संत देखे बड़े बड़े श्रामत महंतन को पेखे में । धाम देखे गाम देखे तीरथ तमाम देखे देखे सुरलोक चोदह भुवन के लेखे मैं ।। गुनी देखे

मुनी देखे तपसी बहु भेष देखे देखे घनवान विघमान न विषेखे मैं। श्रीजनकदुलारी शरण रशिक अनन्यन में श्री सिया बिहारी सरन से न देखे में ॥

दादरा लैदार

(२९९)

सिया पिया ने सखी जादू मोपैं डार दिया।
भृकुटी कमान तान नैन बान मार दिया॥
मृदुमुसक्यान हिय वसी मेरे प्राण प्यारी।
श्याम रूप सिन्धुबीच मीन मनहि पार दिया॥
जबसे लखीरी प्राण प्यारे की छबीलो छटा।
तब से हमारा सब हौसला विगार दिया॥
अब तो सखी प्यारे देखे बिना मुझे चैन नही।
ताहू पर मदन जुलुम तन जार दिया॥
सखी हाय हाय करि जाय दिन रैन मोको।
आया नहि पास मेरे तन मनधन वारदिया॥
अब तौ प्यारी श्रीचारुशीलाजी वसीलाकरूँ।
तबहीं मिलेंगे पिया प्यारे मम लाग हिया॥
एक आस श्रीकृपावती जी की अलि।

साँची कहूँ कृपा कटाक्ष मेरे हियको अधार दिया।
आज अलि उपहार में अपनी प्रशादी गतहार दिया ॥

दादरा

(३००)

वैदेही बलम दृग छाय रहो।
श्रीजनक लली सँग रास कुंज में करसें वीन बजाय रहो॥
हाव भाव कर मध्य सखिन के नइ नइ तानन गाय रहो॥
कबहूँ बैठे कनक सिंहासन गोद सिया पधराय रहो॥
रस बस ह्वै अधरामृत पीवत कर कंचुकि पर नाय रहो॥
सिय सुकुमारी मान करहिं जब बहुविधि विनती लाय रहो॥
सेज रँगीली नवल रँगीलो कोक कला सुख भाय रहो॥
नित्य विहार प्रिया प्रीतम को रसिकन चित्त चुराय रहो॥
अलिविहारिणी चारुशीला की कृपा सकल हिय आय रहो॥

गजल

(३०१)

सनम वादा किया था आज हमरी कुंज बसनै को।
निहारी राह सारी रैन प्रीतम संग हँसने को।
भृकुटि धनु तीर दृग चितवन मधुर मुसक्यान मन मोहै।
तिलक छवि जाल सिरधारे हमारे चित्त फँसनै को॥

शुभग वर क्रीट श्रुति कुण्डल सुघर नासो मणी डोलै ॥
छुटी अलकैं मनौ नागिनि पली मम प्राण डसनै को ॥
बहुत बातें करीं हमनैं नमानी एक भी तुमनै ॥
बिहारिण चाहती अबतौ बिरह सागर में धँसनै को ॥

दोहा

(३०२)

सखियन को सौभाग्य अलि, सिय स्वामिनी स्वभाव ॥
होय अमित अपराध तऊ, करहि कृपा श्रुति गाव ॥
श्री सिय जू सम स्वामिनी, रघुवर सम दिलदार ॥
तासे अपने भाग पर, कोटन सुख बलिहार ॥
श्रीचारुशीला आचार्यवर, श्रीकनक भवन की कुञ्ज ।
श्रीसिय पिय की बल्लभा, कृपावती रस पुंज ॥
श्रीमिथलापुर जन्म धर, अवधपुरी पति गेह ।
श्रीचित्रकूट रासस्थली, रस शृंगार सनेह ॥
मान सीख मेरी भली, अली रहस मकरन्द ।
श्रीसीते मुख नाम रटु, नसैं अमित जग फन्द ॥
एरीसिय गुन सुमिर नित, मेरी बतियाँ मान ।
तेरी सों सिय जू सरस, दूजी नहि कहुँ आन ॥

सवैया

(३०३)

हम समको धन 'धन्य, कहूँ जिहँ की सिय जू सम स्वामिन प्यारी। कुंज विहार सदा हमरे सर्वेश्वरी चारुशीला सुकुमारी॥ आचार्य कृपावती जू जिनकी कृपया हमरौ सब कार्य सुधारी। एरी सदा अभिमान विहारिणि राखु हिये अलि सत्त विचारी॥

गजल

[३०४]

वैदेही प्राण बल्लभ सखि प्राण पयारे।
श्रीचारुशीला स्वामिनी आचार्य हमारे॥
श्रीमत्कृपावती जू अतिशय कृपाकरी।
लीनी चरण शरण में निजवान सम्हारे॥
श्रीकनक भवन नित्य नवलकेलि विहारे।
लखिगौर स्याम शोभारति मदन उवारे॥
जय युगल रसिकचन्द्र नवल प्रीतम प्यारी।
निसदिन विहारणीके हिये से नहो न्यारो॥

दादरा

(३०५)

शरण मे तोरी जनक किशोरी॥

कृपा कारणी रशिक पालनी रघुनन्दन चित चोरी।
रंग महल पर्य्यंक बिहारिण दामिन दुति तन गोरी॥
श्रीकनक भवन मधिरासकुंज नव प्रीत सुधा रस वोरी।
स्वामिनि श्रीवैदेही जू अरु चारुशीला हित मोरी॥
नवल आप वय नव प्रीतम जू चिरजीवी रँग जोरी।
आपन अली जान मोय सब विध मोहियसे न टोरी॥

मञ्जु

(३०६)

हे श्रीयुगल रशिक चूडा मणि हे श्रीवैदेही बल्लभ जू।
नव माधुर्य्य शृंगार रसो दधि विहरत छवि छल्लभ जू॥
हे श्रीस्वामिन चारुशीला की कृपा भये सुल्लभ जू।
हिय दृग वसो अखंड अली के विछुर नही पल्लभ जू॥

घनाक्षरी

(३०७)

श्रीयुगल रशिकचन्द्र चरण, चारु सुख करण, श्री रशिक हृदय विगस अरुण, कंज से वरण मुनि जन अनंत ध्यावैं॥ गावैं सुयश घनें पावै न पार वन्दो भवभीर दुख हरण॥ इनकी कृपा कटाक्ष विना सुख सुलभ नही वैदेही

प्राण बल्लभ जू के युगल चरण। चालीस अष्ट चिन्ह सुभग नित रस भरे राजत सुचिन्ह एक अमित जीव उद्धरण॥ सुकमारता अपार देखि काममद गरन नख की प्रभा सरोज दलन मुक्त अनुसरण। अदभुत अनूप चरण कमल सम चरण कमल वदों सदा अली पर निस दिन कृपा ढरण॥

चौपाई

(३०८)

जय श्रीवैदेही बल्लभ जू। जय निज शरणागत सुल्लभजू॥ जयअनंत रति काम लजावत। श्याम गौर शोभा मनभावत॥ जय श्रीरंग महल रस दानी। रास कुञ्ज दोउ रूप गुमानी॥ सियचितवनलखिपिय बलिजावैं।पियदृग चितवनसियसुखपावैं निजकरपिय जुगबीरी लीन्हैं। सियमुख दैंन चहत रसभीनें॥

मञ्जु

(३०९)

देख रूप मन मस्त भया है श्रीचारुशीला की दाया। श्रीकृपावती की कृपा कोर ते जन्म लाभ भल पाया॥ रहे जाय वर मान बड़ाई अलि विहारणी गाया। श्रीवैदेही बल्लभ जू तज और नही कोई भाया॥

कजली की धुनि में

[३१०]

सिया सुकमारी पिया सुकमार भजहु मन युगल रशिक दिलदार ॥ श्रीजनक नन्दनी श्रीरघुनन्दन श्रीचारुशीला हिय हार ॥ भजहु ॥ रहस रंगीली रहस रंगीलो बहु रति पति छवि वार ॥ भजहु ॥ श्रीवैदेही बल्लभ सिय पिय जुगल कमल कर धार ॥ भजहु ॥ श्रीकृपावती को प्रान जीवन धन सिय स्वामिन सरकार ॥ भजहु ॥

दादरा

(३११)

दिवस निस सीते रटु रसना ॥
कृपावान श्रीवैदेही सम जग दूजो असना ।
पिय भावनी शरण पालनी छवि लख भव फसना ।
जनकलली पद चम्प सुमनभजु विषय मधुप वसना ।
श्रीचारुशीला श्रीकृपावती जू बिना कृपा जसना ॥
तासे प्रथम चारुशीला पद आस करौ कसना ।
सदानिकुंज विहारिणसिय संग जौ सुखकहुँ तसना ॥

सवैया

(३१२)

रे मन क्यों न भजै तनसे मनसे सिय के पिय जू रघुवीरहिं।
देहको गेहको जाति सुद्रव्य को मान सनेह बृथा समुझीरहिं॥
चित्त की बृति लगाये रहौ जस कुंभ धरे पनिहारिन की रहिं।
हाथन से कैंकर्य अली मुखते रटु जानकी बल्लभ धीरहिं॥
रीत यही रस वन्तन की मधुरे स्वर इष्टको नाम उचारहिं।
सीविन राम कहे नकभूँ सिय विन पूजै न एक पियारहिं॥
जो कहिहै जुगरूप को भिन्नसही अघी है शिवतन्त्र पुकारहिं।
तासें अली गन के हिय में बिहिरै ललिलाल सदाकरप्यारहिं।

भैरवी में

(३१३)

रे मन भज श्रीसीताराम॥
जनक नन्दनी श्रीरघुनन्दन सिय पिय श्यामा श्याम।
जानकी बल्लभ श्रीसिय बल्लभ लाल लाडली नाम॥रेमन।
प्रीतम प्यारी स्वामि स्वामिनी जुगल चन्द अभिराम॥रेमन॥
रहस विहारिणी रहस विहारी रंग महल सुख धाम॥ रेमन॥
श्रीवैदेही बल्लभ ऊपर वारिये बहु रति काम॥ रे मन॥
युगल किशोर किशोरी रस निध रशिक छबीले भाम॥रेमन।

युगल उदार रशिक चूड़ामणि रस शृंगार ललाम ॥ रे मन ॥
श्रीचारुशीला प्यारी अलियन में विहरत आठोयाम ॥ रेमन ॥

भजन

(३१४)

सुनि लेउरे भइय्या मोरी अरज इकवार ।
सुर दुर्लभ मानुप तन पायो । तासे तुम नित विसय कमायो ॥
भगवत भक्ति नही मन लायो त्यागहु मत वे विचार ॥सुन॥
सब सुख खानि भक्ति सिय पिय की ।
रशिक अनन्य टेक अति नीकी ।
हरिहै जन्म मरण रुज तीकी सत गुरु परम उदार ॥ सुन ॥
सब धर्मन से वैष्णव धर्मा अवध धाम धायन से पर्मा ।
सीता राम नाम को मर्मा सर्वेश्वर सरकार ॥ सुन ॥
यह सुखमध्य दृढावो मन को।अतिसुखहूहै लघुश्रमतन को॥
करि लेयो अब एही पन को । शरणागति सुख सार ॥सुन॥
हम बहु ग्रंथ संग करि लीन्हों । सबको सारसिया वर चीन्हो॥
जनक दुलारी शरण में कीनो । श्रीसतगुरु बलिहार ॥सुनो॥

धुनि कजरी की

(३१५)

सुभग श्रीजानकी बल्लभ लाल हमारे प्राणन प्यारे हो ।

जानत हो सब मेरे जी की अखियन तारे हो ॥ हमारे ॥
प्राणन प्यारे अखियन तारे जग उजियारे हो ॥ हमारे ॥
जग उजियारे राजदुलारे रशिक सुखारे हो ॥ हमारे ॥
राजदुलारी राजदुलारे निमिष न न्यारे हो ॥ हमारे ॥
गल भुजधारे केलि अपारे कुंज बिहारे हो ॥ हमारे ॥
हे दिलदार रशिक चूडामणि काए बिसारे हो ॥ हमारे ॥
अब नहि चैन परत निसवासर क्यों मतवारे हो ॥ हमारे ॥
हम तुमहरे आधीन सहचरी पिया हमारे हो ॥ हमारे ॥
पिया हमारे सदा तिहारे क्यों न उबारे हो ॥ हमारे ॥
हाहा खात विहारिणि पद गहि कृपा निहारे हो ॥ हमारे
प्राण पियारे हौ ॥

रेखता

(३१६)

काहे करौ अवेर कृपाकोर के लिये ।
मेरी न बार धारो निठुराई ता हिये ॥
बहु तनसे हम सुना है देखा भी हम सही ।
एसी कृपाल दूजी कोऊ नही सिये ॥
कोटन अमित निवास करैं खास संग में ।
मे देख देख तलफों थिरता नही जिये ॥
यह जन्म कर्म मेरो सब आप के लिये ।

काहे भुलाय भव में अब तो कृपा किये ॥
ऐसी हमार भाग्य आपसरस स्वामिनी ।
श्रीचारुशीला संग श्रीकृपावती दिये ॥
ऐसी हवाल पर भी आह तन जला करै ।
हैंसदा चरणकमल आस परण अलिकिए ॥
काहे करौ अबेर कृपाकोर के लिए ॥

दोहा

तुम बिन तलफत निस दिन, बहत दृगन जल धारि ।
कृपा विहारिण पर करहु, अग्र अली की प्यारि ॥
'श्री, अग्र लाडली करहु अब, पद पंकज की चेरि ।
अलि विहारणी शीघ्र ही, राखो अपनी नेरि ॥

नित्य संबंध युक्त उपासनात्मक भावनात्मक शांकेतिक पद

(३१७)

श्रीकनक भवन मध्य प्रिया प्रीतम की छवि देखो निरख निरख दोऊ किशोर सुफल जन्म जग लेखो । श्रीचारुशीला मोरछल श्रीचन्द्रकला चौर लिये पानदान हेमा छेमा सुछत्र कर देखो ॥ इत्रदान लक्ष्मण जू मणिन जप्ति कर लीन्है पद्म गंधा पंखाकर शुभगा दर्पण देखो । प्रीतम के धनुषबाण श्री सुलोचना लीन्है फूलन की गैंद वरा रोहाकर में देखो ॥

कामद लतिका सुछत्र दूसर कर में धारन दुतिय चमर कृपा-वती सिय पर ढोरत देखो । श्रीअग्रअली दूसरी ओर सिय रुख पर करतीं पानदान दूसर श्रीरशिक अली कर देखो ॥ दुतिय इत्रदान श्रीप्रसाद अलीकर लीन्है अपर अलि अनेक युगल युगल खौंज कर देखो । वींणा मृदंग तान पूरा करताल लिये गाबतीं रिझावती अनेक सखी गण देखो॥ सुभग रत्न सिंघा-सन वैदेही बल्लभ जू बैठे गलबाँह दिये नखशिख शोभा देखो। क्रीट चन्द्रका अनेक भूषण वसन सोहैं अरस परस करत केलि मंद हंसन दृग देखो ॥ प्यारी मुख पान पिया निज कर पवावत दसन खंड अर्द्ध पान पावत पिया मुख देखो। वह बिलास रस हुलास रशिक सुजन जानत हैं मानत निज भाग्य श्रीचारुशीला जू कृपा लेखो ॥ सखिन संग जात प्रिया प्रीतम गलबाँहि दिये मंगल शुभ कुञ्ज प्रात बल्लभ कुंजहि देखो । फेरि स्नान कुंज से शृंगार कुंज जात करि के शृंगार कलेवा सुकुंज में देखो ॥ सभा कुंज होकर भोजन निकुंज जात दोऊ भोजन करि शयन कुंज शयन कुंज शयन की छवि देखो । उत्थापन होकर जल केलि कुंज केलि करैं रहस कुंज रास विविध करत सिया पियहि देखो ॥ कबहु सखिन संग युगल झूलन को कुंज जात ग्रीषम हे मन्त शिशिर कुंज कबहुँ दृग देखो । वर वसंत कुंज आदि

अमित कुंज विहरत है चंदनवन चपंक वन पारिजात बन देखो ॥ वन असोक वनतमाल रसाल की सोभा वन विचित्र वन शृंगार वन विहार को देखो । बनकन्दब वन अनंग सुभग नाग केशरवन द्वादश वन मध्य अष्ट कुंजन विहरत देखो ॥ श्रीकनक भवन मध्य कोटि चोदह के भीतर सब यहि से पल एक कहुँ जात ना युगल देखो । पुरुष मात्र पहुँचत नहि एक सखी भाव विना पहूँचत सो अति अगम्य श्रीअग्रअली कृपा देखो ॥ ब्रह्मा शिव हरि आदिक तरसत यह सुख कारन ता सुख की रशिक संत गुरु दया सुगम देखो । नित बिहार नित परिकर पास प्रिया प्रीतम के पीकदान सेवा श्रीअलि विहारणी देखो ॥

अथ श्रीसबन्ध दर्शन

गजल

(३१८)

शुभग श्रीचारुशीला जू हमारी स्वामिनी प्यारी ॥
नगर मिथला धिपत भारी शत्रु जित राज की बारी ।
रशिक ललि लाल मुदकारी सजे तन नील रंग सारी ॥
प्रिया प्रीतम सुबस करनी अधिक छबि को कहै वरणी ।
कोट रति काम मद गरनी कृपा की कोर सुखकारी ॥

महल आचार्य हैं सबकी शरण प्रद जानकी वरकी।
रत्निका अलि विहारिण की जुगल पद पद्म बलिहारी॥

गजल

(३१९)

सहेली हम सिया जू की हमारी स्वामिनी सिय जू।
रशिक वैदेही बल्लभ जू हमारे प्राण धन षिय जू॥
मनोहर दिव्य श्रीमिथला शुभग मम जन्म भूमी है।
सच्चिदानन्द मय सरजू अवध ससुरार है पिय जू॥
महल सर्वेश्वरी श्रीचारुशीला जू सुरत्नक है।
कृपावती जू कृपा करके सकल विध अपनी किय जू॥
नित्य सुख अष्ट कुंजनकी जो षटऋतु मध्य पिय प्यारी।
सदा विहरैं सहित अलि गन यही वर मोय दीजे जू॥
कनक ग्रह मध्य सिंघासन दिये गलबाँहि दोउ बैठे।
लिये ताम्बूल कोऊ दर्पण छत्र चमर लिये पिय जू॥
लिये कोउ इत्र वर पंखा मोरछल आदि बहुरूपा।
नटत गावत बजावत रिझावत प्राण धन जिय जू॥
परस पर पान पावत हैं सुझुकि झुकि पीक नावै हैं।
विहारिण पीकदानी कर यही छविधार नित हिय जू॥

गजल

(३२०)

सिया जू की कृपा सजनी भयो सौ भाग्य मम भारी।
बड़ी बहिनी किशोरी जू हमारी स्वामिनी प्यारी ॥सिया॥
अवधपुर व्याह कर जाई अवध पिय संग सिय ल्याई।
सुभगपतिलाल सम पाई,रहसनवकेलि सुखकारी ।सिया॥
जनकपुर मात पित घरहै. उदधि आनंद नित भरिहै।
अमित सुर ईस मदहरहै, अमित ब्रह्माड सुखबारी॥सिया॥
अमित श्रीजनक नृप भ्राता, सुभग श्रीकेकीध्वज ताता।
सुममअम्बा श्रीचन्द्रकान्ता,निरख रतिमैन मदगारी॥सिया
सरस श्री सेवा पर भाई, सुमदना वलि श्री भौजाई।
माधुर्य्या वहिन सरसाई बिहारिण रूप मनहारी ॥सिया॥
शुभग श्री चारुशीला जू सदा आचार्य सुखदानी।
रसा चारज कृपावती जूसरस नवरूप सुकमारी ॥सिया॥
कनक भवन स्वनितवासा जनक नृपनन्दनी पासा-
विहारिण मुग्ध अलि खासा सदा शृंगार रसधारी ।सिया॥

दादरा लैदार

(३२१)

सखि मेरौ दूलह रशिक रघुराज।

स्वामिन श्रीमिथलेश किशोरी पटरानी शिरताज ॥
श्रीलिथलापुर नैहर हमरो सासुर अवध सुराज ।
आचारज श्रीचारुशीला जू सिय पिय संग विराज ॥
रसाचार्य श्रीकृपावती जू विहरत सकल समाज ।
श्रीकनक भवन वर कोट चतुर्दश अनुपम शोभा साज ॥
चौथ आवरन दक्षिण डेवढी तहँ स्वस्तिक ग्रह छाज ।
तहँ श्रीचारुशीला जू निवसत कृपावती ग्रह भ्राज ॥
सकल पूथ विश्राम कुंज तहँ जहँ हमरो सुख साज ।
पाणि ग्रहण हमरो स्वामिन संग कियो (गरीब निवाज)
इत श्री सरजू उत श्रीकमला रहिहौ जहाँ मन माँज ।
अलि विहारिण सुदृढ नित्य सुख करों शपथ नहि लाज ॥
सखि मेरौ दूलह रशिक रघुराज ।

दादरा लैदार

(३२२)

मम दूल्हा रशिक रघुराज पिया ।
स्वामिन श्रीमिथलेश किशोरी प्यारी अति सुकमारी सिया ॥
आचारज श्रीचारुशीला जू सर्वेश्वरि की आस हिया ।
रसाचार्य श्रीकृपावती जू पूरन कृपा कटाक्ष किया ॥
अलि विहारणी नैहर मिथला अवध नगर ससुरार पिया ।

गजल

(३२३)

वैदेही प्राण बल्लभ दूलह हमार सजनी।
वैदेही प्राण प्यारा दिलदार यार सजनी॥
वैदेही नैन तारा मम हृदय हार सजनी।
वैदेही रूप मोहन जीवन को यार सजनी॥
वैदेही रूप सागर मन मीन सार सजनी।
वैदेही मोदकारी रक्षक अधार सजनी॥
वैदेही रशिक राघव रहता कनक भवन में।
आली विहारणो पर करता प्यार सजनी॥
वैदेही प्राण बल्लभ दूलह हमार सजनी॥

दादरा

(३२४)

हमारी तोरी नोकी बनी नृपलाल।
तुम्हारी प्राण बल्लभा सिय जू हमारी तौ स्वामिनी नित रक्षिका दयाल॥ हमारी॥ तव मुख देख स्वामिनी सुख हिय सिय जू को मुख तुम लखि होते निहाल॥ हमारी॥ हम तो युगल चन्द मुख निरखे हँसन मंद चितवन रसीली

कृपाल ।। हमारी।। तुम रघुवंस सरोज प्रभाकर प्रकाशक निम-
कुल की सिय जू रसाल ।। हमारी ।। सिय जू के संग ना तो
भयो मम विहारिण अली वैन सुन कीजे ख्याल ।। हमारी ।।

गजल शैरों की

[१२५]

पिया तुम हो हमारे तुम्हारे हैं हम ।

शैर

तुम तो अवध किशोर हो चितचोर सवन के ।।
हम है जनक किशोरी अली खास भवन के ।
कहूँ जावो न पिय हमें है नाही गम ।।पिया।।
जब से भई है हमरी तुम्हरी चिन्हार यार ।
सिय जू के संग मिथला उत्सव भयो अपार ।।
तबही से भये तुम हमारे सनम ।। पिया ।।
जाते किसी की कुंज को अबजो लखैंगे हम ।
खाकर जहर उसी समय करिहैं जिया खतम ।
सच मानो विहारिणीनें कीन्ही कसम ।।पिया तुमहो०।।

दोहा

श्रीमिथिला पुरमाव को, अवधपुरी ससुरार ।
श्रीकौशिल्या सासुमम, रघुनंदन उरहार ।।
कोपित कलिलोपित सकल, मुद मंगल मय साज ।
शरण मैथिली के रहत, हम अबलन की लाज ।।

शुभम् सुन्दरम्

॥ श्रीवैदेहीप्राणवल्लभोविजयतेतराम् ॥
॥ श्रीमतीसर्वेश्वरीचारुशीलादेव्यैनमः ॥

ललित माधुरी

अथ श्रीप्रीतिरसरूपवर्णन

चौ०जयतिजानकीबल्लभप्यारे। यहि सुमिरन यहि ध्यानहमारे
हे श्रीवैदेही बल्लभ जू। हे रशिकेन्द्रशरण सुल्लभ जू
हे श्रीयुगलकिशोर किशोरी। रति मनमथ लाजत लखिजोरी
हे श्रीललली लाल रघुनन्दन। श्यामा श्यामरसिक चितचंदन
हे श्री रहस निकुञ्ज बिहारी। श्री साकेत रशिक मन हारी
जयति लाड़िलीलाल सलौने। श्याम गौर अस अहै न होने
जयति प्रियाप्रीतम रसरसिया। हे श्रीकनकभवननितवसिया
हे श्रीसिय पिय रसिक दुलारे। युगल चन्दतिहुँपुर उजियारे

दो०-ललित नाम सियलालके, ललित सुपरिकर जाल।
ललितबिहारश्रीकृपावती, ललित लाड़िलीलाल ॥१॥
श्रीआचारज महल में, श्रीचारुशीलाजू मान।
श्रीकृपावतीसद्गुरुसुमम, है सब सुख की खान ॥२॥

चौ०जयतिजानकीवल्लभप्यारे। जो ऐसे मृदु बचन उचारे
हे स्वामिनिमिथिलेशकिशोरी। तुम हो सब विधि रक्षक मोरी
मेरा सियजू मैं सिय जू की। शरण सदा हौं सियपियजूकी
और आश स्वप्ने नहिं ल्यावै। सो अनन्यता पदवी पावै
सिय जू में जाकी दृढ़ प्रीती। सो सब भांति हमारो मीती

हंसि करि वाकोकण्ठलगाऊं । विरह आगिकी तपनिबुझाऊं
नैनन से न्यारो नहिं होवों । निशिदिनप्यारे को मुखजोवों
सिय अनुरागी मेरौ प्यारौ । मातु पिता गुरु बन्धु बिचारौ

दो०अलिविहारिनी नाम मम,सखी रूप मम जान ।
जनकदुलारी शरण यह, ऊपर नाम बखान ॥३॥
श्रीजनकललीकी अलीमैं श्रीकृपावती गुरु मोर ।
श्रीचारुशीला आचार्य है, कनक भवन की ओर ॥४॥
ब्रह्मा विष्णु महेश ते, अधिक प्रतापी होय ।
सिय जू से यदिबिमुखहै, तौ हमार नहिं कोय ॥ ५ ॥
मातु पिता गुरु बंधुजे, सिय पद विमुख निहार ।
त्यागि करौं तेहि शत्रु सम, दृढ़ सिद्धान्त हमार ॥ ६ ॥
सिय जू से यदि विमुख है ताकों कौड़ी लोभ ।
सिय पिय प्यारे के लिये प्राण देत नहिं क्षोभ ॥ ७ ॥
रशिकन से नातो सही रशिक हमारी जाति ।
रशिक हमारे प्राण प्रिय रशिक हमारी पाँति ॥ ८ ॥
खान पान नहिं कीजिये; कबहुँ विमुख के संग ।
पांति दोष अति होत है, भजन भावना भंग ॥ ९ ॥
ढिंग बैठे नहिं विमुख के, मिलै न कंठ लगाय ।
ऊपर मन से मिलि रहै, अंतर में पछिताय ॥ १० ॥
तन मन खोलै रशिक सँग, खेलै हँसै सिहाय ।

भेंटैं भुजा पसारि कै, मनहु रंक निधि पाय ॥११॥
धन्य अली, जिहि भाग को सिय चरणन चित दीन्ह।
सियचरणन से विमुख है, वृथाजन्म विधिकीन्ह।१२॥
सिय शरणागति जो सखी, सोई सुहागिल जान।
नतु सब विधवा जानिये, सिय पदविमुख वखान॥१३॥
सुख दायक सिय लाल पद, दुख प्रद पद संसार।
सिय पिय जाके पति अहैं सो मम प्राणअधार। १४॥
चंद मिटै सूरज मिटै, ब्रह्मा विष्णु पुरारि।
अलि विहारिनी सिया पिय, नित्य अखंड विहार॥१५॥
जितने सब अवतार हैं, नारायन लगि जान।
श्री जनक लली पद रेखतें, अवतीरण भये मान॥१६॥
श्री जनक लली के पद कमल, सेवत हैं सब देव।
दरशन को तरसत सदा, रशिक जानि यह भेव ॥१७॥
जब तक गुरु से सखी तन, मिलै न निज सम्बन्ध।
तब तक सिय जू के दरश, पावत नहिं जड़ अंध ॥१८॥
श्रीसतगुरु सम्बन्ध दै, छिन में करत निहाल।
नतरुअनेकनजन्मधरि, मिलहिंनसियरघुलाल ॥१९॥
महिमा श्रीसतगुरनकी, कहंतक लिखौं अपार।
जिनकी कृपाअखंडसुख, मिलत निकुंजविहार। २०॥
ऐसे श्रीसतगुरुन की, कोटि जन्म करि सेव।

तऊ उरिन नहिं होत है, कोइ जानै यह भेव ॥ २१ ॥
गुरू कृपा से बनेगी, गुरू लखावें राम।
गुरु विन भटकत जगतमें, कोइ न आवत काम ॥२२॥
गुरु कह नाते जगत के, त्यागि त्यागि गहो सार।
सीता तेरी स्वामिनी, रघुनन्दन उरहार ॥ २३ ॥
प्रीति पंथ सबसे बड़ो, सबसे कठिन विचार।
प्रीति बराबर सुख नहीं दूजी बस्तु निहार ॥ २४ ॥
नेह करन सब कोइ चहै, नेह करौ जनि कोय।
मिलत दुखी बिछुरत दुखी, नेही सुखी न होइ ॥२५।
जल डूबे आगी जलै, सूली पै चढ़ि जाय।
ऐसो दुख नहिं होत है, जैसो नेह बढ़ाय ॥ २६ ॥
नेह लगन जासो लगै, फिरि तिहि परै बिछोह।
ता दुख को को कहि सकै, जाके लागी होय ॥ २७॥
अपनो प्रीतम काटि शिर, लै डारै चौगान।
प्रीतम पद की ठोड़ दै, खेलै सुख हिय मान ॥ २८ ॥
शीस कटन को दुख नहीं, नहिं ठोड़न अपमान।
मम प्रीतम के चरण में, चोट शीस दुखजान ॥ २९ ॥
मेरो शिर अति कठिन है, कोमल पद प्रिय केरि।
लगत चोट यह दुख अधिक, सोलखिप्रीतिनिवेरि।३०॥
प्रीति विवश सियलाल जू, प्रीति विवश गुरु मान।

प्रीति विवश शृंगार सुख, प्रीति रहित दुख जान॥३१॥
प्रीति लगी जाके हिये, सो बड़ भागी जान।
प्रीति रहित नर तन लहो, अतिअभाग्यतिहिंमान॥३२॥
प्रीति लगन सिय लाल सों गुरु दृढ़ता करि लेय।
प्रीतम प्यारी छवि निरखि, तन मन अर्पिसुदेय॥ ३३॥
प्रीतम के गुन सुमिर नित, प्रीतम की छविहेरि।
प्रीतम प्रीति निहारि कै, नेक न करि हैं देर॥ ३४॥
वैदेही वल्लभ नवल श्री चारु शीला नवबाल।
श्री मत्कृपावती नवल, नवल रशिक सुख जाल॥३५॥
परम प्रीति रस रीति यह, अलि विहारिणी प्रान।
जनक दुलारी शरण कृत, सिय पिय सुख की खान।३६
मृदुल मोद मुद माधुरी, करुणा सिन्धु गम्भीर।
स्वामिनि जय श्रीमैथिली, आर्यः श्रीरघुबीर॥३७॥
जो यह पढ़िहैं प्रेम सों भाव भेद रसरूप।
तत सुख स्वःसुखतत्व को, पइहै स्वाद अनूप॥३८॥

❀ शुभम् सुन्दरम् ❀

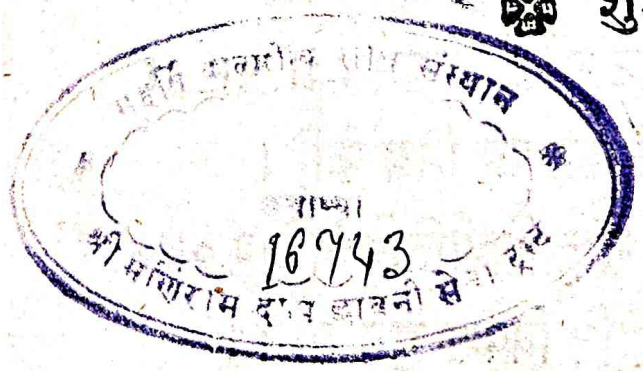
16743